आओ हिंदी सीखें – 8

(द्वितीय भाषा)

(आठवीं कक्षा के लिए)

Z6C9R4

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਪੰਜਾਬ ਸਕੂਲ ਸਿੱਖਿਆ ਬੋਰਡ

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

द्वितीय संस्करण : 2021-22..................2,13,300 प्रतियाँ
तृतीया संस्करण : 2022-23 .... 2,47,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ॰ सुनील बहल
चित्रकार : कुलजीत कौर

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों की जाली/नकली छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना/जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है। (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ
ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ
ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन फेज-8, साहिबजादा अजीत सिंह नगर 160062 द्वारा प्रकाशित तथा एस. जी. प्रिंट पैकस प्राईवेट लिमटेड, नोएडा, उत्तर प्रदेश द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल- केंद्रित शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी (द्वितीय भाषा) की पाठ्य- पुस्तकों के नवीकरण की योजना प्रवेश वर्ष 2007 से बनाई हुई है। सातवीं श्रेणी तक पाठ्य-पुस्तकें नवीन दृष्टिकोण के आधार पर तैयार करके लागू की जा चुकी हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक में पाठों का चयन बच्चों के बौद्धिक और मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया है। प्रत्येक पाठ किसी न किसी मानवीय मूल्य को विकसित करता है। पाठों के विस्तृत अभ्यास बच्चों की कल्पना-शीलता और सोचने-समझने की शक्ति को विकसित करने में सहायक हैं। भाषा का सम्पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना अधूरा है। इस पुस्तक में व्याकरण के मूल नियमों को अत्यन्त सरल एवं सहज उदाहरणों के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है। पाठ्य-पुस्तक को आकर्षक रूप देने में चित्रकार कुलजीत कौर ने अपनी कलात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए खूबसूरत चित्र तैयार किये हैं जो बच्चों में पुस्तक के प्रति रोचकता बढ़ाने में सहायक होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों में हिंदी भाषा का ज्ञान देने में सहायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आये सभी सुझाव बोर्ड द्वारा आदर सहित स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय- सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती	सोहनलाल द्विवेदी	1–4
2.	पिंजरे का शेर	संकलित	5–9
3.	मैट्रो रेल का सुहाना सफर	महेश कुमार शर्मा	10–16
4.	राखी की चुनौती	सुभद्रा कुमारी चौहान	17–20
5.	शायद यही जीवन है	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	21–26
6.	नील गगन का नीलू	सुधा जैन 'सुदीप'	27–31
7.	नवयुवकों के प्रति	मैथिलीशरण गुप्त	32–33
8.	प्रेरणा	मीना शर्मा	34–39
9.	मन के जीते जीत	डॉ॰ सुनील बहल	40–45
10.	रब्बा मींह दे–पानी दे	विनोद शर्मा	46–48
11.	ईदगाह	मुँशी प्रेमचन्द	49–57
12.	ज्ञान और मनोरंजन का घर : साइंस सिटी	विनोद शर्मा	58–64
13.	माँ	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	65–68
14.	सहयोग	संकलित	69–75
15.	वाघा बार्डर	प्रो॰ नवसंगीत सिंह	76–80
16.	गिरधर की कुँडलियाँ	संकलित	81–83
17.	मेरा दम घुटता है	पंकज चतुर्वेदी	84–91
18.	अंतरिक्ष परी : कल्पना चावला	डॉ॰ सुनील बहल	92–97
19.	होंगे कामयाब	संकलित	98–99
20.	सरफ़रोशी की तमन्ना	शिव शंकर	100–107
	प्रयोगात्मक व्याकरण		108–124

पाठ-1

हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती

हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती ,
लहरों से डरकर नैया पार नहीं होती।

नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है,
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है ,
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती ,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है ,
जा-जाकर खाली हाथ लौट आता है ,
मिलते न सहज ही मोती पानी में ,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में ,
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती ,
हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो ,
जब तक न सफल हो, नींद चैन से त्यागो तुम ,
संघर्ष करो मैदान छोड़ो मत भागो तुम ,
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती ,
हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-**

ਹਾਰ = हार	ਮੁੱਠੀ = मुट्ठी	ਲਹਿਰ = लहर
ਨੀਂਦ = नींद	ਮੋਤੀ = मोती	ਜੈ-ਜੈਕਾਰ = जय-जयकार

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਹੌਸਲਾ = हिम्मत	ਨਾੜੀ, ਨਸ = रग	ਕਿਸ਼ਤੀ = नैया
ਜੋਸ਼ = उत्साह	ਕੀੜੀ = चींटी	ਦੁਗਣਾ = दूना

3. **शब्दार्थ**

हिम्मत = हौंसला

नैया = जीवन रूपी नैया

रग = नाड़ी, नस

सिंधु = सागर, समुद्र

गोताखोर = पानी में डुबकी लगाने वाला

सहज ही = आसानी से

चुनौती = ललकार

चैन = आराम

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) कवि के अनुसार किन लोगों की हार नहीं होती ?

(ख) नन्ही चींटी की क्या विशेषता है ?

(ग) गोताखोर सिंधु में डुबकियाँ क्यों लगाता है ?

(घ) हिम्मत करने वालों को असफलता को किस रूप में स्वीकार करना चाहिए ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(i) 'चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है' यह पंक्ति कवि ने किसके लिए कही है और क्यों ?

(ii) गोताखोर को सागर से मोती निकालने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है ?

(iii) इन काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें:-

असफलता एक चुनौती --------- मत भागो तुम।

6. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

लहर = ______, ______

नैया = ______, ______

कोशिश = ______, ______

सिंधु = ______, ______

हाथ = ______, ______

हिम्मत = ______, ______

7. विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

नन्ही = ______

मेहनत = ______

विश्वास = ______

सफल = ______

हार = ______

साहस = ______

8. संज्ञा शब्द चुनकर सही का निशान (✓) लगाओ:-

☐ डरकर	☐ दाना	☐ मोती
☐ चींटी	☐ जब	☐ देखो
☐ चढ़ना	☐ हाथ	☐ असफलता
☐ सिंधु	☐ साहस	☐ तुम

9. (क) मौखिक अभिव्यक्ति

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की इसी भाव से मिलती-जुलती कविता 'कर्मवीर' की इन पंक्तियों को पढ़ें :-

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो, किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गए इक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले।।

(ख) रामधारी सिंह दिनकर की निम्नलिखित पंक्तियों से भी प्रेरणा लें :-

जो लोग पाँव भीगने के खौफ से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आयेंगे।

(ग) राजा ब्रूस की कहानी अपने अध्यापक से सुनें।

(घ) बच्चो! अध्यापक की मदद से रामधारी सिंह दिनकर का लिखा 'हिम्मत और ज़िंदगी' प्रेरक निबंध ज़रूर पढ़ें।

10. लिखित अभिव्यक्ति

मान लीजिए आपने किसी प्रतियोगिता में भाग लिया। परंतु आप विजयी नहीं हो पाये। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

11. सोचिए और लिखिये

बॉक्स में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर सीढ़ी में लिखें। जिनसे आप सफलता के शिखर तक पहुँच सकें।

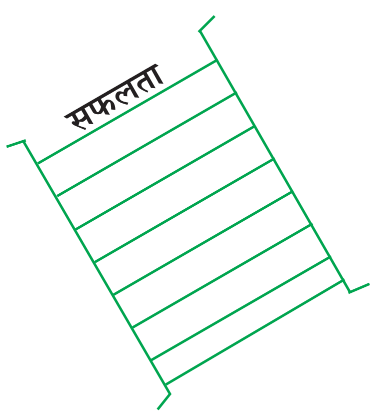

आलस्य, मेहनत, निठल्लापन, इच्छा, विश्वास, डर, घबराहट, हिम्मत, अभ्यास, कामचोरी, उत्साह, निराशा, कोशिश

पाठ-2

पिंजरे का शेर

पुराने समय की बात है। तब भारत अनेक राज्यों में बंटा हुआ था। इन्हीं राज्यों में मगध राज्य सबसे शक्तिशाली समझा जाता था। वहाँ के राजा का नाम महापद्म नंद था।

एक दिन राजसभा लगी हुई थी। वातावरण विचित्र था। एक ओर कुछ व्यक्ति अलग खड़े थे। वे रोम देश के दूत थे। सभा भवन के बीचोंबीच एक पिंजरा रखा हुआ था। जिसमें किसी धातु का बना हुआ एक शेर बंद था। राजसभा में बैठे सभी लोग पिंजरे की ओर देख रहे थे।

थोड़ी देर बाद सम्राट महापद्म नंद राजसभा में पधारे। उनके आते ही सारी सभा में चुप्पी छा गई। महामंत्री शकटार का संकेत पाकर विदेशी दूत ने आगे बढ़कर अपने राजा की ओर से लाए बहुमूल्य उपहार सम्राट को भेंट किये।

राजदूत ने कहा, ''महाराज! हमारे सम्राट ने एक उपहार और भी आपके लिए भेजा है।''

उसने लोहे के पिंजरे की ओर संकेत करते हुए कहा, ''वह है शेर। हमने इस शेर को बंदी तो बना लिया है, पर कुछ बंधनों के कारण हम न पिंजरा खोल सकते हैं और न ही काट सकते हैं। पिंजरे को खोले या तोड़े बग़ैर ही शेर को पिंजरे से बाहर निकालना है। ऐसा तो मगध के सम्राट के प्रताप से ही सम्भव है।''

यह सुनते ही सम्राट ने मुस्करा कर पहले पिंजरे की ओर देखा और फिर महामंत्री की ओर। सम्राट का संकेत पाकर महामंत्री ने राजसभा में यह घोषणा की, ''सभा में बैठे सभी व्यक्ति इस पिंजरे को देखें और बिना पिंजरा खोले या तोड़े शेर को बाहर निकालें।''

सभा में बैठे बहुत से व्यक्ति तो पहले ही उस पिंजरे को देख चुके थे। अन्य लोगों ने भी आगे बढ़कर पिंजरे का निरीक्षण किया। फिर सभी व्यक्ति अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। सभा में बहुत देर तक फुसफुसाहट चलती रही, पर कोई भी व्यक्ति इस कार्य के लिए नहीं उठा।

''शेर को कौन बाहर निकाल सकता है?'' सहसा सम्राट ने गुस्से में कहा।

सभा में फिर कुछ हलचल हुई। सभी लोग एक दूसरे की ओर देख रहे थे। सभी की आँखें लज्जा के कारण झुकी हुई थीं। सम्राट फिर गरज उठे, ''मगध की बुद्धि को क्या हो गया है? महापद्म नंद की राजसभा में क्या ऐसा एक भी ज्ञानी नहीं जो शेर को बाहर निकाल सके?''

''सम्राट की जय हो।''

सम्राट और राजसभा में बैठे सभी व्यक्तियों की दृष्टि सम्राट की जय बोलने वाले पन्द्रह-सोलह वर्ष के किशोर पर टिक गई।

''मुझे आज्ञा दीजिए सम्राट।'' किशोर ने सिर झुकाकर कहा।

''आज्ञा है परंतु यदि तुम असफल रहे तो तुम्हें मृत्यु-दंड दे दिया जाएगा,'' सम्राट ने घोषणा की।

उस किशोर के चेहरे पर इन कठोर शब्दों का कोई प्रभाव न हुआ। वह निडर होकर लंबे-लंबे डग भरता हुआ पिंजरे के पास गया। कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा, ''पिंजरे को पानी में डुबो दिया जाए।''

महामंत्री ने कुछ नौकरों को ऐसा करने का आदेश दिया। पिंजरे को पानी के बड़े टब में डुबो दिया गया। किशोर के कहने पर पिंजरे को फिर पानी से बाहर निकाल लिया गया। सभी लोग एकटक उस किशोर की ओर देख रहे थे। किंतु वह किशोर बड़े ध्यान से उस पिंजरे में बंदी शेर को देख रहा था।

उसकी निर्भीक दृष्टि में धीरे-धीरे विश्वास की चमक उभर आई। उसने सहसा आज्ञा दी, ''इस पिंजरे के चारों ओर आग जलाने का प्रबंध किया जाए।''

किशोर की आज्ञा पाते ही नौकरों ने पिंजरे के चारों ओर आग लगा दी।

सभा में सन्नाटा छा गया। सभी की साँसें रुक गईं। हर व्यक्ति एकटक पिंजरे की ओर देख रहा था। किशोर भी अपलक दृष्टि से उस शेर को घूर रहा था। सहसा उसने देखा कि शेर की मूर्ति के माथे पर धीरे-धीरे गीली-सी चमक उभरी और देखते ही देखते पिघली हुई चाँदी की-सी बूँदें धरती पर आ गिरीं।

किशोर ने मुस्कराते हुए कहा, ''वह देखिए, महामंत्री।''

महामंत्री ने भी उस ओर ध्यान से देखा। अब उनकी समझ में सब कुछ आ गया। वह समझ गए, शेर सीसा धातु का बना हुआ है, इसी कारण थोड़ी-सी गर्मी से ही पिघलने लगा है। लोहे का पिंजरा ज्यों का त्यों पड़ा था।

देखते ही देखते पिंजरे का शेर पिघल कर धरती पर फैल गया। किशोर ने सम्राट के आगे सिर झुकाकर कहा, ''महाराज! शेर पिंजरे से बाहर आ गया है।''

सम्राट ने गर्व से दूत की ओर देखते हुए कहा, ''दूत! अपने राजा से कहना कि हमारे प्रताप के कारण शेर पिघल कर बाहर आ गया है।'' यह शेर केवल पिंजरे का शेर था। पिंजरे के बिना इसका कोई अस्तित्व नहीं। फिर महामंत्री को आदेश दिया, ''इस किशोर को पुरस्कार दिया जाए।'' इतना कह कर सम्राट उठ कर चले गए। सभा में कोलाहल-सा मच गया।

यही किशोर बड़ा होकर चंद्रगुप्त मौर्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने उत्तरी भारत के सभी छोटे-छोटे राज्यों को एक सूत्र में पिरो दिया और एक सुदृढ़ साम्राज्य की नींव रखी।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਫੁਸਫੁਸਾਹਟ	=	फुसफुसाहट	ਨੀਂਹ	=	नींव
ਸੂਤਰ	=	सूत्र	ਵਚਿੱਤਰ	=	विचित्र
ਸਾਮਰਾਜ	=	साम्राज्य	ਪੁਰਸਕਾਰ	=	पुरस्कार

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਕੀਮਤੀ	=	बहुमूल्य	ਬਿਨਾਂ ਅੱਖ ਝਮਕੇ	=	अपलक
ਮੌਤ ਦੀ ਸਜ਼ਾ	=	मृत्युदण्ड	ਹੋਂਦ	=	अस्तित्व
ਕਦਮ	=	डग	ਸ਼ੋਰ	=	कोलाहल
ਨਿਡਰ	=	निर्भीक	ਨਿਰੀਖਣ	=	निरीक्षण
ਚੁਪਚਾਪ	=	सन्नाटा	ਮਜ਼ਬੂਤ	=	सुदृढ़

3. शब्दार्थ

दूत = हरकारा, एक जगह से दूसरी जगह चिट्ठी-पत्र, संदेश आदि पहुँचाने वाला

निरीक्षण = ग़ौर से देखना, मुआइना करना

फुसफुसाहट = बहुत धीमी आवाज़ में बोलना

सीसा = एक प्रसिद्ध मूल धातु जिसकी चादरें, गोलियाँ आदि बनती हैं।

4. उपर्युक्त शब्द भरकर वाक्य पूरे करें :-

(क) .... राज्य सबसे शक्तिशाली समझा जाता था।

(ख) पिंजरे को खोले या...................... बग़ैर शेर को पिंजरे से बाहर निकालना है।

(ग) नौकरों ने पिंजरे के चारों ओर ....लगा दी।

(घ) पिंजरे का शेर........................कर धरती पर फैल गया।

5. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) महापद्म नंद के दरबार में किस देश के दूत आये थे ?

(ख) रोम के राजदूत मगध के सम्राट के लिए क्या लाये ?

(ग) सम्राट महापद्म नंद के मंत्री का क्या नाम था ?

(घ) शेर किस धातु का बना हुआ था ?

(ङ) शेर को पिंजरे से निकालने वाला किशोर बड़ा होकर किस नाम से प्रसिद्ध हुआ ?

(च) पिंजरा किस धातु से बना था ?

6. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) रोम के राजदूत ने पिंजरे के शेर को बाहर निकालने की क्या शर्तें बतायीं ?

(ख) पिंजरे के शेर के चारों ओर आग लगती देख सभा में सन्नाटा क्यों छा गया ?

(ग) चंद्रगुप्त ने पिंजरे के शेर को कैसे बाहर निकाला ?

7. इन शब्दों के लिंग बदलें :-

सम्राट	______________	शेर	______________
महाराज	______________	नौकर	______________
किशोर	______________	राजा	______________

8. इन शब्दों के वचन बदलें :-

पिंजरा	______________	सभा	______________
मूर्ति	______________	यह	______________
बूँद	______________	मंदिर	______________

9. विपरीतार्थक शब्द लिखें :-

पुराना	______________	अनेक	______________
असफल	______________	धरती	______________

10. शुद्ध करके लिखें :-

शकतीशाली	______________	बहूमूलय	______________
घोषना	______________	पुरसकार	______________
सूदरिढ़	______________	मरितयु	______________

11. उचित विराम चिह्न लगायें :-

(क) किशोर ने मुस्कारते हुए कहा वह देखिए महामंत्री

(ख) शेर को कौन बाहर निकाल सकता है सहसा सम्राट ने गुस्से में कहा

(ग) किशोर ने सिर झुकाकर कहा महाराज शेर पिंजरे से बाहर आ गया है

12. प्रत्येक शब्द के आगे लिखो, यह कौन-सी संज्ञा है ?

शब्द	संज्ञा	शब्द	संज्ञा
शेर	जातिवाचक संज्ञा	शकटार	व्यक्तिवाचक संज्ञा
लज्जा	____________	पिंजरा	____________
गर्मी	____________	गुस्सा	भाववाचक संज्ञा
किशोर	____________	दूत	____________
पानी	____________	मंदिर	____________

13. नीचे दी गई जातिवाचक संज्ञा से संबंधित व्यक्तिवाचक संज्ञा लिखें :

राज्य (जातिवाचक संज्ञा)

मगध पंजाब

राजा (जातिवाचक संज्ञा)

लड़का (जातिवाचक संज्ञा)

देश (जातिवाचक संज्ञा)

14. नये शब्द बनायें : (कम से कम दो)

वातावरण फुसफुसाहट झुकाकर

वात वर वरण

पाठ-3

मैट्रो-रेल का सुहाना सफर

राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने के लिए पंजाब प्रदेश की 'योग' की टीम अपने गुरु सुरेन्द्र मोहन के साथ दिल्ली के 'झलकारी बाई राजकीय उच्चतर विद्यालय, अशोक विहार में ठहरी हुई है। आज सभी बच्चे बहुत प्रसन्न हैं क्योंकि गुरु जी ने उन्हें वचन दिया था कि यदि उनकी टीम प्रथम आती है तो उनकी तरफ से सभी बच्चों को 'मैट्रो-रेल' के सुहावने सफर का उपहार दिया जाएगा। गुरु जी भी बहुत हर्षित हैं क्योंकि उनकी टीम ने पूरे देश में प्रथम स्थान प्राप्त कर पंजाब प्रदेश के नाम को चार चाँद लगा दिए हैं। बच्चों के दिल भी बल्लियों उछलने लगे जब गुरु जी ने कहा, "बच्चो! आज हम सभी 'मैट्रो-रेल के द्वारा लाल किला देखने जायेंगे।"

खिलाड़ियों वाले नीले रंग के ट्रैक-सूट पहने सभी बच्चे गुरु जी की आज्ञा पाकर निकट के 'मैट्रो-रेल' स्टेशन कन्हैया नगर की ओर पंक्तियाँ बनाकर बड़े उत्साह से चलने लगे। अनुशासन में आगे बढ़ते बच्चों के ट्रैक सूटों पर छपा 'पंजाब' सभी की शोभा बढ़ा रहा था। जैसे ही सभी कन्हैया नगर स्टेशन पर पहुँचे तो राजीव ने कहा "गुरु जी! रेलगाड़ी तो ज़मीन पर चलती है, पर यहाँ तो लगता है कि स्टेशन इस सड़क पर बने पुल के ऊपर है।" गुरु जी ने बड़े प्यार से समझाया।

"बेटा राजीव, मैट्रो रेलगाड़ी की यही तो विशेषता है कि परिस्थिति और सुविधा अनुसार इसकी पटरी ज़मीन पर या सड़क पर पुल बनाकर या फिर ज़मीन के नीचे सुरंग खोदकर बिछाई गई है ताकि कम समय में अधिक फासला आसानी से तय किया जा सके।" यह सुनकर प्रतिभा बोली-

"गुरु जी! हमारी गाड़ी कौन-से रास्ते से जाएगी?"

"गाड़ी में बैठकर खिड़की के शीशे से आराम से देखना, तुम्हें पता चल जाएगा और आनंद भी आएगा।" गुरु जी ने उत्तर दिया। प्रतिभा खुशी से उछल पड़ी और अपने साथियों से कहने लगी, "मैं तो खिड़की वाली सीट पर बैठूँगी।" गुरु जी ने हँसते हुए कहा -

"अच्छा, सभी खिड़की वाली सीट पर बैठ जाना। अब तुम सब पंक्ति में ध्यानपूर्वक सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर स्टेशन पर जाओ।"

भास्कर ने बड़ी उत्सुकता से पूछा -

"गुरु जी यहाँ तो लिफ्ट भी लगी हुई है। फिर हम सीढ़ियों से क्यों जा रहे हैं?"

गुरु जी ने सभी को समझाते हुए कहा, "बच्चो! लिफ़्ट की सुविधा का प्रयोग वृद्धों और

बीमारों के लिए तथा अपाहिजों को पहिया-कुर्सी सहित लाने ओर ले जाने के लिए किया जाता है। हम सब तो स्वस्थ हैं, सीढ़ियाँ चढ़ सकते हैं।'' लिफ़्ट के पास खड़े कर्मचारी ने बीच में बोलते हुए कहा, ''बच्चो! आपके गुरु जी ठीक कह रहे हैं और यह देखो इसीलिए ही लिफ़्ट खोलने का बटन भी कम ऊँचाई पर लगाया गया है।''

जैसे ही सभी बच्चे स्टेशन पर पहुँचे वे स्टेशन की साफ़-सफ़ाई और सजावट देखकर दंग रह गए। चमकता संगमरमर का फ़र्श, अत्याधुनिक बिजली उपकरणों और सामान्य सुविधाओं से सज़े स्टेशन को देखकर बच्चे खुशी से झूम उठे। स्टेशन पर स्थान-स्थान पर यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा के लिए बड़ी ही सुंदर वर्दी में सुरक्षा-कर्मी तैनात थे। गुरु जी ने सभी का समूह पास बनवाकर बच्चों को सुरक्षा-जाँच के लिए बने एक यंत्र में से निकलने के लिए पंक्ति में आने को कहा। राजीव ने अनायास ही पूछा -

''गुरु जी, हम जालंधर रेलवे स्टेशन पर भी ऐसे ही यंत्र से निकलकर आए थे, आखिर यह यंत्र क्या होता है?''

गुरु जी ने बताया, ''बेटा! यह यंत्र किसी भी विस्फोटक सामग्री के पास आते ही स्वत: ही एक विशेष ध्वनि निकालने लगता है। इसी कारण यात्रियों की सुरक्षा के लिए यह यंत्र हर रेलवे स्टेशन पर लगाया जाता है।'' इसके पश्चात सुरक्षा कर्मी ने सभी की जाँच की और सभी प्रवेश द्वार पार करके प्लेटफार्म की तरफ बढ़ने लगे। स्टेशन पर ही यात्रियों की सुविधा के लिए रेस्तरां, कॉफी की दुकानें, किताबों की दुकानें और नकदी निकालने के लिए ए०टी०एम० जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध थी।

मनीश ने पूछा, ''गुरु जी सभी लोग तो उस मशीन वाले रास्ते से जा रहे हैं, हम उधर से क्यों नहीं गए?'' गुरु जी ने कहा -

''आओ, इस कर्मचारी से पूछते हैं।''

कर्मचारी से पूछने पर उसने सभी बच्चों को मशीन की एक तरफ खड़ा करके बताना शुरू किया कि यह स्वचालित प्रवेश द्वार है। एक यात्रा के लिए एक टोकन प्रति यात्री (टोकन दिखाते

हुए) दिया जाता है जिसे इस मशीन के निकट लाने से प्रवेश द्‌वार खुल जाता है और यात्री इसमें से निकल जाता है। इसी तरह रोज़ाना यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए (स्मार्ट कार्ड दिखाते हुए) स्मार्ट कार्ड की सुविधा उपलब्ध है। इस कार्ड को मशीन के पास लाने से एक तो यात्रा के अनुसार उसमें से स्वत: ही किराया कट जाता है और दूसरे जो समय टोकन खरीदने में लगता है वह भी बच जाता है। इसके इलावा मैट्रो-रेल पर्यटकों के लिए एक से तीन दिन की असीमित मैट्रो-रेल यात्रा के लिए पर्यटक कार्ड भी उपलब्ध करवाता है। आपका समूह बड़ा होने कारण आपका समूह-पास बनाया गया है इसीलिए आपको इस स्वचालित द्‌वार की अपेक्षा विशेष प्रवेश-द्‌वार द्‌वारा प्रवेश करवाया गया। उसने कहा, ''चलो, आपकी गाड़ी का समय होने वाला है, मैं आपको गाड़ी में बैठाकर आता हूँ।''

प्लेटफार्म पर पहुँचकर बच्चों ने महसूस किया कि वहाँ पर इतनी साफ़-सफ़ाई है जैसे, यहाँ कभी किसी ने पैर भी न रखा हो। तभी भास्कर रेलगाड़ी देखने के लिए प्लेटफार्म के किनारे पर जा पहुँचा। गुरु जी ने और उस कर्मचारी ने उसी समय भास्कर को दौड़कर पकड़ा और बाकी बच्चों के पास लाकर प्यार से समझाया कि गाड़ी की प्रतीक्षा करते समय कभी भी प्लेटफार्म पर बनी पीली-पट्‌टी को पार नहीं करना चाहिए। गुरु जी ने कर्मचारी को अनुरोध किया कि जब तक गाड़ी नहीं आती तब तक बच्चों को वे मैट्रो-रेल के विषय में और जानकारी दें। कर्मचारी ने बताना प्रारंभ किया कि कभी भी रेल की पटरी पर नहीं जाना चाहिए। प्लेटफार्म पर थूकना, गंदगी फैलाना या कोई वस्तु खाना पीना दंडनीय अपराध है। यदि कोई वस्तु, पटरी पर गिर भी जाए तो उसे उठाने का प्रयास न करें। इस स्थिति में मैट्रो-रेल के अधिकारियों से ही सम्पर्क करना चाहिए। गाड़ी की प्रतीक्षा करते समय जिस दिशा में यात्रा करनी हो उसी दिशा में मुँह करके खड़े होना चाहिए। तभी गुरु जी ने सूचना पट्‌ट पर देखते हुए कहा, ''गाड़ी के पहुँचने का समय हो गया है, हमें तैयार रहना चाहिए।'' इससे पहले कि वह कर्मचारी कुछ कहता गाड़ी के पहुँचने की उद्‌घोषणा होने लगी कि रिठाला से इंद्रलोक और कश्मीरी गेट होते हुए दिलशाद गार्डन जाने वाली मैट्रो कुछ ही समय में प्लेटफार्म पर पहुँच रही है।

उद्‌घोषणा के बाद किरन ने हैरानी से पूछा, ''गुरु जी! हमने तो लाल किला जाना है लेकिन इस स्टेशन का नाम इस उद्‌घोषणा में क्यों नहीं लिया गया?'' गुरु जी ने बताया -

''बेटी, हम कश्मीरी गेट पहुँचकर वहाँ से चाँदनी चौंक जाने वाली मैट्रो में बैठेंगे और वहाँ से लाल किला के लिए हम पैदल चलकर जा सकते हैं।'' गुरु जी की बात समाप्त होते ही गाड़ी प्लेटफार्म पर आ पहुँची थी। कर्मचारी ने गुरु जी से कहा, ''आप आराम से बच्चों को गाड़ी में चढ़ायें, मैं तब तक चालक को गाड़ी रोके रखने के लिए बोलकर आता हूँ।'' सभी बच्चे खुशी-खुशी गाड़ी में चढ़कर सीटों पर ऐसे बैठ गए जैसे कोई किला फतह कर लिया हो।

गाड़ी के स्वचालित द्‌वार अपने आप ही बंद हो गए और गाड़ी ने अपनी गति पकड़नी शुरू कर दी। सभी बच्चों के चेहरे खुशी और उत्साह से चमक रहे थे। राजीव से रहा न गया वह बोला,

''गुरु जी, मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे हम सभी किसी विमान में उड़ रहे हैं।'' सभी बच्चे एक साथ बोले, ''हमें भी!'' गुरु जी ने कहा, ''बहुत बढ़िया बच्चो, लेकिन शोर नहीं मचाना।'' प्रतिभा एकटक खिड़की के शीशे से बाहर का नज़ारा देख रही थी। उसने बड़ी हैरानी से कहा, ''यह खिड़की तो खुलती ही नहीं।'' गुरु जी ने बताया –

''बेटा यह पूरी गाड़ी वातानुकूलित है, इसीलिए इसके शीशे स्थायी तौर पर बंद होते हैं।''

भास्कर एकाएक बोल उठा, ''तभी मैं कहूँ, बाहर तो इतनी गर्मी थी और अंदर मुझे ठंड लग रही है।''

गाड़ी के अंदर दोनों तरफ बैठने के लिए एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक लंबी सीटों पर बैठे बच्चे बाहर का नज़ारा देखकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे और आपस में चुहलबाज़ी करके अपना मन बहला रहे थे। जैसे ही अगला स्टेशन आने वाला होता गाड़ी के अंदर स्पीकरों के माध्यम से उद्घोषणा होती कि कुछ ही समय में अगला स्टेशन (नाम बोल कर) आने वाला है और किस ओर के दरवाज़े खुलेंगे यह भी बताया जाता। जैसे ही गाड़ी स्टेशन पर रुकती स्वचालित द्वार अपने आप खुल जाते और यात्रियों के उतरने और चढ़ने के पश्चात स्वत: ही बंद भी हो जाते। पूरी गाड़ी में खिड़कियों के ऊपर स्थान-स्थान पर इलैक्ट्रॉनिक सूचना पट्ट लगे हुए थे जिन पर लगातार आने वाले स्टेशनों की जानकारी हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में दी जा रही थी। गाड़ी कन्हैया नगर से चलकर पहले इंद्रलोक स्टेशन, फिर शास्त्री नगर, प्रताप नगर और तीस हजारी स्टेशनों पर रुकती हुई कश्मीरी गेट पहुँचने ही वाली थी कि गुरु जी कहने लगे, ''बच्चो! अगले स्टेशन पर उतरने के लिए तैयार हो जाओ।'' कश्मीरी गेट स्टेशन आते ही जैसे ही गाड़ी रुकी, द्वार खुलते ही मैट्रो रेल का एक कर्मचारी हमारी सहायता के लिए खड़ा था। उसे कन्हैया नगर स्टेशन से अधिकारियों ने हमारे आने की सूचना पहले ही दे दी थी। ट्रैक सूट पर 'पंजाब' छपा देखकर उसे बच्चों को पहचानने में देर न लगी। गाड़ी से उतरने के पश्चात वह सभी को स्वचालित सीढ़ियों के द्वारा भूमिगत प्लेटफार्म पर ले गया। उसने बताया कि इसी प्लेटफार्म पर आपको चाँदनी चौंक स्टेशन के लिए मैट्रो मिलेगी। सिमरन ने डरते हुए पूछा, ''गुरु जी, यह तो कोई सुरंग-सी लगती है ; मुझे तो बहुत डर लग रहा है।'' गुरु जी ने कहा –

"डरने की कोई बात नहीं है, अगला स्टेशन चाँदनी चौंक ही है। इस बार बच्चे बड़े आराम से निश्चिंत होकर मैट्रो में चढ़े और खुशी-खुशी चाँदनी चौंक स्टेशन पर उतरे। सभी यात्री अपना-अपना टोकन, स्मार्ट-कार्ड या पर्यटक-कार्ड निकास-द्वार की मशीन के पास लाते और स्वचालित द्वार खुलने पर बाहर निकल जाते। सभी बच्चों ने यह नज़ारा विशेष निकास द्वार से निकलते हुए देखा। चाँदनी चौंक से लाल किले की तरफ बढ़ते बच्चे बस मैट्रो-रेलगाड़ी की ही बातें कर रहे थे जैसे उन्होंने कोई अजूबा देख लिया हो।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-**

ਯੋਗ	=	योग	ਰੇਲਵੇ ਸਟੇਸ਼ਨ	=	रेलवे स्टेशन
ਮੈਟਰੋ ਰੇਲ	=	मैट्रो रेल	ਪਲੇਟਫਾਰਮ	=	प्लेटफार्म
ਲਿਫਟ	=	लिफ्ट	ਸਵੈ-ਚਾਲਿਤ	=	स्वचालित

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਖੇਡਾਂ	=	राष्ट्रीय खेलें	ਕਸੂਰ/ਦੋਸ਼	=	अपराध
ਸਰਕਾਰੀ	=	राजकीय	ਸੁਰੱਖਿਆ ਕਰਮਚਾਰੀ	=	सुरक्षाकर्मी
ਸਕੂਲ	=	विद्यालय	ਇੰਤਜ਼ਾਰ	=	प्रतीक्षा
ਖਿਡਾਰੀ	=	खिलाड़ी	ਪੌੜੀਆਂ	=	सीढ़ियाँ
ਯਾਤਰੀ	=	पर्यटक	ਬੁੱਢੇ	=	वृद्ध
ਅਪੰਗ	=	अपाहिज	ਯੰਤਰ	=	उपकरण

3. **शब्दार्थ**

उपहार	=	भेंट
लिफ्ट	=	बड़ी इमारतों में ऊपर ले जाने वाला यान स्वरूप यंत्र
अपाहिज	=	अपंग
विस्फोटक सामग्री	=	विस्फोट करने वाला पदार्थ
स्वचालित प्रवेश द्वार	=	अपने आप खुलने वाला दरवाज़ा
दंडनीय अपराध	=	दंडित किए जाने योग्य अपराध
उद्घोषणा	=	ऊँची आवाज़ में कहना, सरकारी घोषणा
वातानुकूलित	=	हवा के तापमान के अनुकूल बनाया गया
इलैक्ट्रॉनिक सूचना पट्ट	=	बिजली से चलने वाला पटल जिस पर लगातार सूचनाएँ दी जाती हैं
भूमिगत प्लेटफार्म	=	भूमि के अंदर बना प्लेटफार्म

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) गुरु जी ने बच्चों को क्या वचन दिया था ?

(ख) कैसे पता चलता है कि ये बच्चे पंजाब से आये हैं ?

(ग) मैट्रो रेल की पटरी कहाँ-कहाँ बिछाई जाती है ?

(घ) लिफ्ट का प्रयोग किन लोगों के लिए किया जाता है ?

(ङ) स्टेशन पहुँचने पर बच्चे क्या देखकर हैरान हुये ?

(च) स्टेशन पर यात्रियों की सुरक्षा-जाँच कैसे की जाती है ?

(छ) स्वचालित प्रवेश द्वार किस प्रकार कार्य करता है ?

(ज) स्मार्ट कार्ड का क्या उपयोग है ?

(झ) पर्यटक कार्ड द्वारा कितने दिन तक यात्रा कर सकते हैं ?

(ञ) गाड़ी की प्रतीक्षा करते समय कौन-से रंग की पट्टी से आगे नहीं जाना चाहिए ?

(त) प्लेटफार्म पर हमें क्या-क्या नहीं करना चाहिए ?

(थ) मैट्रो गाड़ी की खिड़कियाँ क्यों नहीं खुलतीं ?

(द) इलैक्ट्रॉनिक सूचना पट्ट पर क्या सूचनाएँ दी जाती हैं ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) मैट्रो स्टेशन आम स्टेशन से किस प्रकार भिन्न है ?

(ख) टोकन, स्मार्ट कार्ड और पर्यटक कार्ड में क्या अंतर है ?

(ग) मैट्रो गाड़ी के स्वचालित द्वार द्वारा जाने और निकलने में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये ?

(घ) भूमिगत प्लेटफार्म से आप क्या समझते हैं ?

6. **बहुवचन रूप लिखें :-**

खेल	= ______	पंक्ति	= ______
वृद्ध	= ______	सीढ़ी	= ______
स्टेशन	= ______	खिड़की	= ______

7. **इन वाक्यों में सर्वनाम शब्द पर गोला लगायें :-**

(क) हम लाल किला देखने जायेंगे।

(ख) तुम्हें पता चल जायेगा।

(ग) मैं आपको गाड़ी में बैठाकर आता हूँ।

(घ) उसने कहा, "चलो, आपकी गाड़ी का समय होने वाला है।"

(ङ) उसे कन्हैया नगर स्टेशन से अधिकारियों ने हमारे आने की सूचना पहले ही दे दी थी।

8. **'असीमित' शब्द में 'अ' लगाकर विपरीत शब्द बना है। इसी प्रकार अन्य विपरीत शब्द बनायें:-**

अ + सुविधा = ______	अ + सुर = ______
अ + सहयोग = ______	अ + भिन्न = ______

9. **निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग करें :-**

दिल बल्लियाँ उछलना ______ ______________________________

दंग रह जाना ______ ______________________________

खुशी से झूम उठना ______ ______________________________

मन बहलाना ______ ______________________________

10. **नीचे लिखे शब्दों में अक्षरों को उचित क्रम में रखकर सार्थक शब्द बनायें :-**

गालरेड़ी	=	______	नुशाअसन	=	______	लासफा	=	______
पहाउर	=	______	मगसंररम	=	______	फालेप्टर्म	=	______
लीजबि	=	______	टवसजा	=	______	अरोधनु	=	______
पअराध	=	______	किललाला	=	______	वानुकूतलिता	=	______
जापंब	=	______	लतारगा	=	______	भूतगमि	=	______
कानिस	=	______	रीजाकान	=	______	अबाजू	=	______

11. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों में कारक बतायें :-**

(क) भास्कर रेलगाड़ी देखने के लिए प्लेटफार्म के किनारे पर जा पहुँचा। ______

(ख) आज हम सभी मैट्रो रेल के द्वारा जायेंगे। ______

(ग) प्रतिभा खिड़की वाली सीट पर बैठ गयी। ______

(घ) सभी स्वचालित सीढ़ियों के द्वारा भूमिगत प्लेटफार्म पर पहुँच गये। ______

(ङ) गुरु जी ने बच्चों को बड़े प्यार से समझाया। ______

(च) हमने राष्ट्रीय खेलों में भाग लिया। ______

12. **रचनात्मक अभिव्यक्ति :-**

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति**

जिन शहरों में मैट्रो रेल की सुविधा हो वहाँ इस रेल की यात्रा का आनंद ज़रूर लें और अपने अनुभव सहपाठियों को बतायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति**

(i) अपनी सहेली/मित्र को पत्र लिखो जिसमें मैट्रो यात्रा का वर्णन किया गया हो।

(ii) 'मैट्रो रेल यात्रा' का अनुभव डायरी में लिखें।

पाठ-4

राखी की चुनौती

बहन आज फूली समाती न मन में,
तड़ित आज फूली समाती न घन में।
घटा है न फूली समाती गगन में,
लता आज फूली समाती न वन में।।

कहीं राखियाँ हैं, चमक है कहीं पर,
कहीं बूँद है, पुष्प प्यारे खिले हैं।
ये आई है राखी, सुहाई है पूनी,
बधाई उन्हें जिनको भाई मिले हैं।।

मैं हूँ बहन किंतु भाई नहीं है,
है राखी सजी पर कलाई नहीं है।
है भादों, घटा किंतु छाई नहीं है,
नहीं है खुशी पर रुलाई नहीं है।।

मेरा बंधु माँ की पुकार को सुनकर -
के तैयार हो जेलखाने गया है।
छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को,
वह ज़ालिम के घर में से लाने गया है।।

मुझे गर्व है किंतु राखी है सूनी,
वह होता, खुशी तो क्या होती न दूनी।
हम मंगल मनावें, वह तपता है धूनी,
है घायल हृदय, दर्द उठता है खूनी।।

अब तो बढ़े हाथ, राखी पड़ी है,
रेशम-सी कोमल नहीं, यह कड़ी है।
अजी देखो लोहे की यह हथकड़ी है,
इसी प्रण को लेकर बहन यह खड़ी है।।

आते हो भाई ? पुनः पूछती हूँ,
विषमता के बंधन की है लाज तुमको ?
तो बंदी बनो देखो बन्धन है कैसा,
चुनौती यह राखी की है आज तुमको।।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਚਮਕ	=	चमक	ਖੁਸ਼ੀ	=	खुशी
ਬੂੰਦ	=	बूँद	ਘਰ	=	घर
ਹੱਥਕੜੀ	=	हथकड़ी	ਬੰਦੀ	=	बंदी

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਬਿਜਲੀ	=	तड़ित	ਭੇਦਭਾਵ	=	विषमता
ਭੈਣ	=	बहिन	ਫੁੱਲ	=	पुष्प
ਬੱਦਲ	=	घन	ਆਸਮਾਨ	=	गगन
ਬਦਲੀ	=	घटा	ਪੁੰਨਿਆ, ਪੂਰਨਮਾਸ਼ੀ	=	पूनी

3. शब्दार्थ

घटा	=	जल भरे बादलों का समूह
कलाई	=	हाथ में हथेली के जोड़ के ऊपर गट्टा
भादों	=	भादों का महीना, भाद्रपद, सावन के बाद पड़ने वाला देसी महीना
ज़ालिम	=	ज़ुल्म करने वाला
धूनी	=	ठंड से बचने के लिए जलायी जाने वाली आग
विषमता	=	असमता, भीषणता, जटिलता।
चुनौती	=	युद्ध, शास्त्रार्थ आदि के लिए आह्वान, ललकार

4. **उपयुक्त शब्द भरकर काव्य-पंक्तियाँ पूरी करें :-**

(क) .... है न फूली समाती गगन में,
....वन में।।

(ख) ये आई है राखी सुहाई है.......................
...............उन्हें जिनको..............मिले हैं।।

(ग) मेरा बंधु..................की पुकारों को सुनकर-
के तैयार हो...............गया है।

(घ) ....हुई माँ की..................को,
वह.....................के घर में से लाने गया है।।

5. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) लता कहाँ पर फूली नहीं समाती?

(ख) राखी का त्योहार किस दिन होता है?

(ग) इस कविता में आई बहन का भाई कहाँ है?

(घ) बहन किसको बधाई देती है?

(ङ) 'मुझे गर्व है किंतु राखी है सूनी' का भाव बतायें।

(च) यह कविता भारत की स्वतंत्रता से पहले लिखी गई है या बाद में?

6. **इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) 'राखी की चुनौती' कविता का सार लिखें।

(ख) इस कविता में बहन ने पराधीन देश के भाइयों को क्या संदेश दिया है?

7. **इन काव्य-पंक्तियों का सरलार्थ करें :-**

(क) मैं हूँ बहन, किंतु भाई नहीं है,
राखी सजी, पर कलाई नहीं है।
हैं भादों, घटा किंतु छाई नहीं है।
नहीं है खुशी, पर रुलाई नहीं है।।

(ख) मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर,
के तैयार हो जेलखाने गया है।
छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को,
वह ज़ालिम के घर में से लाने गया है।।

8. **दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-**

तड़ित	________, ________	घन	________, ________
गगन	________, ________	पुष्प	________, ________
खुशी	________, ________	भाई	________, ________

9. **शुद्ध करके लिखें :-**

राखीयां	________	हिरदय	________
विशमता	________	प्रन	________
पुश्प	________	स्वाधिनता	________
खूशी	________	चुनोती	________
रूलाई	________	जालिम	________

10. **इन मुहावरों के अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग करें :-**

फूले न समाना _______ ____

धूनी तपना _______ ____

11. **विपरीतार्थक शब्द लिखें :-**

धरती	________	अमावस	________
पराधीनता	________	अमंगल	________
कठोर	________	मुक्ति	________

12. **रचनात्मक अभिव्यक्ति --**

(क) मौखिक अभिव्यक्ति

राखी से संबंधित कोई गीत याद करें और कक्षा में सुनायें।

(ख) लिखित अभिव्यक्ति

क्या आप रक्षा बंधन पर अपनी बहन से राखी बँधवाते हो ? क्यों ? लिखें।

13. **रचनात्मक कार्य**

अपने हाथ से राखी बनायें।

पाठ-5

शायद यही जीवन है

आज सुबह-सुबह मेरी ननद तेज़ी से भागकर मेरे पास आई और आँखें मटकाते हुए चहक कर बोली, ''दीदी, आओ! आपको कुछ दिखाती हूँ।''

जाने क्या दिखाना चाहती है ? मैं भी असमंजस की स्थिति में उसके पीछे-पीछे चल दी। बाहर बगीचे में एक ही कतार में लगे तीन-तीन फुट लंबे बैंगन के पौधों में से एक पौधे की टहनियाँ हटाकर बोली, ''देखो दीदी।''

मैं बैंगन के पौधे के बीच की शाखा के दो पत्तों से जुड़े एक छोटे-से प्यालेनुमा आकार के घोंसले और उस घोंसले में लाल रंग के छोटे-छोटे चार अंडे देखकर चकित रह गई। शायद ज़िंदगी में पहली बार इतने करीब से इतना नन्हा-सा, प्यारा-सा घोंसला देखा था। मैं उत्सुक थी यह जानने के लिए कि किस पक्षी ने तिनकों, मुलायम रेशों, रुई व ऊन से बुनकर और पत्तियों से सिलकर नीड़ का निर्माण किया है ? मैं उसकी दुनिया का हिस्सा बन जाना चाहती थी इसलिए अब मेरी दुनिया ही परिवर्तित हो गई थी। पहले जिन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने का समयाभाव रहता था अब केवल वही चीज़ें नज़र आ रही थीं - गुलाब के पौधे, विभिन्न रंगों के फूल, पत्तियाँ, लताएँ आँगन में लगे ऊँचे-ऊँचे हरे-भरे पेड़, कौए, कोयल, बुलबुल, तोते, मैना तथा तितलियाँ इत्यादि।

इसी बीच एक छोटी-सी चंचल, जैतूनी हरी चिड़िया (दर्जिन) जिसके नीचे के अंग सफेद, जंग जैसे रंग की शिखा, दुम में दो सुई की तरह नोकीले पर, जो तन कर खड़े रहते हैं - बार-बार उस घोंसले में आकर बैठती और कुछ देर बाद उड़ जाती।

दोपहर को बच्चों के स्कूल से लौटने पर मैंने उन्हें घोंसले, चिड़िया और अंडों के बारे में बताना उचित नहीं समझा कि कहीं वे चिड़िया की उत्कृष्ट रचना घोंसला व अंडे तोड़ न दें।

किंतु बाद में मैंने सोचा कि बच्चों को भी तो पक्षी जगत से परिचित होना चाहिए इसलिए मैंने उन्हें पौधे की शाखाएँ हटाकर घोंसला व अंडे दिखा दिए तथा उन्हें घोंसले को हाथ न लगाने की हिदायत भी दी।

बच्चे भी अब मेरी तरह प्रतीक्षा करने लगे कि अंडे में से बच्चे कब निकलेंगे ? साथ ही साथ घोंसले में चिड़िया के आगमन और उड़ान पर भी वे निगरानी रखने लगे। करीब दस-ग्यारह दिन तक ये सिलसिला चलता रहा। मामूली-सी अनजान चिड़िया अब हमारी परिचिता बन गई थी। अनेक चिड़ियों को फुदकता देखकर हम अपनी चिड़िया पहचान लेते थे।

बारहवें दिन चिड़िया ने अंडों पर बैठकर अपने शरीर की गर्मी से अंडे से दिए थे। अब घोंसले में बहुत ही छोटे-छोटे, प्यारे-प्यारे रुई के फाहों की तरह के चार बच्चे थे। उन्हें अपलक देखकर मैं फूला नहीं समा रही थी। मुझे अजीब-सी खुशी हो रही थी। अगले दिन तक चारों की आँखें बंद थीं। चारों आपस में जुड़े हुए अपनी-अपनी खुली चोंच बार-बार ऊपर की ओर उठा रहे थे जैसे खाने के लिए माँग रहे हों।

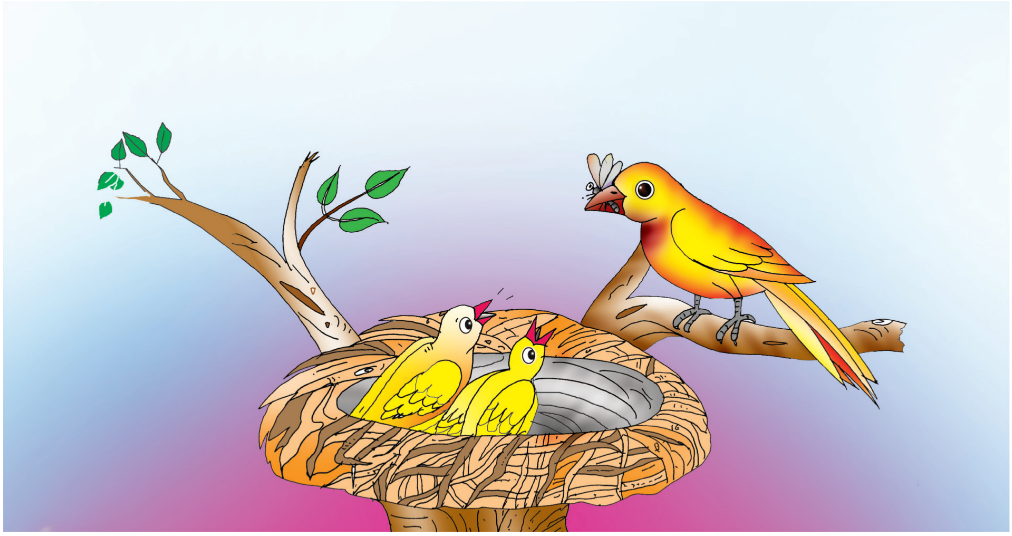

तीन-चार दिन तक मैं लगातार उन्हें निहारती रही। वे हर समय अपनी खुली चोंच भोजन के लिए ऊपर ही किए रहते। चिड़िया माँ बार-बार उड़कर जाती, चोंच में छोटे-छोटे कीड़े-मकौड़े व मच्छर लाकर बच्चों के मुँह में डाल जाती। चिड़िया किसी को सामने पाकर सीधा आकर घोंसले पर न बैठती। सबसे नीचे की शाखा पर फुदकते हुए अन्य शाखाओं से होती हुई घोंसले के पास जा बैठती। रात को दबे पाँव जाकर घोंसले में बच्चों को चिड़िया के साथ निश्चिंत सोया देखकर मैं भी निश्चिंत होकर सो जाती।

एक दिन दोपहर को मैंने घोंसला देखा तो दिल धक् से रह गया। घोंसले से जुड़े दो पत्तों में से एक पत्ते के टूट जाने के कारण घोंसला दूसरे पत्ते के सहारे उल्टा लटक रहा था। घोंसले में से दो बच्चे भी लटक रहे थे तो दो नीचे मिट्टी में अचेत अवस्था में गिरे पड़े थे। मैंने अपने पति, ननद और बच्चों की मदद से नीचे गिरे बच्चों को उठाकर प्लास्टिक के गोल डिब्बे में रख दिया। एक पत्ते के अवलंब से लटक रहा घोंसला हाथ लगाते ही पत्ते से अलग होकर हाथ में आ गया। मैंने घोंसले को भी उसी डिब्बे में रख दिया। धूप बहुत तेज़ थी इसलिए डिब्बा भी उसी पौधे के नीचे छाया में रख दिया। चारों बच्चे खुली आँखों से मेरी गतिविधियों को देख जैसे मुझे धन्यवाद कर रहे थे। मैंने उन्हें रुई से पानी पिलाने का प्रयास किया पर सब व्यर्थ क्योंकि उन्हें न तो खाना आता था और न ही पीना।

काफी देर बाद चिड़िया माँ बच्चों को डिब्बे में तलाश कर उन्हें भोजन उपलब्ध करवा कर उड़ गई।

संध्या होने को थी मुझे रसोई घर में काम निपटाना था साथ ही मन आशंकित था कि कोई-चील या बिल्ली डिब्बे में रखे बच्चों पर धावा न बोल दे। यदि डिब्बा घर के भीतर लाती तो इनकी माँ इन्हें ढूँढ़ती रहती। काफी सोच-विचार के बाद मुझे घोंसले को पुनः शाखा पर बाँधने का उपाय सूझा।

अब मैंने दो बच्चों को भी घोंसले में डालकर घोंसला उसी पौधे की सबसे नीची डाली पर एक पतली-सी रस्सी से बाँध दिया ताकि मैं रसोई घर से उन पर निगरानी रख सकूँ। पास के पौधे के पीछे छिपकर बैठी बिल्ली को देखकर मैं घबरा गई। मैंने बिल्ली को तो भगा दिया किंतु उसका भय अभी भी टला नहीं था इसलिए मैंने घोंसले की रस्सी खोल कर घोंसला उसी पौधे की सबसे ऊँची डाली पर फिर से बाँध दिया। अब बच्चे सरल ध्वनियों से मानो पुनः मेरा शुक्रिया कर रहे थे और केवल दर्शक बने रहने व घोंसले से बाहर न फुदकने का वादा भी।

आज मैं स्वयं को शौकिया पक्षी दर्शक से बढ़कर कुशल पक्षी विशेषज्ञ अनुभव कर रही थी और जैसे अब पक्षियों से आत्मीय संबंध स्थापित कर - उनकी अंतरंग बातें भी समझने लगी थी।

साँझ हो गई। चिड़िया माँ काफी देर से इधर-उधर मंडरा-मंडरा कर घोंसला ढूँढ़ रही थी। बच्चों ने घोंसले से मुँह बाहर निकाल कर चीं-चीं कर माँ से संपर्क स्थापित कर लिया। अब घंटा भर चिड़िया माँ द्वारा आहार ला-ला कर बच्चों को खिलाने का क्रम जारी रहा। रात्रि में चिड़िया और बच्चे, बिल्ली से सुरक्षित गहरी नींद में थे।

सुबह सूर्योदय से पहले ही मैंने घोंसले में झाँका तो पाया कि चिड़िया माँ घोंसले में नहीं थी। तीन बच्चे पंख फड़फड़ा कर फुर्र-फुर्र उड़ने की सूचना दे रहे थे। दोपहर तक तीनों उड़ भी गए थे - मुक्त जीवन जीने के लिए।

अब घोंसले में केवल एक ही बच्चा रह गया था छोटा होने के कारण शायद उड़ नहीं पाया था। रात-भर मैं चैन की नींद नहीं सो पाई क्योंकि आज उसकी माँ भी उसके पास नहीं थी।

आज रविवार था, सभी घर पर थे। आज चिड़िया का बच्चा घोंसले से बाहर आकर कभी घोंसले के ऊपर बैठता तो कभी पत्तों पर। शायद आज यह भी उड़ने की चाह में फुदक रहा था। इसी बीच उसकी माँ को उसके पास बैठा देख मन गद्गद् हो गया। मैंने कैमरे से चिड़िया के बच्चे के बहुत से चित्र लिए। मेरा बेटा और बेटी प्यार-दुलार में बच्चे को अपने स्टडी रूम में ले आए और खेलते रहे। फिर बाहर घोंसले में छोड़ आए। अब हम सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हो गए।

दो घंटे बाद घोंसला खाली था, बच्चा उड़ गया था - स्वच्छंद जीवन की चाह में।

मैं बहुत उदास थी तभी मेरे हाथों का स्पर्श करते हुए मेरी बेटी बोली, ''माँ कोई बात नहीं...... वो चिड़िया का बच्चा उड़ गया तो क्या....... मैं हूँ न........ आपकी नन्ही-सी चिड़िया........... आपके पास।

मैं उसकी ओर देख रही थी और सोच रही थी सचमुच यह चिड़िया ही तो है.......... यह भी एक दिन उस चिड़िया की तरह उड़ जाएगी - मुक्त जीवन की चाह में .... जीवन की परिवर्तनशीलता को समझने का यही एक मूलमंत्र है............ शायद यही जीवन है।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-**

ਬਗੀਚਾ	=	बगीचा	ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ	=	गतिविधियाँ
ਬੈਂਗਨ	=	बैंगन	ਸੰਬੰਧ	=	संबंध
ਅੰਡੇ	=	अंडे	ਮੂਲ ਮੰਤਰ	=	मूल मंत्र

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਵਿਹੜਾ	=	आँगन	ਇੰਤਜ਼ਾਰ	=	प्रतीक्षा
ਆਲ੍ਹਣਾ	=	घोंसला	ਧੰਨਵਾਦ	=	धन्यवाद
ਚੁੰਝ	=	चोंच	ਭੋਜਨ	=	आहार

3. **शब्दार्थ :-**

असमंजस	=	कुछ न सूझना
समयाभाव	=	समय का अभाव या कमी
नीड़	=	घोंसला
निहारना	=	प्यार से देखना
निश्चिंत	=	बिना किसी चिंता के, बेफिक्र
अचेत	=	मूर्च्छित, बेसुध, होश न होना
अवलम्ब	=	सहारा
आशंकित	=	शंका होना
अंतरंग बातें	=	पक्षी जगत का अंदरूनी व्यवहार

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) लेखिका ने आँगन में क्या देखा?

(ख) चिड़िया का रंग-रूप कैसा था?

(ग) चिड़िया के कितने बच्चे थे?

(घ) बच्चे भोजन की माँग किस प्रकार करते थे?

(ङ) घोंसला नीचे मिट्टी में कैसे गिर गया?

(च) लेखिका ने घोंसले को ऊपर की टहनी पर बाँधने का निश्चय क्यों किया?

(छ) बच्चे अपनी माँ से संपर्क कैसे स्थापित करते थे?

(ज) तीन बच्चे मुक्त हो गये थे परंतु चौथा बच्चा क्यों नहीं मुक्त हो पाया?

(झ) लेखिका चौथे बच्चे के भी उड़ जाने पर उदास क्यों हो गई?

(ञ) 'जीवन परिवर्तन शील है।' इस तथ्य के बारे में आप कोई उदाहरण लिखो।

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) चिड़िया, घोंसला, अंडे, बच्चे – इनके द्वारा जीवन की परिवर्तनशीलता उद्भासित होती है। क्या आपको मानव जीवन में भी ऐसी ही परिवर्तनशीलता दिखाई देती है। कोई दो उदाहरण देकर समझायें।

(ख) चिड़िया के बच्चों की प्रत्येक गतिविधि पक्षी जगत की स्वभावगत विशेषता को प्रकट करती है। किसी एक गतिविधि को ध्यान से देखकर लिखें।

6. दिए गये संज्ञा शब्दों के लिए सही विशेषण शब्द चुनकर लिखें :-

रंग बिरंगे, पतली, चंचल, हरे-भरे, नोकीले, ऊँची, मेरी, गोल

________	पेड़	________	रस्सी
________	पर	________	चिड़िया
________	डिब्बे	________	डाली
________	ननद	________	फूल

7. विशेषण बनायें :-

अनुमान = अनुमानित	सुरक्षा = ____________
परिचय = ____________	आशंका = ____________
स्थापना = ____________	केंद्र = ____________

8. विपरीत शब्द लिखें :-

परिचित = ______	धूप = ______
आगमन = ______	उपलब्ध = ______
दर्शक = ______	अचेत = ______
मुक्त = ______	बंधन = ______
निर्माण = ______	

9. नये शब्द बनायें :-

समय + अभाव = समयाभाव

विद्या + आलय = ___________

कार्य + आलय = ___________

मूल + मंत्र = ___________

परिवर्तन + शील = ______

10. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-

सूर्य का उदय होना — सूर्योदय

देखने वाला — ______

समय का अभाव — ______

जिसकी जानकारी हो चुकी हो — ______

जिसकी जानकारी न हो — ______

पक्षी जगत की जानकारी रखने वाला — ______

बिना पलक झपकाए — ______

11. इन मुहावरों के अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग करें :-

फूला नहीं समाना ______ ______________________________

धावा बोलना ______ ______________________________

मन गद्गद् हो जाना ______ ______________________________

दिल धक से रह जाना ______ ______________________________

12. निम्नलिखित में से काल को पहचान कर लिखिए :-

(i) दीदी, आओ! आपको कुछ दिखाती हूँ।

(ii) उन्हें अपलक देखकर मैं फूला नहीं समा रही थी।

(iii) यह भी एक दिन उस चिड़िया की तरह उड़ जाएगी।

(iv) अनेक चिड़ियों को फुदकता देखकर हम अपनी चिड़िया पहचान लेते थे।

13. रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति :** क्या आपने कोई पशु-पक्षी पाला है? अपना अनुभव कक्षा में सुनायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति :** यदि आपकी घर में कोई पालतू पशु/पक्षी है तो उसकी गतिविधि नोट करें। आप उसकी सुरक्षा किस प्रकार करेंगे?

पाठ-6

नील गगन का नीलू

भारत के वीर देश की आज़ादी की रक्षा की खातिर सदैव कुर्बान होने को लालायित रहते हैं। उनका ध्येय मात्र राष्ट्रीय पुरस्कार या सम्मान पाना ही नहीं होता बल्कि वे देश व देशवासियों की सुरक्षा के लिए शहीद होने में गौरवान्वित महसूस करते हैं। ऐसे ही बुलंद हौसले वाले, अटूट साहसी, जिन्हें मौत का डर न था - वे थे स्काड्रन लीडर अनिल शर्मा उर्फ 'नीलू'।

बाल्यकाल से ही दृढ़ निश्चयी नीलू अपनी बड़ी बहन 'शुभला' का दाखिला करवाने गए पिता से ज़िद्द पर उतर आए कि उन्हें भी स्कूल में भर्ती करवाया जाये। भला बाल-हठ व दृढ़ निश्चय के सामने कौन नहीं झुकता? पिता को उनका दाखिला चार वर्ष की आयु में ही प्रथम कक्षा में करवाना पड़ा।

नीलू के खिलौनों में केवल वायुयान ही होते थे। पिता हरी प्रकाश शर्मा वायुसेना में सार्जेण्ट थे। इसलिए नीलू की रुचि फ्लाईंग में होना स्वाभाविक ही था। वे घंटों आकाश में उड़ते जहाज़ों को देखते और मन ही मन बुदबुदाते :-

"देख विमानों को उड़ते, मन ही मन हर्षाऊँ,
बड़ा होकर देश का, मैं परचम फहराऊँ।"

मेधावी छात्र, पर आयु कम होने के कारण उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा विशेष अनुमति द्वारा मात्र चौदह वर्ष की आयु में पास की। वे परीक्षा में अनुमानित अंक भी आँक लिया करते थे। बी.एस.सी. (नॉन मेडिकल) की परीक्षा में उनके गणित में 100 में से 71 अंक आए। उन्होंने अपनी माँ ऊषा शर्मा को बताया, "आज तक मैंने जितनी बार भी अपने अंकों का अनुमान लगाया हमेशा

उतने ही अंक आए हैं। इस बार मेरे 91 अंक होने चाहिए थे।'' बेटे के आत्मविश्वास को देखकर माँ के परामर्श से दोबारा मूल्यांकन करवाने पर उनके अंक 91 ही निकले।

सन् 1987 में सी.डी.एस. की परीक्षा में चंडीगढ़ से सफल होने वाले एकमात्र युवक अनिल शर्मा ही थे। दर्जे (रैंकिंग) के हिसाब से उनके सामने जल, थल और वायु सेना में से किसी को भी चुनने का विकल्प था। इसके अतिरिक्त तीक्ष्ण बुद्धि वाले नीलू का केंद्रीय उत्पाद शुल्क विभाग एवं सीमा सुरक्षा बल में सहायक कमाण्डर के रूप में भी चयन हो गया था। उन्होंने अपने बचपन के सपने को साकार करने के लिए वायुसेना को ही चुना और बिदर में पायलट का प्रशिक्षण लिया। जनवरी 1993 में इनका विवाह दीपिका शर्मा से सम्पन्न हुआ, जिनसे इन्हें एक पुत्री रूशिल व पुत्र वैभव प्राप्त हुए।

उनकी असाधारण प्रतिभा एवं समर्पण भाव को देखकर उन्हें जल्दी ही वायुयान चालक परीक्षक नियुक्त कर दिया गया। स्वभाववश वे अपना काम शीघ्र ही निपटा लेते थे। इसी कारण वे निपुण परीक्षक के रूप में प्रसिद्ध हो गए। कहा भी गया है कि -

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।' यह बात अनिल शर्मा पर पूरी तरह से चरितार्थ होती है।

7 नवम्बर 1966 ई० को करतारपुर में समय से पूर्व (असमय) पैदा हुए, असमय बोलने लगे, असमय पढ़ने लगे, असमय नौकरी करने लगे और फिर पूरे यौवन में असमय ही मातृभूमि के लिए न्योछावर हो गए।

अनिल ने अपने अल्प कार्यकाल में ही देश के विभिन्न क्षेत्रों में देश सेवा की। जिसमें भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में एक बार नक्सली इलाके से गुज़रते हुए गोली हैलीकॉप्टर को लगने ही वाली थी कि अनिल ने अपनी बुद्धिमत्ता एवं चातुर्य से उसे ऐसा मोड़ा कि वह गोली हवा होकर रह गई। गुजरात के दलदलीय कच्छ क्षेत्र में वर्ष 1999 में पाकिस्तान द्वारा यू.एम.बी. (un manned Vehicle) जिसका नाम एटलान्टिक था, भारत की ओर छोड़ा। अनिल ने अपनी टीम के साथ मिलकर शत्रु के नापाक इरादों को असफल कर दिखाया। 26 जनवरी 2000 को उन्होंने राजधानी दिल्ली में होने वाली गणतंत्र दिवस की परेड में हैलीकॉप्टर के द्वारा अपने कौतुक का परिचय दिया कि किस प्रकार एक पायलट लोगों की जान बचाने में सक्षम है? ज़मीन पर सैनिकों से भरी जीप को हैलीकॉप्टर द्वारा ऊपर उठाकर कहीं और सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने का करतब स्काड्रन लीडर अनिल शर्मा ने जब करके दिखाया तब देखने वाले दंग रह गए। तत्पश्चात ऊपर से फूलों की वर्षा ने तो दर्शकों को मंत्र-मुग्ध ही कर दिया।

जुलाई 2000 में राम पुर बुशैर (हिमाचल) में बादल फटने से आई बाढ़ जैसी भीषण परिस्थितियों में बचाव कार्य द्वारा अनेक लोगों की जानें बचाने का जोखिम भरा कार्य किया जिसके लिए आज भी वहाँ के लोग अपने-आप को ऋणी मानते हैं। जहाँ तक कि वहाँ की लड़कियाँ व महिलाओं ने तो अनिल को राखियाँ बाँधकर अश्रुओं से भरी आँखों से वहाँ से विदा किया था।

इस तरह अनेक बार अनिल ने अपनी बुद्धिमत्ता, चातुर्य, कौतुकता एवं निर्णय लेने की क्षमता से देश को गौरवान्वित किया।

''देश रक्षा की खातिर, मैं नील गगन उड़ जाऊँ
नीलाम्बर से नील नीर में, मैं नीलू मिल जाऊँ।''

ऐसी भावना से ओतप्रोत नीलू हमेशा चुनौती पूर्ण कार्यों को करने में तत्पर रहते थे। वे कभी भी अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं हुए। उन दिनों भारत की पश्चिमी सीमा अर्थात् पाकिस्तान द्वारा अक्सर ही कभी जल, कभी थल तो कभी वायु मार्ग से सीमा भेदन होता ही रहता था। 12 नवम्बर 2000 को भारतीय तट रक्षा हेतु तैनात भारतीय सुरक्षा बल ने सतर्कता दिखाई। उन्होंने पाकिस्तानी मछुआरों की किश्तियाँ देखीं जो कि भारत की सीमा में दाखिल होने को थीं। इस दखलअंदाजी को जाँचने के लिए उच्चस्तरीय टीम को लेकर स्काड्रन लीडर अनिल शर्मा ने ज्यों ही उड़ान भरी त्यों ही पाकिस्तानी सैनिकों ने मछुआरों के भेष में मिसाइल फेंकी। दुर्भाग्यवश वह मिसाइल उस हैलीकॉप्टर को जा लगी, जिसमें अनिल समेत दल के बारह अधिकारी थे। तभी यह हैलीकॉप्टर बल खाता हुआ कच्छ की दलदल में जा गिरा। इन वीरों के ज़ख्मों से रिसते रक्त और उन पर तेज़ाब का काम करता नमकीन पानी अगली सुबह तक सात अधिकारियों को मौत की नींद सुला चुका था। शेष पाँच अधिकारियों को वहाँ से जीवित निकाला गया।

काश ! नीलू व उसकी टीम जैसे जज़्बे वाले नौजवानों ने 26 नवम्बर 2009 को मुंबई में घुसपैठ करने वाली उन किश्तियाँ की सुध ली होती तो सैकड़ों देशवासियों और विदेशियों की लाशों का बोझ भारत माता के सीने को छलनी न करता।

धन्य है, स्काड्रन लीडर अनिल शर्मा व उनके जैसे वे अमर शहीद जिन्होंने अपने प्राणों से अधिक देश की रक्षा को मूल्यवान समझा। इस तथ्य को सिद्ध करते हुए उन्होंने स्वयं कुर्बान होकर हज़ारों भारतवासियों एवं देश की सुरक्षा को पुख़्ता किया।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਰਾਸ਼ਟਰੀ	=	राष्ट्रीय	ਭਰਤੀ	=	भर्ती
ਪੁਰਸਕਾਰ	=	पुरस्कार	ਮਿਸਾਈਲ	=	मिसाइल
ਮਹਿਸੂਸ	=	महसूस	ਕਿਸ਼ਤੀਆਂ	=	किश्तियाँ
ਗਣਿਤ	=	गणित	ਸ਼ਹੀਦ	=	शहीद
ਬਾਰਾਂ	=	बारह	ਪ੍ਰੇਰਨਾ	=	प्रेरणा
ਮੁਲਾਂਕਣ	=	मूल्याँकन	ਕੁਰਬਾਨ	=	कुर्बान

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिदी शब्दों को लिखें :-**

ਖਿਡੌਣੇ	=	खिलौने	ਬਚਪਨ	=	बाल्यकाल
ਪ੍ਰੀਖਿਆ	=	परीक्षा	ਸਲਾਹ	=	परामर्श
ਵਿਸ਼ਾ	=	विषय	ਮਜ਼ਬੂਤ	=	पुख्ता
ਜ਼ਿੱਦ	=	बालहठ	ਹੱਦ	=	सीमा

3. **शब्दार्थ**

लालायित	=	इच्छुक	दखल-अंदाजी	=	रोड़ा अटकाना, हस्तक्षेप करना
मूल्यवान	=	कीमती	मेधावी	=	तीव्र बुद्धि वाला, ज्ञानी
मूल्याँकन	=	मूल्य आँकना	अल्प	=	थोड़ा
सीमा-भेदन	=	सीमा तोड़ना	ध्येय	=	लक्ष्य
दुर्भाग्यवश	=	बदकिस्मती से	बाल हठ	=	बच्चे की ज़िद्द
परामर्श	=	सलाह	अनुमानित	=	अनुमान लगाया हुआ
एकमात्र	=	अकेला	सक्षम	=	समर्थ

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) नीलू का पूरा नाम क्या था?
(ख) बचपन से ही उसकी रुचि फ्लाईंग में क्यों हो गई?
(ग) उड़ते हुए वायुयान को देखकर वह मन ही मन क्या सोचता?
(घ) उसने पायलट का प्रशिक्षण कहाँ से लिया?
(ङ) उसने किन-किन क्षेत्रों में देश की सेवा की?
(च) उसे किस प्रकार के कार्यों में रुचि थी?
(छ) 12 नवम्बर, 2000 को भारतीय तट रक्षा बल ने पश्चिमी सीमा पर क्या देखा?
(ज) पाकिस्तानी मछुआरों ने किसे अपना निशाना बनाया?
(झ) 26 नवम्बर, 2009 को ऐसी ही घुसपैठ किस स्थान पर हुई?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) किन-किन घटनाओं से पता चलता है कि अनिल शर्मा असाधारण प्रतिभा के स्वामी थे?
(ख) किस घटना से पता चलता है कि उनमें पूरा आत्मविश्वास था?

6. **इन मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-**

मौत की नींद सुलाना ________ ____________________________________

सीना छलनी करना ________ ____________________________________

होनहार बिरवान के होत चीकने पात ________ ____________________________________

सुध लेना ________ ____

ताकते रह जाना ________ ____

मंत्र-मुग्ध होना ________ ____

7. **अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखें :-**

देश की रक्षा के लिए कुर्बान होना = __________

कभी न थकने वाला = __________

जिसे किसी का भी डर न हो = __________

अपने आप पर भरोसा होना = __________

वायुयान चलाने वाला = __________

समय से पूर्व = __________

बचपन की ज़िद्द = __________

घुसपैठ करने वाला = __________

8. **विपरीत शब्द बनायें :-**

अ + साधारण =	असाधारण	अ + टूट =	__________
अ + समय =	__________	अ + थक =	__________
अ + सफल =	__________	अ + न्याय =	__________

9. **इन वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करें एवं विशेषण शब्दों पर गोला लगायें।**

(क) वे निपुण परीक्षक के रूप में प्रसिद्ध हो गये।

(ख) वे अटूट साहस वाले व्यक्ति थे।

(ग) उनका ध्येय राष्ट्रीय पुरस्कार या सम्मान पाना ही नहीं था।

(घ) पिता को उनका दाखिला चार वर्ष की आयु में ही प्रथम कक्षा में करवाना पड़ा।

(ङ) उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने का कार्य स्काड्रन लीडर अनिल शर्मा ने कर दिखाया।

10. **रचनात्मक अभिव्यक्ति**

(क) मौखिक अभिव्यक्ति :-

युद्ध एवं इसके अलावा देश पर कुर्बान होने वाले भारत माता के वीर सपूतों की जीवनियाँ पढ़ें एवं कक्षा में सुनायें।

(ख) लिखित अभिव्यक्ति :-

(i) 26 नवम्बर, 2009 को मुंबई स्थित ताज होटल में हुई हृदयविदारक दुर्घटना के बारे जानकारी प्राप्त करें और अपने सुझाव दें कि ऐसी विकट परिस्थिति में हमें क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए?

(ii) हमारे देश में कितनी प्रकार की सेनाएँ हैं ? तीन पंक्तियों में लिखें।

पाठ-7

नवयुवकों के प्रति

हे नवयुवाओ ! देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी,
है मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सब से जगमगी।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में ?
देखो, कहाँ क्या हो रहा है आजकल संसार में।।
जो कुछ पढ़ो तुम कार्य में भी साथ ही परिणत करो,
सब भक्तवर प्रह्लाद की निम्नोक्ति को मन में धरो –
''कौमार में ही भागवत धर्माचरण कर लो यहाँ
नर-जन्म दुर्लभ और वह भी अधिक रहता है कहाँ।।
दो पथ, असंयम और संयम हैं तुम्हें अब सब कहीं।।
पहला अशुभ है, दूसरा शुभ है इसे भूलो नहीं।''
पर मन प्रथम की ओर ही तुम को झुकावेगा अभी,
यदि तुम न सम्भलोगे अभी तो फिर न संभलोगे कभी।।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਸ਼ੁਭ	=	शुभ	ਅੱਜ ਕੱਲ	=	आजकल
ਸੰਸਾਰ	=	संसार	ਜਨਮ	=	जन्म
ਜੋਤੀ	=	ज्योति	ਜੀਵਨ	=	जीवन

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਨਜ਼ਰ	=	दृष्टि	ਬਦਲਨਾ	=	परिणत
ਹਿੱਸਾ, ਯੋਗਦਾਨ	=	योग	ਪਹਿਲਾ	=	प्रथम

3. शब्दार्थ :-

भक्तवर	=	भक्तों में श्रेष्ठ
देशोद्धार	=	देश का उद्धार करना

योग = सहयोग
कौमार = कुमार/यौवन की अवस्था
निम्नोक्ति = नीचे लिखी उक्ति या कथन
धर्माचरण = धर्म के अनुसार आचरण/व्यवहार करना
धरो = धारण करना

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) इस कविता के कवि का नाम लिखें।

(ख) यह कविता किन्हें संबोधित की गई है?

(ग) 'जो कुछ पढ़ो तुम कार्य में भी साथ ही परिणत करो।' इस काव्य-पंक्ति का अर्थ लिखें।

(घ) नवयुवकों के सम्मुख कौन-से दो पथ हैं? उन्हें किस पथ का चुनाव करना चाहिए?

(ङ) इन काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-

दो पथ असंयम ----------------संभलोगे कभी।

5. इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

मनुज = ________,________
ज्योति = ________,________
संसार = ________,________
पथ = ________,________

6. विपरीत शब्द बनायें :-

अ + संयम = असंयम
अ + शुभ = ________
अ + धर्म = ________
अ + विश्वास = ________

7. रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) मौखिक अभिव्यक्ति - भक्त प्रह्लाद की जीवन गाथा अपने दादा/दादी से सुनें व कक्षा में भक्त प्रह्लाद के गुणों को सुनायें।

(क) लिखित अभिव्यक्ति (i) असंयम और संयम किसे कहते हैं? एक दो उदाहरण देकर समझायें।

(ii) देश के विकास में आप क्या-क्या योगदान दे सकते हो?

पाठ-8

प्रेरणा

चौक में लाल बत्ती के होने पर हमारी गाड़ी रुकी और मेरी नज़र सामने वाली सड़क पर एक सात-आठ साल के लड़के पर पड़ी जो हाथ में आठ-दस गुब्बारे बेचता कभी किसी गाड़ी के पास जाता तो कभी किसी के पास। गुब्बारे बेचने की कोशिश में उसका गिड़गिड़ाना, मैं उसके हाथों के संकेतों से समझ सकती थी। हरी बत्ती होने पर सामने की गाड़ियाँ चल पड़ीं। मैंने देखा, वह लड़का, एक गाड़ी के पीछे भागता, दूसरी तरफ आ गया और मैं इस डर से बेचैन हो रही थी कि कहीं वह किसी गाड़ी के नीचे न आ जाए। उसने गुब्बारे दिए और पैसे ले लिए। पैसे गिनते हुए उसकी खुशी मैं उसके चेहरे के भावों से महसूस कर सकती थी।

इतने में हमारी तरफ की भी हरी बत्ती हुई और हम भी उसी तरफ आ पहुँचे जहाँ वह लड़का खड़ा पैसे गिन रहा था। जैसे ही हमारी गाड़ी रुकी, वह लड़का गाड़ी के पास आकर झट से बोला ''मेम साहब अपने बच्चों के लिए गुब्बारे ले लीजिए, केवल दस रुपए में ये सारे।''

वह पारखी आँखों वाला मुझे इंकार करने का मौका दिए बिना ही तपाक से बोला, ''चलिए पाँच में ले लीजिए, मैंने दोपहर से कुछ नहीं खाया।''

मैंने कहा, ''गुब्बारे तो मुझे नहीं चाहिए, चलो तुम्हें कुछ खिलाऊँ।'' एक साथ खुशी और हैरानी के भाव उसके चेहरे पर आए। मैंने उसे बिस्कुट देते हुए उससे पूछा, 'पढ़ते हो?'

उसने कहा ''नहीं।''

मैंने पूछा ''पढ़ोगे?''

मेरी बात को अनसुना करते हुए वह बेझिझक बोला, ''मेरी बहन के लिए भी।''

मैंने मुस्कराते हुए उसे कुछ बिस्कुट और दिए और प्रश्न दोहराया ''पढ़ोगे?''

उसने 'न' में सिर हिलाया।

मुझे उसका जवाब सुनकर हैरानी हुई और मैंने कहा, ''अरे! तुम पढ़ोगे नहीं? यूँ ही सारी ज़िंदगी---- ऐसे ही ----- उसने कोई जवाब न दिया। शायद वह जीवन की पहली ज़रूरत को मुझसे ज़्यादा अच्छी तरह समझता था। बिस्कुट खाने की उत्सुकता उसके हाथों से साफ झलक रही थी। जब तक उसने एक बिस्कुट खाया तब तक मुझे भी अपनी गलती का अहसास हो गया था। मैंने प्यार से कहा, ''बेटा, तुम्हें पढ़ना चाहिए, कब तक तुम यूँ ही -----'' मेरी बात को बीच में ही टोक कर वह बोला, ''कौन पढ़ाएगा, मुझे?''

''मैं पढ़ाऊँगी।''

''और कमाएगा कौन?''

''तुम्हारे पिता जी।''

''वे नहीं हैं।''

''उफ! बड़े दु:ख की बात है।''

''और माँ ?''

''वह उधर बैठी है।'' इशारा करते हुए उसने कहा। उसके हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मैंने देखा एक औरत दयनीय अवस्था में, ज़िंदगी के साथ जद्दोजहद करते हुए, गोद में बच्चे को लिए, बैठी गुब्बारे फुला रही है।

''अच्छा तो तुम कमाते हो'' अंदाज़ बदलते हुए मैंने कहा।

''हाँ, मेरी बहन भी।''

और कुछ पूछने की मेरी हिम्मत न हुई और मैंने भरी आँखों से अपनी गाड़ी आगे बढ़ा दी।

दूसरे दिन रविवार था। मुझे स्कूल से छुट्टी थी लेकिन मैं जल्दी-जल्दी काम निपटा कर उसी चौराहे पर पहुँची। बच्चे अपनी माँ के पास बैठे डबल-रोटी खा रहे थे, कुछ गुब्बारे पास ही पड़े थे।

मुझे देखते ही पहचानने की चेष्टा करता हुआ, मेरी तरफ एकटक देखने लगा, और फिर कुछ याद करते हुए बोला, ''आप ने --- मुझे कल बिस्कुट दिए थे?''

''हाँ-हाँ! तुमने ठीक पहचाना। मैंने कहा।''

''मुझे पढ़ाने आयी हो?''

''नहीं, मैं तो तुमसे मिलने आई हूँ।''

वह हैरान था।

मैं भाँप गई कि उसे मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ, मैंने बात बदलते हुए पूछा, ''क्या नाम है तुम्हारा?''

''मेरा नाम मनीष और मेरी बहन का नाम सीमा।'' वह बोला।

''कितना सुंदर नाम है'' कहते हुए मैं नीचे पैरों के बल, उनके पास ही बैठ गई और पर्स में से दो चॉकलेट निकालकर उनकी तरफ बढ़ाई। वह कुछ समझने की चेष्टा करता हुआ मेरी तरफ देखने लगा।

मैंने कहा, ''खा लो''

''हूँ'' कहकर वह चॉकलेट खोलने लगा। सीमा ने झटपट चॉकलेट खानी शुरू की, मगर मनीष ने एक टुकड़ा तोड़कर माँ को देते हुए कहा ''माँ खा ले, यह बहुत स्वाद होती है। '' आज उसने मुझे गुब्बारे खरीदने के लिए भी नहीं कहा। मैंने हौंसला करके बात शुरू की ''बच्चो! मैं जानती हूँ कि इस वक्त आप मुश्किल से जीवन बसर कर रहे हो। इन हालातों से निकलने का केवल एक ही साधन है - विद्‌या! अगर नहीं पढ़ोगे, तो बचपन, फिर जवानी, फिर बुढ़ापा इसी तरह वक्त निकल जाएगा। नौकरी, एक घर, अच्छे कपड़े, यह बस केवल पढ़-लिख कर ही संभव हो सकता है। ''मैडम जी, क्या सपने दिखाती हो, इन बदकिस्मतों को?'' माँ ने कहा ''अरे! किस्मत बनाना तो अपने हाथ में होता है और सपने देखोगे नहीं, तो साकार कैसे होंगे?''

''मैडम जी, मेरे बच्चे स्कूल नहीं जा सकते।''

''कोई बात नहीं, यहाँ पास में ही प्रेरणा सहायता सोसायटी के अंतर्गत हम ऐसे ही बच्चों को दो घण्टे के लिए पढ़ाते हैं। मैं दोनों बच्चों को तीन बजे लेने आऊँगी।'' अच्छा! हम आपका इंतज़ार करेंगे। आज मनीष की आँखों में अविश्वास नहीं, एक उम्मीद झलक रही थी। दोनों बच्चों ने मुस्कराते हुए मुझे विदा किया।

उस दिन मुझे कुछ थकान-सी लग रही थी, रात को ज्वर हो गया और मुझे स्कूल से तीन दिन की छुट्‌टी लेनी पड़ी।

चौथे दिन जब मैं उनके पास पहुँची तो मुझे लगा वे मेरा इंतज़ार कर रहे थे। मनीष भागकर मेरे पास आया।

''आप उस दिन क्यों नहीं आई? उसकी नाराज़गी में एक अपनापन-सा था।''

''हाँ, मैं बीमार हो गई थी'' उसके सिर पर हाथ फेरते हुए मैंने कहा। मैंने देखा उसने पीछे कुछ छिपा रखा था।

मैंने पूछा, ''यह पीछे, क्या छिपाया है?''

''कुछ नहीं।''

इतने में सीमा भी भागते हुए आई ''मैम! आप आ गई।'' देखो, हमने कॉपी भी ले ली'' मनीष का हाथ भी आगे करते हुए उसने कहा।

''वाह! यह तुमने बहुत अच्छा किया। यह कॉपी कहाँ से ली?''

''खरीदी है, पैसों की'' मनीष ने बहुत ही आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया और अपने हाथों की उँगलियों से अपने बालों को संवारते हुए बोला, ''चलें।''

एक विजेता की तरह मैंने कहा ''चलो-,--- माँ को बता दिया?''

''हाँ''

मैंने भी दूर से माँ की सहमति लेने के लिए हाथ उठाया और उधर से भी मुस्कराते हुए मुझे हरी झंडी मिल गई। माँ और बच्चों की आँखों में उम्मीद की किरण देखकर मुझे अपनी ही दो पंक्तियाँ याद आ गईं।

''श्रम की बस्ती से उठकर, पाठशाला में जाना है।
अपने हालातों से लड़कर जीवन सफल बनाना है।''

तभी मैंने पूछा कि मनीष तुम्हारा क्या सपना है? तुम क्या बनना चाहते हो?

उसने पुलिस इंस्पैक्टर की तरफ इशारा करते हुए कहा

''वैसा बनूँगा, बहुत रौब है उनका।''

''सीमा तुम क्या बनोगी?''

''मैं आपकी तरह मैडम बनूँगी, सबको पढ़ाऊँगी - सबको,'' जोर देते हुए बोली।

''बिल्कुल बन सकते हो, अगर पढ़ोगे तो!''

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਪ੍ਰੇਰਣਾ	=	प्रेरणा	ਦੁਪਹਿਰ	=	दोपहर
ਗੁਬਾਰੇ	=	गुब्बारे	ਵਿੱਦਿਆ	=	विद्या

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਪਿੱਛੇ ਚਲਣਾ	=	अनुसरण	ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਕਰਨਾ	=	जीवन बसर करना
ਜੂਝਣਾ	=	जद्दोजहद	ਬੁਖਾਰ	=	ज्वर

3. शब्दार्थ :-

संकेत	=	इशारा
पारखी	=	परखने वाला, वह जिसमें परखने की शक्ति हो
अनसुनी	=	ध्यान न देना
चेष्टा	=	कोशिश
अंतर्गत	=	भीतर समाया हुआ
अपनापन	=	आत्मीय
दयनीय अवस्था	=	दीन-हीन हालत

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) लड़के और उसकी बहन का क्या नाम था?

(ख) मनीष क्या बेचकर अपना जीवन बसर कर रहा था?

(ग) गुब्बारे बेचने के पीछे मनीष ने अपनी क्या विवशता बतायी?

(घ) 'पढ़ोगे' पूछने पर उसने क्या उत्तर दिया?

(ङ) बच्चों को किस संस्था के अंतर्गत पढ़ाने के लिए ले जाया गया?

(च) मनीष और सीमा क्या बनना चाहते थे?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) लेखिका ने बच्चों को पढ़ाई का क्या महत्व समझाया?

(ख) मनीष का चरित्र-चित्रण करें।

(ग) 'भीख माँगना अपराध है।'

'सपने देखो और उन्हें सच करके दिखाओ।'

'शिक्षा ही वह सीढ़ी है जिस पर चढ़कर मंज़िल पाई जा सकती है।'

इन तीनों सूत्र वाक्यों पर अपने विचार लिखें।

6. इन मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करें :-

पारखी आँखों वाला ------ ----------------------------------

जीवन-बसर करना ------ ----------------------------------

सपने दिखाना ------ ----------------------------------

हरी झंडी मिलना ------ ----------------------------------

7. इन शब्दों के विपरीत शब्द लिखें :-

नाराज़गी = ______

अपनापन = ______

इंकार = ______

साकार = ______

बदकिस्मत = ______

सहमति = ______

8. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया विशेषण शब्द छाँटकर सामने लिखें :-

(क) मैं जल्दी-जल्दी काम निपटा कर उसी चौराहे पर पहुँची। जल्दी-जल्दी

(ख) वह मेरी तरफ एकटक देखने लगा। ______

(ग) वह गाड़ी के पास आकर झट से बोला। ______

(घ) मैं कल आऊँगी। ______

(ङ) वह उधर बैठी है। ______

9. **कोष्ठक में से उचित विस्मयादि बोधक शब्द लेकर रिक्त स्थान भरें :**

(क)	अरे ! तुम पढ़ोगे नहीं?	(वाह,अरे)
(ख)	______! तुमने ठीक पहचाना?	(उफ, हाँ)
(ग)	______! बड़े दु:ख की बात है?	(अहा, उफ)
(घ)	______! हम तुम्हारा इंतज़ार करेंगे?	(हाय, अच्छा)
(ङ)	______! बहुत अच्छा किया?	(वाह! आह)

10. **नये शब्द बनायें :-**

आत्म + विश्वास	= आत्मविश्वास	आत्म + रक्षा	= ______
बे + चैन	= ______	बे + कसूर	= ______
अनु + सरण	= ______	अनु +कूल	= ______
अन + सुनी	= ______	अन + वरत	= ______
उत्सुक + ता	= ______	दीन + ता	= ______

11. **उपयुक्त वाच्य की पहचान कीजिए :**

(क) आपने मुझे कल बिस्कुट दिए थे। (कर्तृवाच्य या कर्मवाच्य या भाववाच्य)

(ख) मैंने दोपहर से कुछ नहीं खाया। (कर्तृवाच्य या कर्मवाच्य या भाववाच्य)

(ग) उससे रहा नहीं गया। (कर्तृवाच्य या कर्मवाच्य या भाववाच्य)

(घ) बच्चे डबल रोटी खा रहे थे। (कर्तृवाच्य या कर्मवाच्य या भाववाच्य)

(ड़) लड़के के द्बारा पैसे गिने जा रहेथे। (कर्तृवाच्य या कर्मवाच्य या भाववाच्य)

12. **रचनात्मक अभिव्यक्ति**

(क) मौखिक अभिव्यक्ति – आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हो और क्यों? कक्षा में मंच पर खड़े होकर बतायें।

(ख) लिखित अभिव्यक्ति – अपने मित्र/सहेली को पत्र लिखें जिसमें पढ़ाई का महत्व बताया गया हो।

(ग) रचनात्मक कार्य – इस कहानी से संबंधित अपनी कल्पना से कोई चित्र बनायें।

पाठ-9

मन के जीते जीत

बच्चो! हम जीवन में आने वाली छोटी-छोटी परेशानियों से निराश और हताश हो जाते हैं। हमें अपने चारों ओर अंधकार ही अंधकार दिखाई देता है। कहीं कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। हम थक कर बैठ जाते हैं। कभी भाग्य को, कभी अपने आपको तो कभी किसी को कोसने लगते हैं। पर सोचो! रुकावटें किसके रास्ते में नहीं आतीं? सभी के जीवन में मुश्किल भरे पल आते हैं किंतु उन मुश्किलों से पार वे ही जा पाते हैं जो उनके आगे सिर नहीं झुकाते, उनका दृढ़ता से सामना करते हैं। सामान्य व्यक्तियों की तो बात ही छोड़ो, दुनिया में ऐसे विकलांग व्यक्ति भी हुए हैं जिन्होंने अपनी विकलांगता को चुनौती के रूप में लिया और परिणाम यह हुआ कि खुद विकलांगता ने ही उनके अदम्य साहस और दृढ़ निश्चय के आगे घुटने टेक दिये।

आइए, ऐसी विकलांग विभूतियों के बारे में जानें जिन्होंने अपनी विकलांगता को जीवन के किसी भी मोड़ पर आड़े नहीं आने दिया बल्कि अपने मज़बूत इरादों के बल पर सफलता की बुलंदियों को छुआ और दुनिया के लिए अनूठा उदाहरण बने।

त्रेता युग में एक विद्वान हुए जिनका नाम था अष्टावक्र। जब उनका जन्म हुआ तो वे आठ जगह से टेढ़े थे। आठ प्रकार की वक्रता के कारण ही उनका नाम अष्टावक्र पड़ा। एक बार वे राजा जनक के दरबार में गये तो उसके टेढ़े-मेढ़े शरीर को देखकर सभी हँसने लगे। अष्टावक्र ने कहा, "गन्ने के टेढ़े-मेढ़े होने से उसकी मिठास में कमी नहीं आती। फूल की पंखुड़ी के टेढ़े होने से उसकी खुशबू खत्म नहीं हो जाती और नदी की धारा के टेढ़े होने से उसका जल दूषित नहीं हो जाता।" यह सुनकर राजा जनक तथा दरबारी न केवल लज्जित हुए बल्कि अष्टावक्र की विद्वत्ता के सामने नतमस्तक हुए।

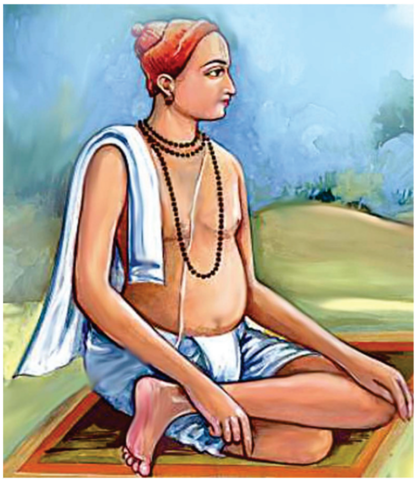

बच्चो! हिंदी साहित्य में भक्ति काल में सूरदास का नाम भला कौन नहीं जानता। जन्म से ही नेत्रहीन होने के बावजूद उन्होंने अपने आराध्य श्री कृष्ण का वर्णन बड़े ही सजीव व प्रभावशाली ढंग से किया। श्री कृष्ण की बाल-लीला का वर्णन जैसा भक्त सूरदास ने किया वैसा अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उनकी अमरवाणी आज भी जन-जन का कंठहार है। इसी तरह

हिंदी साहित्य के अनमोल रत्न जायसी भी एक आँख और कान से रहित थे। एक बार जब शेरशाह ने उनका उपहास उड़ाया तो उन्होंने कहा, ''मोहि का हँससि, के कोहरहिं ? अर्थात तुम मुझ पर हँसे हो अथवा उस कुम्हार (ईश्वर, जिसने मुझे बनाया है) पर ? यह सुनकर शेरशाह बहुत लज्जित हुआ और उन्हें बहुत सम्मान दिया। इनके महाकाव्य 'पद्मावत' के कारण इन्हें महाकवि की उपाधि मिली। इसी प्रकार नेत्रहीन व ग़रीब होने के बावजूद 'मिल्टन' कभी ज़िंदगी से निराश नहीं हुए अपितु अंग्रेज़ी काव्य-रचना में अद्‌वितीय स्थान हासिल किया। आज भी अनेक विद्‌वान उनकी कविताओं पर शोध करते हैं।

भारतीय सिनेमा में प्रसिद्ध संगीतकार स्वर्गीय रवीन्द्र जैन का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। बचपन से ही इन्हें न के बराबर दिखाई देता था। आँखों के आप्रेशन के बाद भी इनकी आँखें ठीक नहीं हुईं किन्तु रवीन्द्र जैन की दृढ़ इच्छा शक्ति, एकाग्रता और आत्मविश्वास के आगे विकलांगता की एक न चली। उन्होंने फिल्मों में अद्‌भुत संगीत दिया, जो आज भी लोगों के मन-मस्तिष्क पर छाया हुआ है। रामानन्द सागर द्‌वारा टेलिविज़न पर प्रसारित 'रामायण' में भी इन्होंने ही संगीत दिया जो बहुत लोकप्रिय हुआ। इसके अतिरिक्त उन्होंने अलिफ लैला, जय हनुमान, श्रीकृष्णा आदि धारावाहिकों में भी कर्णप्रिय संगीत दिया।

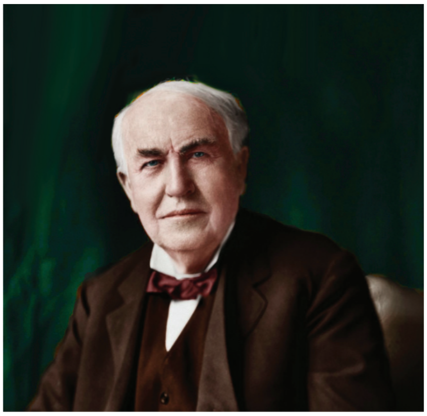

सुनने की लगभग शक्ति खो चुके विश्व के महान आविष्कारक थामस अल्वा एडीसन से सारा संसार परिचित है। उन्होंने जीवन में अनेक कष्ट झेले किंतु कभी निराश नहीं हुए। उन्होंने हज़ार से भी अधिक आविष्कार किये जिनमें बिजली के बल्ब का आविष्कार दुनिया के लिए सबसे बड़ी देन है। वे पूरी तरह सुन भी नहीं सकते थे किंतु उनके द्‌वारा किए गये ध्वनि से संबंधित आविष्कार जैसे माइक्रोफ़ोन, फोनोग्राफ़ , कार्बन टेलिफ़ोन ट्रांसमीटर आदि से लोग आश्चर्य चकित होते थे कि जो व्यक्ति पूरी तरह स्वयं सुन नहीं सकता वह किस प्रकार ध्वनि के हर पहलू को भली-भाँति समझ लेता है। निस्संदेह विकलांगता उनके काम में कभी बाधक नहीं बनी।

इस तरह मात्र तीन वर्ष की आयु में नेत्रहीन हो जाने वाले लुई ब्रेल ने भी जीवन में अनेक कष्ट सहे। वे स्वयं दृष्टिहीन लोगों के स्कूल में पढ़े व अध्यापक बने किंतु उस समय तक नेत्रहीनों के लिए सीखने के लिए कोई बढ़िया तकनीक नहीं थी। अतएव लुई ब्रेल ने अनथक प्रयत्नों के बाद नेत्रहीनों के लिए एक ऐसी लिपि का आविष्कार किया जिससे नेत्रहीन पढ़ने में समर्थ हो सके। इस लिपि को ब्रेल लिपि कहते हैं। यह लिपि कागज़ पर उभरे चिह्न होते हैं जिन्हें स्पर्श कर वे पढ़ते हैं। बेशक यह लिपि दुनिया भर में आज प्रयुक्त हो रही है।

समाज सेवा में भी विकलांग कभी पीछे नहीं हटे। सुप्रसिद्ध समाज सेवी बाबा आम्टे से भला कौन परिचित नहीं। इनका असली नाम मुरलीधर देवीदास आम्टे था। ये स्वयं भयंकर अस्थि विकलांगता के शिकार थे परंतु फिर भी इन्होंने अपनी सारी उम्र कुष्ठ रोगियों और समाज से परित्यक्त लोगों की सेवा में बिता दी। महाराष्ट्र के वडोरा के निकट आनंदवन आश्रम में इन्हीं की प्रेरणा व अनथक प्रयासों से अनेक कुष्ठ रोगी भीख माँगना छोड़ श्रम करके पसीने की कमाई करने में समर्थ हुए व सम्मानपूर्वक

जीवन जीने लगे। बाबा आम्टे को समाज सेवा के लिए भारत सरकार ने 1971 में पद्मश्री तथा 1986 में पद्मभूषण सम्मान दिया। इनके अतिरिक्त इन्हें अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान व पुरस्कार मिले।

बच्चो! भारतीय क्रिकेट में विकलांगता के बावजूद जगह बनाना अपने आप में अनूठी बात है। यह करिश्मा कर दिखाया भारतीय स्पिनर चन्द्रशेखर ने। उनका एक हाथ पोलियोग्रस्त हो गया था किंतु फिर भी वे उसी पोलियोग्रस्त हाथ से बड़ी अच्छी गेंदबाजी करते और बल्लेबाज को पैविलियन पहुँचा देते। उन्होंने भारतीय टीम की ओर से 58 टैस्ट मैच खेले और 7199 रन देकर 242 विकेट लिये। भारत सरकार द्वारा उन्हें अर्जुन पुरस्कार से नवाज़ा जा चुका है।

भारतीय इतिहास में ऐसे व्यक्तित्व भी हैं जिन्होंने अपनी विकलांगता से कभी हार नहीं मानी अपितु वीरता एवं साहस के बल पर दुनिया में अपनी ताकत का लोहा मनवाया। राणा सांगा ने बचपन में अपनी एक आँख खो दी थी और बाद में युद्धों में एक हाथ और एक पैर को भी इन्होंने खो दिया किन्तु इस विकलांगता का उनकी वीरता और साहस पर कोई असर नहीं पड़ा। बड़े-बड़े शासक उनके नाम से थर-थर काँपते थे। राणा सांगा ने इब्राहिम लोदी जैसे अनेक विरोधियों के दाँत खट्टे किये। इसी तरह महाराजा रणजीत सिंह की चेचक के कारण एक आँख खराब हो गयी थी। किंतु फिर भी वे निराश नहीं हुए। उन्नीस वर्ष की आयु में उन्होंने लाहौर पर अधिकार कर लिया था। फिर धीरे-धीरे जम्मू कश्मीर, अमृतसर, मुलतान, पेशावर आदि क्षेत्रों पर इन्होंने अधिकार कर लिया। अपने कुशल प्रबंध, वीरता, न्यायप्रियता, दयालुता और दानशीलता के कारण महाराज रणजीत सिंह को जाना जाता है।

अतएव बच्चो! यदि दिल में कुछ कर गुज़रने की तमन्ना और जज़्बा हो तो तमाम मुसीबतों को आखिरकार घुटने टेकने ही पड़ते हैं। अब आप ही बताइये यदि इन विभूतियों ने जीवन के संघर्ष में अपनी हार मान ली होती तो क्या वे आज दुनिया के लिए प्रेरणास्रोत बन पाते? आइए, उठिये, अपने आत्मविश्वास, दृढ़निश्चय, चित्त की एकाग्रता और अपनी शक्तियों को केंद्रित करें और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें। कहा भी है, ''भाग्य संवरता नहीं, संवारना पड़ता है''। और भी कहा गया है, ''ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता अपने आप करते हैं।''

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਸਫਲਤਾ	=	सफलता	ਤਕਨੀਕ	=	तकनीक
ਖਤਮ	=	खत्म	ਕਾਰਬਨ	=	कार्बन
ਸਾਹਿਤ	=	साहित्य	ਕਾਗਜ਼	=	कागज़
ਕਾਵਿ-ਰਚਨਾ	=	काव्य-रचना	ਚੇਚਕ	=	चेचक
ਬਿਜਲੀ	=	बिजली	ਅਨੇਕ	=	अनेक
ਸਥਾਨ	=	स्थान	ਆਤਮ ਵਿਸ਼ਵਾਸ	=	आत्मविश्वास
ਸ਼੍ਰੀਕ੍ਰਿਸ਼ਨ	=	श्री कृष्ण	ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ	=	अंग्रेज़ी
ਲਿਪੀ	=	लिपि	ਜੀਵਨ	=	जीवन

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਹਨੇਰਾ	=	अंधकार	ਮਜ਼ਾਕ	=	उपहास
ਨਤੀਜਾ	=	परिणाम	ਸ਼ਰਮਿੰਦਾ	=	लज्जित
ਅੱਖ	=	आँख	ਉੱਨੀ	=	उन्नीस

3. शब्दार्थ :-

विकलांग	=	अंग से हीन, बेकाम अंग वाला	अनथक	=	न थकने वाला
दूषित	=	गंदा, मैला	कर्णप्रिय	=	कानों को प्रिय लगने वाला
विभूतियाँ	=	ऐश्वर्यशाली व्यक्तित्व	अस्थि	=	हड्डी
अन्यत्र	=	दूसरी जगह, और कहीं	व्यक्तित्व	=	व्यक्ति की विशेषता या गुण
कंठहार	=	गले का हार	एकाग्रता	=	तल्लीन होने का भाव
बुलंदी	=	ऊँचाई, उत्कर्ष	जज़्बा	=	भाव, जोश, भावना

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) जीवन में मुश्किलों से पार कौन लोग जा पाते हैं ?

(ख) राजा जनक के दरबार में अष्टावक्र को देखकर सभी क्यों हँसने लगे ?

(ग) राजा जनक तथा दरबारी अष्टावक्र के सामने क्यों नतमस्तक हुए ?

(घ) सूरदास ने किसकी आराधना में काव्य रचना की ?

(ङ) जायसी के प्रसिद्ध महाकाव्य का नाम लिखें।

(च) रामानन्द सागर द्वारा टेलीविज़न पर प्रसारित प्रख्यात धारावाहिक 'रामायण' में संगीत मुख्य रूप से किसने दिया ?

(छ) बिजली के बल्ब का आविष्कार किसने किया ?

(ज) ब्रेल लिपि का आविष्कार किसने किया?

(झ) महाराजा रणजीत सिंह ने कितनी आयु में लाहौर पर अधिकार कर लिया था?

(ञ) बाबा आम्टे को भारत सरकार ने समाज सेवा के लिए पद्मश्री तथा पद्मभूषण का सम्मान कब दिया?

5. इन प्रश्नों के उत्तर लगभग चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) राजा जनक के दरबार में अष्टावक्र को देखकर जब सभी हँसने लगे तो अष्टावक्र ने क्या कहा?

(ख) शेरशाह क्यों लज्जित हुआ और उसने जायसी को क्यों सम्मान दिया?

(ग) थामस एडीसन के ध्वनि संबंधी आविष्कारों से लोग क्यों आश्चर्यचकित हो जाते थे?

(घ) लुई ब्रेल द्वारा नेत्रहीनों के पढ़ने के लिए बनाई लिपि की क्या विशेषता है?

(ङ) बाबा आम्टे का समाज सेवा में क्या योगदान रहा?

(च) भारतीय स्पिनर चन्द्रशेखर का क्रिकेट में क्या योगदान रहा?

(छ) राणा सांगा और महाराजा रणजीत सिंह की वीरता के विषय में आप क्या जानते हैं?

(ज) भाग्य संवरता नहीं, संवारना पड़ता है - इन पंक्तियों में लेखक क्या कहना चाहता है?

6. इन मुहावरों के अर्थ बताते हुए उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-

घुटने टेकना ______ ____

सिर न झुकाना ______ ____

दाँत खट्टे करना ______ ____

लोहा मनवाना ______ ____

थर-थर काँपना ______ ____

बुलंदियाँ छूना ______ ____

7. इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

चुनौती =	______,______	सेवा =	______,______
अनूठा =	______,______	पुरस्कार =	______,______
दृढ़ता =	______,______	हाथ =	______,______
उपहास =	______,______	अधिकार =	______,______
शक्ति =	______,______	भाग्य =	______,______
मस्तिष्क =	______,______	लक्ष्य =	______,______
प्रयत्न =	______,______	पैर =	______,______
अध्यापक =	______,______	अंधकार =	______,______
लज्जित =	______,______	जल =	______,______

8. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-**

जिसे आँखों से दिखाई न देता हो ____________

गले का हार ____________

संगीत देने वाला ____________

अपने पर विश्वास होना ____________

जिसका कोई मोल न हो ____________

कानों को प्रिय लगने वाला ____________

आविष्कार करने वाला ____________

9. **रचनात्मक अभिव्यक्ति :-**

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** – इस पाठ में आप किस महान विभूति से प्रेरित हुए हैं ? क्यों ?

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति** – मन के जीते जीत, मन के हारे हार है-- पर पाँच-सात वाक्य लिखें।

10. **इस पाठ में आए 'र' वर्ण के प्रयोग वाले शब्द ढूँढकर लिखें :**

र	:	__________	____________
ॅ	:	__________	____________
/	:	__________	____________
^	:	__________	____________

11. **इन शब्दों के विशेषण बनाएं**

भारत __________ सम्मान __________

स्वर्ग __________ साहित्य __________

प्रभाव __________ दया __________

पाठ-10

रब्बा मींह दे-पानी दे

रब्बा मींह दे-पानी दे, पानी दे, पानी दे।
लू से झुलसी धरती को, इक नई ज़िन्दगानी दे।।
पानी से खेतों में सोना, नाचे गेहूँ-गाए झोना।
पानी है तो सब है दूना, बिन पानी कत्था क्या चूना।
पानी है तो है ज़िन्दगानी, पानी खत्म तो खत्म कहानी।
जीवन की कश्ती को, आकर नई रवानी दे।
रब्बा मींह दे - - - - - - - - - - - - -

पानी से हरियाली होती-खेतों में खुशहाली होती।
क्या मवेशी क्या वन या बूटे-पानी बिन जीवन से छूटे।
आओ, पानी नष्ट करें न, प्रदूषित या व्यर्थ करें न।
मेरे देश के जन-जन को, यह सीख सुहानी दे।।
रब्बा मींह दे - - - - - - - - - - - - - - -

चाहे इसका रंग नहीं है-अपनी कोई उमंग नहीं है।
फिर भी यह जिसमें मिल जाता-उसके रंग में ही खिल जाता।
ग़म में आँखों में आ जाता और खुशी में यही रुलाता,
पर-दु:ख को अपना समझे-हर आँख को पानी दे।
रब्बा मींह दे - - - - - - - - - - - - - - - -

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-**

ਰੱਬਾ	=	रब्बा	ਲੂ	=	लू
ਪਾਣੀ	=	पानी	ਹਰਿਆਲੀ	=	हरियाली
ਕਿਸ਼ਤੀ	=	कश्ती	ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਿਤ	=	प्रदूषित

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਝੋਨਾ	=	चावल की फसल	ਫਜ਼ੂਲ	=	व्यर्थ
ਪਸ਼ੂ	=	मवेशी	ਦੂਜਿਆਂ ਦਾ ਦੁੱਖ	=	पर दु:ख
ਰੱਬਾ	=	परमात्मा	ਸਿੱਖਿਆ	=	सीख

3. **शब्दार्थ :-**

रब्बा	=	प्रभु, परमात्मा	मींह	=	वर्षा
दूना	=	दुगुना	मवेशी	=	पशु
पर दु:ख	=	दूसरों का दु:ख	सीख	=	शिक्षा

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) इस कविता में ईश्वर से क्या प्रार्थना की गई है ?

(ख) 'खेतों में सोना' का क्या अर्थ है ?

(ग) पानी के बिना मवेशी और खेतों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(घ) इस कविता में देश के प्रत्येक नागरिक को क्या सीख दी गई है ?

(ङ) पानी का स्वभाव कैसा है ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) 'पानी से - - - - - - - - - - सुहानी दे।' कविता की इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें ?

(ख) जीवन में पानी की आवश्यकता क्यों है ? कविता के आधार पर उत्तर दें।

(ग) दूसरों के दु:ख में हम उनकी क्या सहायता कर सकते हैं ?

(घ) जहाँ पानी की अधिकता बाढ़ की स्थिति पैदा करती है वहीं पानी की कमी सूखे की स्थिति पैदा करती है। इन दोनों स्थितियों में मानव तथा प्रकृति प्रभावित होती है। इन दोनों स्थितियों में मानव तथा प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभाव पर पाँच-पाँच वाक्य लिखें।

6. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

पानी = ________, ________

मींह = ________, ________

सीख = ________, ________

जन = ________, ________

दुःख = ________, ________

आँख = ________, ________

धरती = ________, ________

रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** – पानी बचाने के उपायों पर कक्षा में चर्चा करें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति** – आँखों में पानी आना, पानी–पानी होना आदि 'पानी' से संबंधित मुहावरे एकत्र करें।

(ग) **रचनात्मक कार्य** – जल संकट की रोकथाम के लिए कुछ सुझाव स्पष्ट करने वाले पोस्टर बनायें और अपनी कक्षा में दीवार पर लगायें।

पाठ–11

ईदगाह

रमजान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गई। वे बार-बार अपनी जेबों से अपना खज़ाना निकाल कर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह, उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों में अनगिनत चीज़ें लायेंगे .... खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या। सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह तेरह-चौदह साल का ग़रीब सूरत, दुबला पतला लड़का जिसका बाप गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई, किसी को पता न चला, क्या बीमारी है।

हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है .... तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है ? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे! उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाये, तो क्या हो! नन्ही-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे! पैर में छाले पड़ जायेंगे। जूते भी तो नहीं हैं। कुल दो आने पैसे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में और पाँच अमीना के बटुए में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार।

गाँव से मेला चला और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़ कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इंतज़ार करते। ये लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है। शहर का दामन आ गया।

अब बस्ती घनी होने लगी थी। ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक-से-एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्के ताँगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल, अपनी विपन्नता से बेखबर, संतोष और धैर्य में मग्न चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीज़ें अनोखी थीं। जिस चीज़ की ओर देखते, देखते ही रह जाते और पीछे से बार-बार हार्न की आवाज़ होने पर भी न चेतते, हामिद तो मोटर के नीचे आते-आते बचा।

सहसा ईदगाह नज़र आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाज़िम बिछा हुआ है और रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं, पक्की जगह के नीचे तक, जहाँ जाज़िम भी नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गये। कितना सुंदर संचालन है, कितनी सुंदर व्यवस्था, लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब के सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है।

नमाज़ खत्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद, मोहसिन, नूरे और शम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का तिहाई हिस्सा जरा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं, अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह तरह खिलौने हैं - सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। वाह! कितने सुंदर खिलौने हैं, अब बोलना चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है। खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कन्धे पर बंदूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किये चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है। नूरे को वकील साहब से प्रेम है। कैसी विद्वता है उनके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंज़ीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किये चले आ रहे हैं। ये सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े, तो चूर चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के?

मोहसिन कहता है - मेरा भिश्ती रोज़ पानी दे जायेगा, साँझ-सवेरे।

महमूद- और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा। कोई चोर आयेगा, तो फौरन बंदूक का फायर कर देगा।

शम्मी- और मेरी धोबिन रोज़ कपड़े धोयेगी।

हामिद खिलौनों की निंदा करता है - मिट्टी ही के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब जामुन, किसी ने सोहन हलवा। मज़े से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता–हामिद, रेवड़ी ले जा कितनी खुशबूदार है।

हामिद को संदेह हुआ, यह केवल क्रूर विनोद है, मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकाल कर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और शम्मी खूब तालियाँ बजा-बजा कर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन – अच्छा अबकी ज़रूर देंगे हामिद, अल्ला कसम, ले जा।

हामिद – रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?

शम्मी – तीन ही तो पैसे हैं, तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?

महमूद- हमसे गुलाब जामुन ले जा, हामिद।

हामिद- मिठाई क्या बड़ी चीज़ है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन – लेकिन दिल में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद – हम समझते हैं इसकी चालाकी। जब हमारे पैसे खर्च हो जायेंगे तो हमें ललचा-ललचाकर खायेगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वे सबके सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती है, तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होगी। फिर उसकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेगी और कहेगी – 'मेरा बच्चा, अम्मा के लिए चिमटा लाया है।' हज़ारों दुआयें देगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखायेगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौने देखने पर कौन इन्हें दुआयें देगा। बड़ों की दुआयें सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं। उसने दुकानदार से पूछा – यह चिमटा कितने का है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा – वह तुम्हारे काम का नहीं है जी।

'बिकाऊ है कि नहीं?'

'बिकाऊ क्यों नहीं है और यहाँ क्यों लाद लाये हैं?'

तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?

छह पैसे लगेंगे।

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक-ठीक बताओ।'

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।'

हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा – तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की न सुनें, लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक हो और शान से अकड़ता हुआ साथियों के पास आया। जरा सुनें, सबके सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँस कर कहा – यह चिमटा क्यों लाया पगले! इसे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटक कर कहा – जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दे। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जायें।

महमूद बोला – तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद – खिलौना क्यों नहीं है? अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई, हाथ में ले लिया तो, फकीर का चिमटा हो गया, चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगायें, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है – चिमटा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं, फिर मेले से दूर निकल आये हैं, नौ कब के बज गए, धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है, हामिद है बड़ा चालाक, इसलिए अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। मोहसिन, महमूद, शम्मी और नूरा एक तरफ है, हामिद अकेला दूसरी तरफ। शास्त्रार्थ हो रहा है।

मोहसिन को एक चोट सूझ गई – तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज़ आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा, लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरंत जवाब दिया – आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, तुम्हारे यह वकील, सिपाही और भिश्ती घर में घुस जायेंगे। आग में कूदना वह काम है, जो यह रुस्तमे-हिंद ही कर सकता है।

हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे और शम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। विजेता को हारने वालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, वह हामिद को भी मिला। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किये, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया।

सन्धि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा – जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आये। कितने खूबसूरत खिलौने हैं?

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गई, मेले वाले आ गये। अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

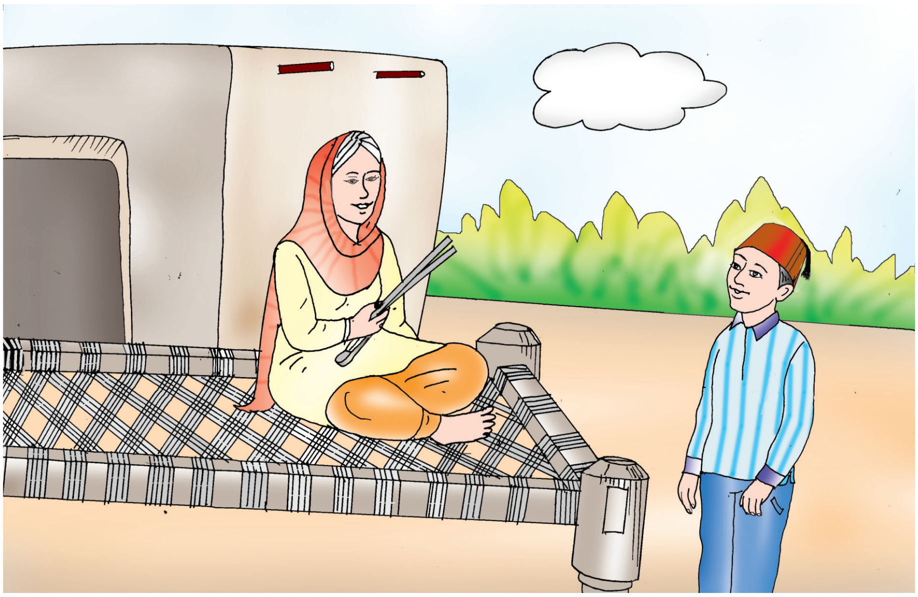

यह चिमटा कहाँ से लाया?'

'मैंने मोल लिया है।'

'कै पैसे में?'

'तीन पैसे दिए।'

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! सारे मेले में तुझे और क्या कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया ?

हामिद ने अपराधी भाव से कहा – तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है ? दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे। वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया।

और अब एक विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैला कर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਈਦਗਾਹ	=	ईदगाह	ਧੋਬਣ	=	धोबिन
ਪੰਦਰਾਂ	=	पन्द्रह	ਵਿਦਵਤਾ	=	विद्वता
ਇਮਲੀ	=	इमली	ਅਦਾਲਤ	=	अदालत
ਵਜ਼ੂ	=	वजू	ਕਵਾਇਦ	=	कवायद

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਸੰਪਤੀ	=	बिसात	ਖਜ਼ਾਨਾ	=	कोष
ਗਰੀਬੀ	=	विपन्नता	ਮਾਸ਼ਕੀ	=	भिश्ती
ਸਿਰ ਝੁਕਣਾ	=	सिजदे	ਰੱਬ	=	अल्लाह
ਝੂਲਾ	=	हिंडोला	ਝਿੜਕਾਂ	=	घुड़कियाँ
ਇਤਰਾਜ਼	=	आपत्ति	ਪਿਆਰ	=	स्नेह

3. शब्दार्थ

ईदगाह	=	ईद के दिन मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज़ पढ़ने की जगह
अनगिनत	=	जिसे गिना न जा सके
बिसात	=	पूँजी

विपन्नता = ग़रीबी
जाज़िम = दरी के ऊपर बिछाने की चादर
हिंडोला = झूला
मशक = भेड़ या बकरी की खाल को सीकर बनाया हुआ थैला जिसमें भिश्ती पानी ढोते हैं।
भिश्ती = मशक से पानी ढोने वाला

4. इन वाक्यों में उपयुक्त शब्द भरकर वाक्य पूरा करें :-

(क) रमजान के ---------- रोज़ों के बाद ईद आई है।
(ख) ग्रामीणों का दल अपनी ------- से बेखबर संतोष और धैर्य में मग्न चला जा रहा था।
(ग) इस्लाम की निगाह में सब ---------- हैं।
(घ) तुम्हारी ---------- तवे से जल जाती थीं इसलिए इसे मैंने लिया।

5. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) अमीना हामिद को मेले में क्यों नहीं भेजना चाहती?
(ख) नमाज़ खत्म होने पर लोग क्या करते हैं?
(ग) हामिद हिंडोले में क्यों नहीं चढ़ता?

6. इन प्रश्नों का उत्तर लगभग चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) हामिद का चिमटा रुस्तमे-हिंद कैसे है?
(ख) हामिद ने अपनी दादी के लिए चिमटा क्यों खरीदा?
(ग) हामिद के हाथ में चिमटा देखकर अमीना क्रोध में क्यों आई?
(घ) ईदगाह में नमाज़ के दृश्य का वर्णन करें।
(ङ) हामिद के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ लिखें।
(च) 'ईदगाह' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखें।

7. इन शब्दों/मुहावरों के अर्थ लिखते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग करें :-

धावा बोलना ______ ______________________________
पैरों में पर लगना ______ ______________________________
दिल बैठ जाना ______ ______________________________
राई का पर्वत बनाना ______ ______________________________
मन गद्गद् हो जाना ______ ______________________________
बाल भी बाँका न होना ______ ______________________________
रंग जमना ______ ______________________________

नाम रटना ______ ______________________________

दिल कचोटना ______ ______________________________

देखते ही रह जाना ______ ______________________________

8. **वचन बदलें :-**

बंदूक ________ चिमटा ________ पैसा ________

आलोचना ________ खिलौना ________ टोली ________

9. **लिंग बदलें :-**

बूढ़ा ________ लड़की ________ दादा ________

धोबिन ________ ऊँट ________

10. **विपरीतार्थक शब्द लिखें :-**

विवेक ________ आगे ________

धीरे ________ धूप ________

11. **शुद्ध करके लिखें**

कानुन ________ अनगिणत ________

प्रिथक ________ बुराईयाँ ________

12. **इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करें :-**

रोज़ा ____

दुआएँ ____

गत वर्ष ____

ग्रामीण ____

फौरन ____

व्यवस्था ____

13. **निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण को रेखांकित करके उसका भेद भी लिखें :-**

	वाक्य	**क्रिया विशेषण का भेद**
(क)	ये लोग क्यों धीरे-धीरे चल रहे हैं।	रीतिवाचक क्रिया विशेषण
(ख)	इधर दुकानों की कतार लगी हुई है।	____________________
(ग)	आज ईद आ गयी।	____________________
(घ)	उसने कुछ नहीं खाया।	____________________
(ङ)	वह ज़ोर से चिल्लाया।	____________________

14. **निम्नलिखित वाक्यों में उचित योजक चिह्न लगाकर वाक्य पूरे करें :-**

(क) मोहसिन इतना उदार नहीं है **लेकिन** वह जानकर भी उसके पास जाता है। (क्योंकि, लेकिन)

(ख) ______ वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे ______ वह कितनी प्रसन्न होगी।
(अगर....तो, यद्यपि......तथापि)

(ग) हामिद बड़ा चालाक है ______ अपने पैसे बचा कर रखे थे । (इसलिए, परंतु)

(घ) वे बार-बार अपनी जेबों से अपना ख़ज़ाना निकाल कर गिनते हैं ______खुश होकर फिर रख लेते हैं।
(और, या)

(ङ) हामिद ने चिमटे को इस तरह कंधे पर रखा ______ बंदूक हो। (मानो, ताकि)

(च) अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी ______ उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी।
(या, और)

(छ) तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, ______मैंने इसे लिया । (क्योंकि, इसलिए)

15. **नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाएँ अकर्मक हैं अथवा सकर्मक :-**

(क) हामिद हाथ फैलाता है। सकर्मक

(ख) अमीना ने छाती पीट ली। ______

(ग) वह रोने लगी। ______

(घ) लोग आपस में गले मिल रहे हैं। ______

(ङ) ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। ______

(च) बच्चों के लिए नगर की सभी चीज़ें अनोखी थीं। ______

16. **नीचे लिखे वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करें :-**

(क) ਹਾਮਿਦ ਤਾਂ ਮੋਟਰ ਦੇ ਹੇਠਾਂ ਆਉਂਦਾ-ਆਉਂਦਾ ਬਚਿਆ।

(ख) ਉਸਦਾ ਚਿਮਟਾ ਰੁਸਤਮੇ ਹਿੰਦ ਹੈ।

(ग) ਤੇਰੀਆਂ ਉਂਗਲੀਆਂ ਤਵੇ ਨਾਲ ਸੜ ਜਾਂਦੀਆਂ ਸਨ।

17. **निम्नलिखित में से उचित संबंधबोधक शब्द लगाकर वाक्य पूरे करें:**

(क) हामिद का बाप अमीना ______और कौन हैं। (के साथ, के सिवा)

(ख) रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों ______ईद आई हैं। (के बाद, के साथ)

(ग) हामिद बच्चों ______जा रहा था। (के सिवा,के साथ)

(घ) हामिद तो मोटर ______आते-आते बचा। (के नीचे,के बाद)

पाठ-12

ज्ञान और मनोरंजन का घर : साइंस सिटी

गर्मी के बाद स्कूल का आज पहला दिन था। महिला स्टाफ रूम में अध्यापिकाओं की बातचीत के साथ हँसने-खिलखिलाने की आवाज़ भी आ रही थी। आधी छुट्टी के समय खाना खाने के बाद सभी छुट्टियों के बारे में बात कर रही थीं जैसे ही आधी छुट्टी खत्म होने की घंटी बजी तब सभी अध्यापक-अध्यापिकाएँ तथा विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षाओं की ओर चल पड़े। जैसे ही साइंस अध्यापिका उर्मिल वशिष्ठ ने आठवीं कक्षा में प्रवेश किया तो छात्राओं ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया - उन्होंने स्नेहपूर्वक अपने प्रिय छात्रों की ओर देखा। सभी बहुत खुश नज़र आ रहे थे। वे डेढ़ महीने की छुट्टियों के बाद अपने मित्रों से मिले थे। उन्हें बैठने का संकेत करते हुए अध्यापिका ने मुस्कराते हुए कहा - "बच्चो! आप सब कैसे हो? छुट्टियाँ कैसे बिताईं?" कहाँ-कहाँ गए? क्या-क्या देखा? "अच्छा दीपशिखा आप बताओ - कैसी रही आपकी छुट्टियाँ?" दीपशिखा कक्षा की मेधावी छात्रा थी - पढ़ाई के साथ साथ संगीत, खेलकूद, ज्ञान-विज्ञान सबमें आगे रहती थी। शायद इसलिए वह हर अध्यापक की प्रिय थी। दीपशिखा ने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा - "अध्यापिका जी! छुट्टियों में मैं अपने मामा जी के पास कपूरथला गई थी। मेरे मामा जी साइंस सिटी में काम करते हैं।" "अच्छा, दीपशिखा! फिर तो आप साइंस सिटी भी गई होंगी। वहाँ क्या-क्या देखा?" अध्यापिका ने कहा।

"जी, मैं और मेरी बहन मोनिका अपने मामा जी के साथ साइंस सिटी गई थीं। अहा! कितना बड़ा साइंस सिटी है। हमने वहाँ बहुत मज़ा किया। बोटिंग की, डायनासोर देखे और डोमथियेटर भी देखा। हम वहाँ सारा दिन घूमते रहे।" दीपशिखा ने आँखें फैलाते हुए कहा।

सभी छात्र-छात्राएँ इस बातचीत का आनंद ले रहे थे। अध्यापिका उन्हें आज बातों ही बातों में साइंस सिटी की जानकारी देना चाहती थी। वैसे भी अध्यापिका का पढ़ाने का तरीका ही ऐसा था वह चाहती थी कि बच्चे पढ़ाई का आनंद लें। उसे बोझ न समझें। इसलिए उसके विषय में छात्र अधिक दिलचस्पी लेते थे। छात्रों को सम्बोधित करते हुए अध्यापिका ने कहा - बच्चो! दीपशिखा बिल्कुल ठीक कह रही है - साइंस सिटी कपूरथला बहुत बड़ा है। यह जालंधर कपूरथला सड़क पर स्थित है। 72 एकड़ भूमि में फैला है विज्ञान का यह घर। क्या आपको इसका पूरा नाम पता है?

'जी मैम!' राहुल ने खड़े होते कहा- 'पुष्पा गुजराल साइंस सिटी'।

'हाँ बच्चो! यह हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री इंद्र कुमार गुजराल जी की पूज्य माता जी के नाम पर है। इसका शिलान्यास 17 अक्तूबर 1997 को उस समय के प्रधानमंत्री श्री गुजराल जी ने किया। इसका उद्घाटन माननीय राज्यपाल एस.एफ. रोडरिज जी ने 19 मार्च 2005 को किया। तब से लेकर यह लगातार लोगों को ज्ञान दे रहा है और उनका मनोरंजन कर रहा है। "बच्चो! यह साल के 365 दिन खुला रहता है।"

अध्यापिका ने देखा – बच्चों की आँखों में उत्सुकता थी – ''अच्छा बच्चो! और किस–किस ने देखा है – साइंस सिटी?''

''जी मैंने, मैंने, मैंने भी'' तीन बच्चों–जागृति, रवीना और कुलविंदर ने हाथ खड़ा किया।

''अच्छा जागृति, वहाँ आप कब गये थे? वहाँ आपने क्या–क्या देखा?'' अध्यापिका ने बात को आगे बढ़ाते हुए पूछा।

''जी टीचर, मेरे अंकल जालंधर में रहते हैं। पिछले साल दिसंबर की छुट्टियों में मैं वहाँ गई थी। तब मैंने अपने अंकल–आंटी के साथ साइंस सिटी को देखा था। वहाँ बहुत कुछ देखने वाला है – हैल्थ गैलरी में 12 फुट ऊँचा दिल का मॉडल था। वहाँ रक्त संचार प्रणाली दिखाई गई थी। छाती में फेफड़ों की स्थिति एक मॉडल में दिखाई गयी थी और मैम एक साइकिल पर चढ़कर पैडल चलाकर हड्डियों और जोड़ों की गति दिखाई गई थी। ऐसे एक ऑप्रेशन थियेटर भी दिखाया गया था। वहाँ और भी बहुत कुछ था।

''शाबाश! बैठो जागृति।[तुमने बिल्कुल ठीक–ठीक बताया]। रवीना अब आपकी बारी है – आप बताओ–आपने वहाँ क्या–क्या देखा?''

'अध्यापिका जी – देखा तो बहुत कुछ था पर मुझे डायनासोर पार्क, डिफैंस गैलरी और फन साइंस में बहुत मज़ा आया। रवीना ने कुछ याद करते कहा।

'मैडम–डायनासोर पार्क में कितने बड़े–बड़े डायानासोर हैं– ये तो बहुत ही डरावने होंगे– मैंने टी.वी. में देखा था'। हरमन बोल पड़ा।

'अरे, नहीं बच्चे – ये असल के डायनासोर नहीं है – दरअसल पार्क में 26 तरह के अलग अलग डायनासोरों को 45 अलग–अलग मॉडलों में दिखाया गया है। पैंतीस फुट ऊँची 'वोल्केनो' आकृति में चार हिलते जुलते, मुँह फैलाते–आवाज़ें निकालते डायानसोर दिखाई देते हैं। यह सब साऊँड और इलैक्ट्रॉनिक प्रणाली से है पर इनसे डरने की ज़रूरत नहीं। हाँ, सावधानी ज़रूर रखनी होगी। इनके मुँह में हाथ मत डालना, नहीं तो दुर्घटना हो सकती है।'' अध्यापिका ने कुछ देर बाद कहा – 'हाँ तो कुलविंदर– अब आपकी बारी है – आपने साइंस सिटी में क्या–क्या देखा?''

''जी मैम! पिछले वर्ष जब मैं अन्तर्ज़िला विज्ञान प्रदर्शनी प्रतियोगिता में जालंधर गई थी तब हमें साइंस सिटी दिखाया गया था। वहाँ डोम थियेटर, लेज़र थियेटर, थ्री डी थियेटर और मैम एक हवाई जहाज़ में उड़ान जैसा कुछ था'' कुलविंदर ने याद करते कहा।

'हाँ बच्चो, ये सब साइंस सिटी के मुख्य आकर्षण हैं-इन चारों शो के लिए एक विशेष टिकट भी खरीदनी पड़ती है। इसमें है डोम थियेटर, लेज़र शो, थ्री डी और फ्लाइट सिमुलेटर। डोम थियेटर एक विशेष आकार का थियेटर है। जिसका फ्रेम आम थियेटर से दस गुणा बड़ा है। इसमें बहुत बड़े आकार की पिक्चर आती है और ऐसे लगता है मानो सब कुछ आपके पास हो रहा है। इसकी आवाज़ बहुत ही साफ़ है'।

''मैडम जी फिर तो फिल्म देखने में बड़ा मज़ा आता होगा। मैडम जी धर्मेन्द्र की फिल्म यमला-पगला-दीवाना हमें वहीं दिखा दो'' राहुल जो कक्षा में सबसे शरारती था आखिर बोल ही पड़ा।

सभी बच्चे एक साथ हँस पड़े। अध्यापिका ने कहा – ''ओ शरारती! वहाँ इस तरह की फिल्में नहीं होतीं। वहाँ 40-50 मिनट की ज्ञानवर्धक फिल्में जैसे, ब्रह्माण्ड, नील नदी का रहस्य आदि दिखाई जाती हैं।''

और टीचर जी! लेज़र शो में क्या है?'' रश्मि ने उत्सुकतावश पूछा।

'बच्चो-इसमें लेज़र को मनोरंजन के लिए प्रयोग किया जाता है। इसमें म्यूज़िक और लेज़र के तालमेल के साथ दर्शकों का मनोरंजन होता है। यहाँ 3डी में एक खास तरह का चश्मा पहनकर शो देखा जाता है। जिससे कि दूर स्क्रीन पर दिखाए जा रहे चित्र आपके बिल्कुल सामने लगते हैं। यह बहुत ही मनोरंजक होता है।''

'मैम-कुलविंदर ने जो फ्लाइट की बात कही थी वह क्या है?' कुलजीत ने पूछा।

'बच्चो! उसे फ्लाईट सिमुलेटर कहते हैं दरअसल इसमें एक हवाई जहाज़ जैसे आकार का मॉडल है जिसमें दर्शक बैठते हैं। वहाँ वीडियो के माध्यम से स्क्रीन पर हवाई उड़ान दिखाई जाती है। इधर हवाई जहाज़ जैसे मॉडल के नीचे लिफ्ट जैसी कोई मशीन होती है जो उसे दाएँ-बाएँ, ऊपर नीचे करती है। इस तरह दर्शकों को ऐसे लगता है जैसे वायुयान ही उड़ान भर रहे हों। यह बहुत ही मनोरंजक व रोमांचक लगता है,'' अध्यापिका ने बताया।

''अच्छा अध्यापिका जी – डिफैंस गैलरी में क्या है- वहाँ तो टैंक तोपें होंगी?'' रश्मि जो बहुत देर से चुप थी, बोली।

''हाँ रश्मि! डिफैंस गैलरी में हमारी रक्षा करने वाले और दुश्मन को नाकों चने चबाने वाले टैंक हैं। जैसे विजयन्त टैंक जिसने 1965 की लड़ाई में अमेरिकी टैंकों को करारा जवाब दिया था और एयर क्राफ्ट मिग-23 जिसने कारगिल की लड़ाई में दुश्मन के छक्के छुड़ाए थे।' अध्यापिका ने भावुक होते कहा।

अध्यापिका ने देखा – बच्चे साइंस सिटी में पूरी तरह खो चुके थे। बच्चो ! साइंस सिटी में और भी बहुत कुछ है।

'मैम- हमें साइंस सिटी दिखा दो न'

'हाँ-हाँ! मैम- हमें ज़रूर दिखाओ।'

बहुत-से बच्चे अनुरोध कर रहे थे।

''हाँ, बच्चो! ठीक है! मैं प्राचार्य जी से इसके बारे में बात करूँगी। अगर उन्होंने अनुमति दी तो हम साइंस सिटी कपूरथला देखने जायेंगे।''

यह सुनकर बच्चे गद्गद् हो गए।

(तभी अगले पीरियड की घंटी बजी)। (अध्यापिका स्टाफ रूम की ओर चल पड़ी)।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਛੁੱਟੀਆਂ	=	छुट्टियाँ	ਚਹੇਤੀ	=	चहेती
ਅਧਿਆਪਕਾ	=	अध्यापिका	ਸਾਇੰਸ ਸਿਟੀ	=	साइंस सिटी
ਡਰਾਵਣਾ	=	डरावना	ਪ੍ਰਤੀਯੋਗਿਤਾ	=	प्रतियोगिता

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਜਮਾਤ	=	कक्षा	ਮੇਲ ਜੋਲ	=	तालमेल
ਫਿਲਮ	=	पिक्चर	ਐਨਕ	=	चश्मा
ਆਗਿਆ	=	अनुमति			

3. शब्दार्थ :-

अभिवादन = सम्मान करना

शिलान्यास = नींव पत्थर रखना

प्राचार्य = स्कूल का मुखिया

वरिष्ठ = पद या क्रम में बड़ा

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) साइंस सिटी का पूरा नाम क्या है? यह किसके नाम पर रखा गया है?

(ख) इसका उद्घाटन कब हुआ और किसने किया?

(ग) दिल के मॉडल में क्या दिखाया गया है?

(घ) डायनासोर पार्क में कितनी तरह के डायनासोर हैं?

(ङ) वोल्केनो आकृति की क्या विशेषता है?

(च) डोम थियेटर की क्या विशेषता है?

(छ) फ्लाइट सिमुलेटर में क्या दिखाया गया है?

(ज) विजयन्त टैंक और एयर क्राफ्ट मिग 23 कहाँ पर हैं?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच पंक्तियों में लिखें :-

(क) साइंस सिटी में आपको देखने में जो सबसे अच्छा लगा, उसके बारे में लिखें।

(ख) साइंस सिटी में ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है, स्पष्ट करें।

6. शब्दों से नये शब्द बनायें :-

फैला = फैलाव

भाव = ________

बाझ = ________

डर = ________

रोमांच = ________

मनोरंजन = ________

असल = ________

आनंद = ________

7. लिंग बदलें :-

छात्र	= छात्रा	अध्यापक	= अध्यापिका
शिष्य	= ________	नायक	= ________
सुत	= ________	सेवक	= ________
प्रिय	= ________	गायक	= ________
		लेखक	= ________

8. शुद्ध करके लिखें :-

छुटियाँ	= ________	अभीवादन	= ________
खेलकुद	= ________	अधियापिका	= ________
परणाली	= ________	परदर्शनी	= ________
थीयेटर	= ________	कारयालय	= ________
पराचारय	= ________	ब्रहमंड	= ________
द्रशक	= ________	अनुरोद	= ________
म्यूजिक	= ________	ज्ञानवरधक	= ________
दरासल	= ________	आपरेशन	= ________

9. उचित योजक शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरें :-

(क) ______उन्होंने अनुमति दी ______ हम साइंस सिटी देखने कपूरथला जायेंगे। (यद्यपि......तथापि, यदि......तो)

(ख) ऐसा लगता है______ सब कुछ आपके पास हो रहा है। (ताकि, मानो)

(ग) इनके मुँह में हाथ मत डालना ______ दुर्घटना हो सकती है। (नहीं तो, यानि)

(घ) यहाँ 3डी में एक खास तरह का चश्मा पहनकर शो देखा जाता है ______दूर स्क्रीन पर दिखाए जा रहे चित्र आपके सामने लगते हैं। (और, जिससे कि)

(ङ) हमने वहाँ बोटिंग की ______ डायनासोर देखे। (या, और)

(च) मैंने वहाँ देखा तो सब कुछ था ______ कुछ याद नहीं आ रहा। (चाहे, परन्तु)

10. इन शब्दों और मुहावरों के अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-

नाकों चने चबाना ______ ______________________________

खुशी में गद्‌गद्‌ होना ______ ______________________________

करारा जवाब देना ______ ______________________________

छक्के छुड़ाना ______ ______________________________

11. उचित विराम चिह्न लगायें :-

(क) बच्चो आप सब कैसे हो

(ख) क्या आपको इसका पूरा नाम पता है

(ग) हाँ सावधानी ज़रूर रखनी होगी

(घ) ओ शरारती वहाँ इस तरह की फिल्में नहीं होतीं

(ङ) दीपशिखा पढ़ाई के साथ साथ संगीत खेलकूद ज्ञान विज्ञान में सब से आगे रहती थी

12. निम्नलिखित पंजाबी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करें :-

(क) ਗਰਮੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸਕੂਲ ਦਾ ਅੱਜ ਪਹਿਲਾ ਦਿਨ ਸੀ।

(ख) ਇਹ ਅਸਲੀ ਡਾਇਨਾਸੌਰ ਨਹੀਂ ਹਨ।

(ग) ਹੈਲਥ ਗੈਲਰੀ ਵਿੱਚ 12 ਫੁੱਟ ਉੱਚਾ ਦਿਲ ਦਾ ਮਾਡਲ ਸੀ।

(घ) ਸਾਰੇ ਬੱਚੇ ਇੱਕਠੇ ਹੱਸ ਪਏ।

(ङ) ਅਧਿਆਪਕਾ ਸਟਾਫ ਰੂਮ ਵੱਲ ਚਲ ਪਏ।

रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) मौखिक अभिव्यक्ति – आप कभी शैक्षिक भ्रमण पर कहीं गये हों तो अपना अनुभव कक्षा में सुनायें।

(ख) लिखित अभिव्यक्ति – अपने मित्र/सहेली को पत्र द्वारा साइंस सिटी की विशेषतायें बताते हुए उसे देखने के लिए प्रोत्साहित करें।

(ग) रचनात्मक कार्य – साइंस सिटी के चित्र इकट्ठे करें और स्क्रैप बुक में लगायें।

पाठ–13

माँ

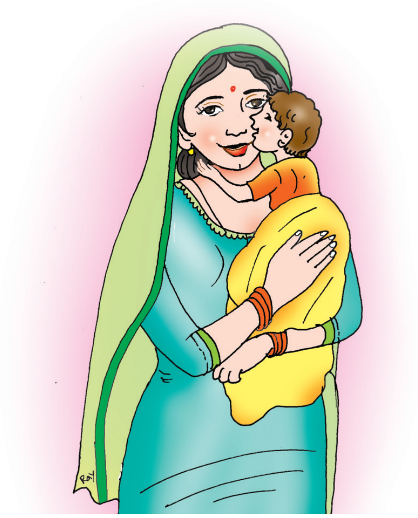

ईश्वर का वरदान है माँ
सब रिश्तों में महान है माँ ।
जब जीवन का पाठ पढ़ाती माँ
तब किताब बन जाती माँ ।
कथनी में उसकी शिष्टाचार है
करनी में उसकी संस्कार है ।
जब हर क्षण का अहसास कराती माँ
तब समय बन जाती माँ।
जगने में उसके प्रभात है
सोने में उसके रात है ।
जब हर विपदा को हराती माँ
तब हिमालय बन जाती माँ।
साहस उसका हथियार है
ऊर्जा उसमें अपार है ।
जब ममता का प्रकाश फैलाती माँ
तब बाती बन जाती माँ।
दुख लेना उसको स्वीकार है
सुख देना उसका सदाचार है ।
जब खुशी के आँसू बहाती माँ
तब उत्सव बन जाती माँ ।
दुआओं में उसकी चमत्कार है
प्रोत्साहन में उसके जय-जयकार है ।
जब खुद कम खाकर बच्चों को खिलाती माँ
तब गौरैया बन जाती माँ।

वात्सल्य प्रेम के उसमें भाव हैं
समर्पण उसका स्वभाव है ।

जब आगे बढ़ने का गीत सुनाती माँ
तब नदी बन जाती माँ।

मर्यादित रहना उसका व्यवहार है
सहनशीलता उसका उपहार है।

जब नि:स्वार्थ सेवा भाव जगाती माँ
तब धरती बन जाती माँ

केवल देने में उसका विस्तार है
चरणों में उसके स्वर्गद्वार है।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-**

ਈਸ਼ਵਰ	=	ईश्वर	ਊਰਜਾ	=	ऊर्जा
ਮਾਂ	=	माँ	ਚਮਤਕਾਰ	=	चमत्कार
ਹਥਿਆਰ	=	हथियार	ਨਦੀ	=	नदी

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਸਮਾਂ	=	समय	ਹੌਂਸਲਾ	=	साहस
ਸਵੇਰ	=	प्रभात	ਬੱਤੀ	=	बाती
ਮੁਸੀਬਤ	=	विपदा	ਸੁਭਾਅ	=	स्वभाव

3. **शब्दार्थ :-**

कथनी	=	कही हुई बात, कथन
शिष्टाचार	=	शिष्टता पूर्ण आचरण एवं व्यवहार
संस्कार	=	व्यवस्थित करना, सजाना
विपदा	=	संकट
बाती	=	दीपक
मर्यादित	=	प्रतिष्ठित

सहनशीलता = सहनशील (सहन करने वाला) होना
निःस्वार्थ = बिना किसी स्वार्थ के
उत्सव = मंगल कार्य

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) माँ किसका वरदान है ?
(ख) माँ समय के रूप में क्या करती है ?
(ग) हर विपदा को हराने पर माँ को क्या कहा गया है ?
(घ) माँ का हथियार क्या है ?
(ङ) माँ बाती के रूप में क्या करती है ?
(च) खुशी के आँसू बहाने पर माँ को क्या कहा गया है ?
(छ) माँ गौरैया कब बन जाती है ?
(ज) आगे बढ़ने का गीत सुनाने पर माँ को क्या पुकारा गया है ?
(झ) इस कविता में माँ का उपहार क्या बताया गया है ?
(ञ) माँ के चरणों में किसका द्वार है ?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) इस कविता में माँ की कथनी और करनी में किसके दर्शन होते हैं ?
(ख) दुख और सुख में माँ की क्या भूमिका है ?
(ग) माँ की दुआओं और प्रोत्साहन से क्या होता है ?
(घ) धरती के रूप में माँ क्या करती है ?

6. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

ईश्वर = ________, ________
प्रभात = ________, ________
रात = ________, ________
नदी = ________, ________
चरण = ________, ________
धरती = ________, ________
किताब = ________, ________

7. विपरीत शब्द लिखें :-

वरदान = ______
जीवन = ______
स्वीकार = ______

प्रेम = ______

विस्तार = ______

सदाचार = ______

जय = ______

8. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-**

जिसका पार न हो ______

किसी का उत्साह बढ़ाना ______

बिना स्वार्थ के ______

माँ का बच्चे के प्रति प्यार ______

अच्छा व्यवहार ______

9. **निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करके लिखें :**

शिश्टाचार	______	पड़ाती	______
कीताब	______	हीमालय	______
सविकार	______	चमतकार	______
आँसु	______	सुभाव	______
विवहार	______	वातसतय	______

10. **रचनात्मक अभिव्यक्ति :-**

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** – अपनी माँ पर कविता सुनायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति** – अपनी माता पर चार-पाँच वाक्य लिखें।

पाठ-14

सहयोग

'सहयोग' शब्द दो शब्दों के योग से बना है : सह और योग। सह का अर्थ है-साथ' योग का अर्थ-मेल' अर्थात किसी कार्य में एक दूसरे का साथ देना, हाथ बँटाना। प्राय : ऐसा सुना जाता है कि कोई भी मानव अपने में पूरा नहीं और यह है भी सच्चाई। किसी में बुद्धि की कमी है, किसी में शारीरिक बल की कमी है, कोई धन के अभाव से दु:खी है। यही नहीं स्वभाव में भी विविधता दिखाई पड़ती है, जिसके कारण अनेक कमियाँ मानव में आ जाती हैं। ऐसी स्थिति में आपसी सहयोग द्वारा हम अपनी कमियों को पूरा कर सकते हैं और उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं।

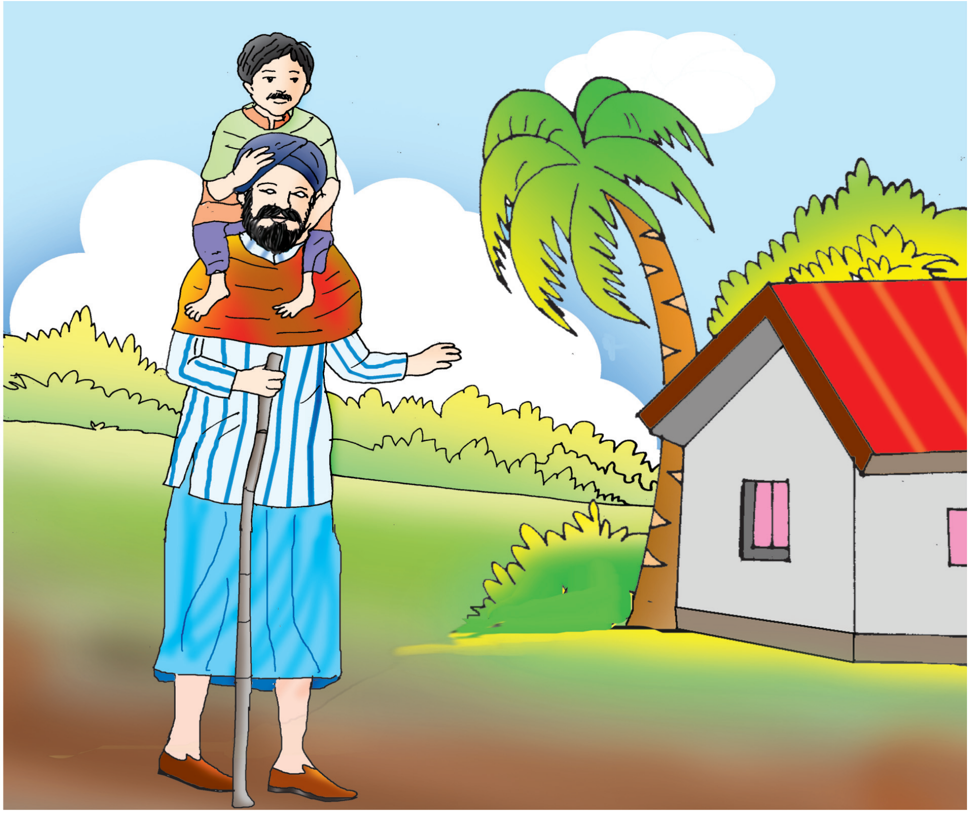

अंधे और लंगड़े की प्रसिद्ध कहानी सहयोग का अच्छा उदाहरण है। नदी के किनारे एक गाँव था। उसमें एक अंधा और एक लंगड़ा रहते थे। वर्षा के दिनों में वहाँ बाढ़ का पानी आ गया। लोग गाँव को छोड़ कर भाग गए। अंधा और लंगड़ा क्या करते? दोनों निराश थे। लंगड़ा चल नहीं सकता था और अंधा देख नहीं सकता था। लंगड़े को एक उपाय सूझा, उसने अंधे को कहा, "तुम मुझे अपने कंधे पर बैठाओ, मैं तुझे रास्ता बताता जाऊँगा, तुम बढ़ते जाना। इस तरह एक दूसरे के सहयोग से हम दोनों सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाएँगे।" अंधा सहमत हो गया। दोनों आपसी सहयोग द्वारा गाँव से बाहर आ गए। उनकी जान बच गई।

कई बार अचानक मुसीबत आ घेरती है। अकेला आदमी उसका सामना नहीं कर सकता। सहयोग वह पारस है जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है। उसका मूल्य बढ़ जाता है। एक तिनका कितना कमजोर होता है। पर अनेक तिनके परस्पर सहयोग द्वारा मजबूत रस्से का रूप धारण करते हैं, जिससे मदमस्त हाथी भी बाँधा जा सकता है।

सहयोग से संबंधित एक कथा हितोपदेश में आती है। कपोतराज चित्रग्रीव कबूतरों के साथ आकाश में उड़ा जा रहा था। जंगल में बिखरे हुए चावल-कणों को देखकर कबूतर नीचे उतर आए और शिकारी के जाल में फँस गए। उन पर मुसीबत आ पड़ी। मौत दिखाई देने लगी। कपोतराज चित्रग्रीव ने उन्हें धैर्य बंधवाया। उन्हें साहस से इकट्ठा मिलकर उड़ने को कहा। उन्होंने परस्पर सहयोग किया। वे जाल को उड़ा कर ले गए और दूर निकल गए। शिकारी हक्का-बक्का रह गया।

सहयोग एक प्राकृतिक नियम है, यह कोई बाहरी या बनावटी तत्त्व नहीं है। प्रत्येक पदार्थ और प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्येक काम आंतरिक सहयोग पर अवलम्बित है। किसी भी मशीन को लें उसके पुर्ज़ों और मशीन में अंगांगी भाव का संबंध है। यदि उसका एक पुर्ज़ा भी खराब हो जाए तो वह मशीन चल नहीं सकती। हम अपने शरीर को ही लें। आँख, कान, हाथ, पाँव आदि इसके विभिन्न अंग हैं, शरीर अँगी है वे परस्पर सहयोग द्वारा शरीर का धारण और पोषण करते हैं। किसी अंग पर चोट आती है तो मन एकदम वहाँ पहुँच जाता है। पहले क्षण आँख वहाँ देखती है और दूसरे क्षण हाथ सहायता के लिए वहाँ पहुँच जाता है। इसी तरह समाज और व्यक्ति का संबंध है। समाज शरीर है तो व्यक्ति उसका अंग है। जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अंग परस्पर सहयोग करते हैं, उसी तरह समाज के विकास के लिए व्यक्तियों का आपसी सहयोग अनिवार्य है। शरीर की पूर्णता अंगों के सहयोग से मिलती है, समाज की पूर्णता व्यक्तियों के सहयोग से मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति जो जहाँ पर भी है, अपना काम ईमानदारी और लगन से करता रहे तो समाज फलता-फूलता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के अभाव में वह निरा पशु ही रहता है। समाज जड़ पदार्थों का समूह नहीं है, वह नर-नारियों के परस्पर सहयोग और प्रेम से बनता है। उसी से मानवता विकसित हुई है। आज भी यदि हम किसी शिशु को समाज से पृथक कर दें, उसे किसी जंगल में छोड़ दें तो आप जानते हैं कि क्या होगा? वह निरा पशु ही रहेगा। वह हमारी तरह बोल नहीं सकेगा। उसका मानसिक और बौद्धिक विकास नहीं होगा। भाषा और साहित्य, संस्कृति और सभ्यता, ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में मानव ने जो प्रगति की है वह किसी एक व्यक्ति की देन नहीं, बल्कि अनेक नर-नारियों के सतत सहयोग का परिणाम है।

आप भी समाज के अंग हैं। इसका पहला स्तर परिवार है। परिवार अंगी है, माता-पिता, भाई-बहन उसके अंग हैं। सब अपना-अपना काम अच्छी तरह करते हैं। माता घर का काम-काज करती है, बच्चे का लालन-पालन करती है। पिता ईमानदारी और मेहनत से रोजी कमाता है। बच्चे माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं और अपना काम मन लगाकर करते हैं। घर में जब भी आवश्यकता पड़े, सब सदस्यों को एक दूसरे के काम में भी हाथ बँटाना चाहिए। एक परिवार के पाँच सदस्य हैं। माता-पिता का एक पुत्र है जिसका नाम मनजीत सिंह है। उसकी दो बहनें हैं।

हरजीत कौर बड़ी है, स्वर्ण कौर छोटी है। माता अकेली घर का काम करके थक जाती है तो हरजीत सफाई और कपड़े धोकर माता को सहयोग देती है। वह अपनी छोटी बहन स्वर्ण कौर की पढ़ाई का भी ध्यान रखती है। बाज़ार से कोई वस्तु मँगवानी पड़े तो मनजीत सिंह तुरंत लेने जाता है। मेहमान का सब स्वागत करते हैं। वे सब प्रेम-भाव से रहते हैं और इकट्ठे मिलकर खाना खाते हैं। उनमें से कोई बीमार पड़ जाए तो सब परेशान हो जाते हैं। उसकी सेवा-शुश्रूषा करते हैं। इस प्रकार सहयोग करने से यह घर स्वर्ग तुल्य बन गया है। तीन बच्चे माता-पिता की आँखों के तारे हैं और घर की इज्जत को चार चाँद लगाते हैं।

पड़ोसियों से भी सहयोग करना चाहिए। एक अच्छा पड़ोसी बनना चाहिए। पड़ोसियों की कुशलता पूछनी चाहिए। बड़ों का सम्मान करना चाहिए। पड़ोसियों से मेलजोल बढ़ाना चाहिए। साफ मन से उनकी खुशी में सम्मिलित होना चाहिए। सेवा-भाव से उनकी बीमारी आदि में सहायता करनी चाहिए। उनकी सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखें। अपने घर की सफाई करके कूड़ा-कर्कट पड़ोसी के द्वार के आगे न फेंकें, ऐसी बातों से वे परेशान हो सकते हैं और विवाद हो सकता है। ऐसा कोई भी काम न करें, जिससे पड़ोसियों को कष्ट हो। इस तरह यदि आप सहयोग देंगे तो वह भी पीछे नहीं रहेंगे। इसी आपसी सहयोग से गली और मुहल्ले का वातावरण सुखद हो जाएगा।

स्कूल एक संस्था है। विद्यार्थी और अध्यापक ही नहीं, चपरासी से लेकर-मुख्याध्यापक तक सब लोग उस संस्था के अंग हैं। अपने-अपने स्थान पर सब लोग अपना-अपना काम करते हैं। सबके आपसी सहयोग से संस्था दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करती है। वहाँ पर आपको सहयोग के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। समय पर स्कूल में आकर, अपनी कक्षाओं में शांति-पूर्वक बैठ कर, संस्था के नियमों का पालन करके उसके अनुशासन में सहयोग दे सकते हैं। रद्दी कागज़ों को इधर-उधर न फेंककर उन्हें कोनों में रखे हुए टिन में डालकर संस्था की सफाई में सहयोग दे सकते हैं।

अपने सहपाठियों से भी सहयोग बढ़ाना चाहिए। मोहन और सोहन सहपाठी थे। एक बार मोहन घर से पेंसिल लाना भूल गया। सोहन के पास दो पेंसिलें थीं। मोहन ने सोहन से पेंसिल माँगी। सोहन ने अंगूठा दिखा दिया। मोहन का मुँह उतर गया। अब मोहन भी ऐसे मौके की प्रतीक्षा करने लगा। जिससे वह सोहन को नीचा दिखा सके। ऐसी बातों से आपस में घृणा और द्वेष बढ़ता है। इसके विपरीत यदि सोहन मोहन को पेंसिल देकर सहयोग देता तो वह उसे अपना मित्र बना लेता।

आपके सभी सहपाठी समान हैं, उनमें कोई बड़ा-छोटा नहीं। उनमें कोई भेद-भाव नहीं करना चाहिए। सबसे प्यार करना चाहिए। एक स्कूल की आठवीं कक्षा में मदन नामक एक छात्र था। वह निर्धन था। वह पुस्तकें-कापियाँ नहीं खरीद सकता था। उसके वस्त्र फटे पुराने थे। उसका सहपाठी महेन्द्र जमींदार का पुत्र था। उनके पास धन की कमी न थी। उसने अपने सहपाठी मदन को पुस्तकें, कॉपियाँ और कपड़े देकर सहायता की। धन का सदुपयोग यही है कि उससे दूसरों की सहायता की जाए। यदि आपका एक निर्धन सहपाठी निर्धनता के कारण निराश रहता है, उसका चेहरा खिलता नहीं, तो आपका अपने धन को अपने तक सीमित रखना एक सामाजिक अपराध है। धन की तरह ज्ञान को भी अपने तक सीमित नहीं रखना चाहिए। यदि आपकी गति गणित में अच्छी

है और आपके एक साथी को सवाल नहीं आता, आपका कर्त्तव्य बनता है कि आप उसे सवाल समझाएं। इसी तरह यदि कोई बालक हृष्ट-पुष्ट है तो उसका कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने कमज़ोर सहपाठी की रक्षा करे। उसे तंग करने की किसी की हिम्मत न हो। इस तरह आपसी सहयोग से आपकी कक्षा का वातावरण मैत्रीपूर्ण हो जायेगा।

खेल के मैदान में तो सहयोग का क्षेत्र विस्तृत हो जाता हैं। प्रत्येक टीम में सहयोग की भावना अनिवार्य है। मिल-जुल कर टीम भावना से खेल में भाग लेने से विजय प्राप्त होती है। विजय के लिए होड़ ज़रूरी है। विजय के लिए डट कर सहयोग भाव से प्रयत्न भी करना चाहिए। पर मूल बात विजय नहीं खेल की भावना है। खेलने के लिए खेलना चाहिए। प्रतिद्वंद्वी टीम भी जीत सकती है। ऐसे मौके पर आगे आकर प्रसन्न मन से उन्हें बधाई देनी चाहिए। खेल के मैदान में सब खिलाड़ी हैं। ज़रूरत पड़ने पर अपने प्रतिद्वंद्वी की भी सहायता करनी चाहिए। यदि कोई प्रतिद्वंद्वी गिर जाता है तो उसे उठाइए, यदि उसके चोट लग जाए तो उसको प्राथमिक सहायता दें। खेल के मैदान में सच्चे सहयोगी की भावना देखने को मिलती है। यही भावना जीवन के क्षेत्र में विकसित हो जाए तो घृणा और द्वेष का अंत हो जाए, मानव-मानव में प्रेम-प्यार का प्रसार हो जाए।

खेलों के अतिरिक्त बालकों में सहयोग की भावना को विकसित करने के लिए अनेक संस्थाएँ स्थापित की गई हैं। जैसे रैड क्रॉस, स्काउट, गर्लगाइड, एन.एस.एस., एन.सी.सी. आदि। बालकों को उनका सदस्य बनना चाहिए। उनके कार्यक्रमों में नियमानुसार भाग लेना चाहिए। इससे एक पंथ दो काज वाली बात होगी, उनका व्यक्तित्व विकसित होगा और समाज व देश भी उन्नति करेगा।

परिवार, पड़ोस, स्कूल के अतिरिक्त आप जिस गाँव, कस्बे अथवा नगर में रहते हैं, आप इसके भी अंग हैं। वहाँ हर प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। वहाँ सड़कें हैं, यातायात की व्यवस्था है, रोगियों के लिए अस्पताल है, स्कूल, डाकखाना आदि है। एक नागरिक के नाते आपका यह कर्त्तव्य बनता है कि आप उनका दुरुपयोग न करें। सड़कों पर इधर-उधर कूड़ा-कर्कट न फेंकें, एक तरफ रखे हुए कूड़े दानों में डालें। यदि सड़कों पर प्रकाश देने वाला लैम्प खराब हो, सफाई कर्मचारी गलियों में सफाई न करते हों, तो आप पंचायत अथवा नगरपालिका के अधिकारी का उस ओर ध्यान आकृष्ट करें। तोड़-फोड़ की कार्यवाही में भाग नहीं लेना चाहिए। सार्वजनिक संपत्ति सबकी अपनी है, वह सबके हित के लिए है। उसकी हानि आप सबकी हानि है, राष्ट्र की हानि है। आप सबको सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करनी चाहिए।

इस तरह सहयोग से मानव अच्छा नागरिक बनता है। वह अपना ही हित नहीं सोचता, वह दूसरों का हित चिंतन करता है और दूसरों के हित के लिए बराबर प्रयत्न करता है। वह नगर और देश की नहीं, विशाल हित की बात सोचता है। मानव जीवन-मात्र का हित ही उसका लक्ष्य हो जाता है। यही मानवता है। यही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है। इसका आधार सहयोग की भावना है जो घर, पड़ोस, स्कूल, खेल के मैदान और गाँव से क्रमशः विकसित होती हुई मानव-प्रेम का रूप धारण करती है।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਸਹਿਯੋਗ	=	सहयोग	ਸ਼ਾਮਿਲ	=	शामिल
ਉਦੇਸ਼	=	उद्देश्य	ਮਿੱਤਰਤਾ ਪੂਰਨ	=	मैत्रीपूर्ण
ਮਦਮਸਤ	=	मदमस्त	ਸਰਬਜਨਕ	=	सार्वजनिक

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਵਿਭਿੰਨਤਾ	=	विविधता	ਜ਼ਰੂਰੀ	=	अनिवार्य
ਛੂਹ	=	स्पर्श	ਵੱਖਰਾ	=	पृथक
ਕਬੂਤਰਾਂ ਦਾ ਰਾਜਾ	=	कपोतराज	ਉੱਨਤੀ	=	प्रगति
ਆਪਸੀ	=	परस्पर	ਸੇਵਾ-ਭਾਵ	=	सेवा-शुश्रूषा
ਕੁਦਰਤੀ	=	प्राकृतिक	ਬਰਾਬਰ	=	तुल्य
ਅੰਦਰੂਨੀ	=	आंतरिक	ਕਲੇਸ਼	=	द्वेष
ਨਿਰਭਰ	=	अवलम्बित	ਹਿਸਾਬ	=	गणित
ਆਪਸੀ ਤਾਲਮੇਲ	=	अंगांगी	ਵਿਸ਼ਾਲ	=	विस्तृत
ਵਿਰੋਧੀ	=	प्रतिद्वंद्वी	ਮੁੱਢਲੀ	=	प्राथमिक

3. शब्दार्थ :-

पारस = वह पत्थर जिसके छूने से लोहा सोना बन जाता है।
मदमस्त = मद में चूर
कपोतराज = कबूतरों का राजा
हितोपदेश = विष्णु शर्मा कृत नीति शास्त्र संबंधी एक प्रसिद्ध ग्रंथ
अवलम्बित = निर्भर
सतत = निरंतर, लगातार
प्रतिद्वंद्वी = विरोधी
सार्वजनिक =सब जन का

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) सहयोग का क्या अर्थ है?
(ख) लंगड़े ने अंधे को क्या उपाय बताया?
(ग) कपोतराज चित्रग्रीव ने कबूतरों को क्या सलाह दी?
(घ) हमें पड़ोसियों से कैसा व्यवहार करना चाहिए?
(ङ) हमें अपने सहपाठियों से कैसा व्यवहार करना चाहिये?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) सहयोग के दो उदाहरण लिखें।

(ख) सहयोग से दोनों पक्षों को लाभ होता है। क्या आप इससे सहमत हैं ? अपने विचार लिखें।

6. नीचे दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार उत्तर लिखें :-

(क) सहयोग से लोहा भी सोना बन जाता है, उसका मूल्य सौ गुणा बढ़ जाता है। (यहाँ सर्वनाम कौन-सा है ?)

(ख) शरीर को पूर्णता अंगों के सहयोग से मिलती है। (भाववाचक संज्ञा छाँटें)

(ग) पड़ोसियों से सहयोग करना चाहिए। (संज्ञा शब्द छाँटकर उनका भेद लिखें)

(घ) सहयोग से कक्षा का वातावरण मैत्रीपूर्ण हो जायेगा। (जातिवाचक संज्ञा छाँटें)

(ङ) नदी के किनारे एक गाँव था। (संबंधबोधक अव्यय छाँटें)

(च) बच्चे माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं और अपना काम मन लगाकर करते हैं। (योजक शब्द छाँटें)

7. इन शब्दों/मुहावरों के अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-

अंगूठा दिखाना ______ ______________________________

आँखों का तारा ______ ______________________________

चार चाँद लगाना ______ ______________________________

मुँह उतर जाना ______ ______________________________

एक पंथ दो काज ______ ______________________________

जान बचना ______ ______________________________

जाल में फँसना ______ ______________________________

मौत दिखाई देना ______ ______________________________

धैर्य बंधवाना ______ ______________________________

हक्का-बक्का रह जाना ______ ______________________________

दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करना ______ ______________________________

8. इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के वचन बदल कर वाक्य पुनः लिखें :-

(क) <u>यह तिनका है।</u>

ये तिनके हैं।

(ख) मुझे <u>रस्सा</u> दो।

मुझे............दो।

(ग) मेरी <u>आँख</u> में दर्द है।

मेरी..........में दर्द है।

(घ) मेरे पास कहानी की पुस्तक है।
मेरे पास .... की..............हैं।

(ङ) यह सूती कपड़ा है।
ये सूती............हैं।

(च) अपनी पेंसिल मुझे दो।
अपनी............मुझे दो।

9. भाववाचक संज्ञा बनाएँ :

पूर्ण =	____________	पशु =	____________
मित्र =	____________	आवश्यक =	____________
मानव =	____________	मनुष्य =	____________
सभ्य =	____________	प्रसन्न =	____________

10. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :-

मानव =	______,______	शरीर =	______,______
आँख =	______,______	हाथ =	______,______
मित्र =	______,______	पुत्र =	____________

11. विपरीतार्थक शब्द लिखें :-

सहयोग =	____________	भाव =	____________
सभ्य =	____________	सुविधा =	____________

12. विशेषण बनायें :

नगर =	नागरिक	ईमानदारी =	ईमानदार
समाज =	________	परेशानी=	________
प्रकृति =	________	प्रसिद्धि=	________
अंतर =	________	शांति =	________
शरीर =	________	सच्चाई =	________
प्रथम =	________	कमज़ोरी=	________

रचनात्मक अभिव्यक्ति

(ख) **मौखिक अभिव्यक्ति**- अपनी कल्पना से सहयोग पर आधारित एक कहानी कक्षा में सुनायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति** - (i) 'सहयोग जीवन का मूल मंत्र है।' इस विषय पर अपने विचार लिखें।

(ii) पाठ में दिये गये उदाहरणों के अतिरिक्त आप और कहाँ-कहाँ सहयोग दे सकते हैं। सोचिये और लिखिये।

पाठ–15

वाघा बार्डर

वाघा बार्डर को 'एशिया की बर्लिन दीवार' के नाम से जाना जाता है। भारत और पाकिस्तान को परस्पर जोड़ने वाला यह बार्डर जी.टी. रोड पर स्थित है जिसके एक ओर लाहौर तथा दूसरी ओर अमृतसर नामक प्रसिद्ध नगर है।

यह बार्डर अमृतसर से करीब 33 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अमृतसर से वाघा जाते समय खालसा कालेज, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के अतिरिक्त छेहरटा, खासा व अटारी नामक गाँव आते हैं। अटारी में मुख्य सड़क पर शहीद शाम सिंह अटारी की आदमकद प्रतिमा सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है। नेशनल हाइवे अथवा शेरशाह सूरी मार्ग जिसे प्राय: जी.टी रोड भी कहा जाता है, के रास्ते वाघा बार्डर पहुँचने के लिए अमृतसर से करीब एक घंटा लगता है। निजी वाहन अथवा सैलानी गाड़ियों या फिर आटो रिक्शा द्वारा भी यहाँ पहुँचते हैं।

आज़ादी से पहले अंग्रेज़ी साम्राज्य के समय वाघा गाँव ब्रिटिश पंजाब की लाहौर डिवीज़न में स्थित था। 1947 में विभाजन के बाद यह गाँव भारत और पाकिस्तान में बँट गया। दोनों देशों के बीच एकमात्र यातायात मार्ग होने के कारण 1947 के बाद कुली इस बार्डर के रास्ते सामान लाने और ले जाने का कार्य करते रहे हैं।

भारत व पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस पर क्रमश: 14 व 15 अगस्त को दोनों देशों के अमन पसंद नागरिकों ने वाघा बार्डर पर मोमबत्तियाँ जलाकर पारस्परिक स्नेह व सौहार्द का इज़हार किया था। यह भारत व पाकिस्तान के समझौते के रूप में जनता के बदले हुए मन की प्रतिक्रिया स्वरूप था। पहले भी मोमबत्तियाँ जलाकर आधी रात को शांतिमय जश्न होते रहे हैं। वैसे भी दोनों देशों की आम जनता द्वारा भारत-पाक के बीच व्यापार को उत्साहित करने के लिए वाघा बार्डर पर यातायात मार्ग को खोलने संबंधी आवाज़ उठाई गई है। मार्च 2005 को बार्डर विषय पर विचार विमर्श करने के लिए भारतीय बार्डर सिक्योरिटी फोर्स (BSF) का एक दल वाघा बार्डर के पाकिस्तानी

रेंजर्ज़ से मिला। परिणामस्वरूप मई 2005 में पाकिस्तान द्वारा पाँच विशेष खाद्य-पदार्थों को वाघा बार्डर द्वारा कर मुक्त ले जाने की आज्ञा मिल गई। प्रथम अक्तूबर 2006 को पहली बार कुछ ट्रक वाघा बार्डर के पार सामान लेकर गए। भारत-पाक संबंधों में उतार-चढ़ाव के बावजूद इस व्यापार में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

आज सैलानियों के लिए वाघा बार्डर एक विशेष आकर्षण का केंद्र है। हर रोज़ सायं झंडा उतारने (रिट्रीट)की रस्म होती है जिसे देखने के लिए भारत व पाकिस्तान के सैलानी अपने-अपने देश की गैलरी में इकट्ठे होते हैं। ऐतिहासिक जी.टी. रोड पर बार्डर को सफेद रंग द्वारा रेखांकित किया गया है। इस जगह सड़क को लोहे के दो गेटों द्वारा बंद किया गया है जिसके चारों ओर कंटीली तारे हैं। दोनों गेटों के ऊपर दोनों देशों के राष्ट्रीय ध्वज लहराते हैं। अपने-अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए बी.एस.एफ. के जवान व पाकिस्तानी रेंजर्ज़ चौबीस घंटे पूरी मुश्तैदी से पहरा देते हैं।

बार्डर की गैलरी तक पहुँचने के लिए करीब डेढ़-दो किलोमीटर लंबी पंक्ति में स्त्रियों व पुरुषों को अलग-अलग जाँच के लिए जाना पड़ता है। जहाँ बी.एस.एफ. के जवान पूरी तरह तलाशी लेते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने साथ किसी प्रकार के खाने-पीने की सामग्री नहीं ले जा सकता। औरतों को अपने बड़े पर्स ले जाने की आज्ञा नहीं है। फोन व कैमरे ले जाने की आज्ञा है परंतु फोन जैमर लगे होने के कारण ये कार्य नहीं करते। अंदर गैलरी में आदमी व औरतें अलग-अलग बैठते हैं। झंडा उतारने की रस्म से पहले स्पीकर ऊँची आवाज़ में देश भक्ति के गीतों का प्रसारण करते हैं।

उस समय सारा वातावरण भावमय हो जाता है। लोग जाति, धर्म, भाषा, भेद-भाव को भूलकर पूरी तरह राष्ट्रीयता के रंग में रंग जाते हैं। इनमें अधिकांश स्त्रियाँ होती हैं जो अपने भावों को नृत्य द्वारा भी प्रकट करती हैं।

इस सारी कार्यवाही में बी.एस.एफ. के जवानों की मुख्य भूमिका होती है। बी.एस.एफ. के जवानों द्वारा भारतीय दर्शकों को, जिनमें विदेशी भी शामिल होते हैं, तीन तरह के नारे लगाने की इजाज़त होती है (i) हिंदुस्तान ज़िंदाबाद (ii) भारत माता की जय (iii) वन्देमातरम्। पाकिस्तान क्षेत्र में वहाँ के पाकिस्तानी रेंजर्ज़ द्वारा पाकिस्तान ज़िंदाबाद के नारे लगाये जाते हैं।

भारतीय दर्शकों में विशेषत: लड़कियों और स्त्रियों को हाथ में तिरंगा झंडा लेकर मुख्य सड़क पर गेट के भीतर कुछ कदम दौड़ने की इजाज़त होती है। देश भक्ति के गीतों पर हाथ में तिरंगा लेकर दौड़ने वालों के हृदय में राष्ट्र पर मरने मिटने की भावना देखी जा सकती है।

दर्शक गैलरी पर भारतीय सैलानियों की भीड़ देखते ही बनती है। मुख्य द्वार के दोनों ओर बनी गैलरियों में 4000 लोगों की बैठने की क्षमता होती है। लेकिन वहाँ लगभग 8000 लोग एकत्र हो जाते हैं। रिट्रीट की रस्म प्राय: सायं 5.30 बजे आरम्भ होती है और करीब आधे पौने घंटे बाद पूरी हो जाती है। इससे पूर्व बी.एस.एफ. के जवान पूरे उत्साह व जोश के साथ परेड में हिस्सा लेते हैं और पूरे वेग से अपने बूट धरती पर मारते हैं। उस समय दर्शक तालियाँ बजाकर सैनिकों की हौसला-अफजाई करते हैं।

झण्डा उतारते समय लोहे के दोनों गेट खोल दिए जाते हैं दोनों देशों के सैनिक एक दूसरे से हाथ मिलाते हैं व धीरे-धीरे दोनों देशों के जवान संगीत की मधुर ध्वनि में अपने-अपने देश के झण्डे उतारकर संभाल लेते हैं और गेटों को पुन: बंद कर दिया जाता है।

पंजाब के मानचित्र पर स्थित अमृतसर जहाँ धार्मिक स्थान हरिमंदिर साहिब व ऐतिहासिक स्थान जलियाँवाला बाग़ हो- वहाँ वाघा बार्डर को झंडे उतारने की रस्म के तौर पर ही जाना जाता है। भारत सरकार द्वारा वाघा बार्डर को एक सैलानी केंद्र के रूप में प्रोत्साहित किया जा रहा है। वहीं एक ग्लोबल पर्यटन कम्पलैक्स के निर्माण की योजना भी विचाराधीन है।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਬਾਰਡਰ	=	बार्डर	ਵਾਘਾ	=	वाघा
ਪਾਕਿਸਤਾਨ	=	पाकिस्तान	ਲਾਹੌਰ	=	लाहौर
ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ	=	अमृतसर	ਡਿਵੀਜ਼ਨ	=	डिवीज़न

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਮੂਰਤੀ	=	प्रतिमा	ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਿਵਸ	=	स्वतंत्रता दिवस
ਸਾਮਰਾਜ	=	साम्राज्य	ਆਵਾਜਾਈ	=	यातायात

3. **शब्दार्थ :-**

बार्डर = सीमा, हद

आदमक़द = मनुष्य के आकार का

प्रतिमा = मूर्ति
सैलानी = पर्यटक
एकमात्र = अकेला
सौहार्द = दोस्ती, सद्भाव, हृदय की सरलता
ऐतिहासिक = इतिहास से संबंधित
मुस्तैदी = तेज़ी
क्षमता = सामर्थ्य
हौसला अफजाई = हौसला/धैर्य बढ़ाना

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) वाघा बार्डर को किस नाम से जाना जाता है ?
(ख) यह बार्डर किन दो देशों के मध्य स्थित है ?
(ग) इस बार्डर के दोनों ओर कौन-कौन से प्रसिद्ध नगर हैं ?
(घ) इसका विशेष आकर्षण क्या है ?
(ङ) बी.एस.एफ. के जवान कौन-कौन से नारे लगाते हैं ?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) वाघा गाँव के बारे में आपने क्या जाना ?
(ख) बार्डर पर झंडा उतारने की रस्म कैसे सम्पन्न होती है ?

6. विशेषण बनायें :-

रेखांकन = रेखांकित
आकर्षण = ________
उत्साह = ________
प्रोत्साहन = ________
इतिहास = ऐतिहासिक
व्यापार = ________
परस्पर = ________
भारत = भारतीय
राष्ट्र = ________

7. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

झंडा = ________, ________
सैलानी = ________, ________
आज्ञा = ________, ________

अमन = ________, ________

8. **रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखें :-**

(क) सड़क को लोहे के गेट द्वारा बंद किया गया है।

____

(ख) चारों ओर कँटीली तार लगी हुई है।

____

(ग) वह अपने भावों को नृत्य द्वारा प्रकट करता है।

____

(घ) अपने-अपने देश के झंडे उतार लेते हैं।

____

9. **निम्नलिखित शब्दों में 'र' आधा है यै पूरा ?**

बार्डर	= आधा	राष्ट्रीयता	= ________
ब्रिंटिश	= ________	रेंजर्ज़	= ________
रिट्रीट	= ________	ट्रक	= ________
दर्शक	= ________	कार्य	= ________
मार्ग	= ________	प्रकट	= ________

10. **शुद्ध करके लिखिए:**

विशवविदयालय	= ________	इजाज़त	= ________
रस्ते	= ________	धवन	= ________
जशन	= ________	वृदधी	= ________
जिंदाबाद	= ________	भुमिका	= ________

11. **रचनात्मक अभिव्यक्ति**

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** – देशभक्ति के गीत कक्षा में सुनायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति**– जब भी आपको अवसर मिले आप वाघा बार्डर अवश्य देखकर आयें। अपने अनुभव डायरी में लिखें।

बी.एस.एफ. का पूरा नाम बार्डर सिक्योरटी फोर्स है। हिंदी में इसे 'सीमा सुरक्षा बल' कहते हैं।

पाठ-16

गिरधर की कुंडलियाँ

(1)

बिना विचारे जो करे ; सो पाछे पछताय।
काम बिगारै आपनो ; जग में होत हँसाय।।
जग में होत हँसाय ; चित्त में चैन न पावे।
खान पान सम्मान ; राग रंग मनहि न भावे।।
कह गिरधर कविराय ; दु:ख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहि ; कियो जो बिना बिचारे।।

(2)

साईं सब संसार में ; मतलब का व्यवहार।
जब लगि पैसा गाँठ में ; तब लगि ताको यार।।
तब लगि ताको यार ; यार सँग ही सँग डोले।
पैसा रहा न पास ; यार मुख से नहिं बोले।।
कह गिरधर कविराय ; जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरज़ी प्रीति ; यार बिरला कोई साईं।।

(3)

दौलत पाय न कीजिए ; सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ; ठाउँ न रहत निदान।।
ठाउँ न रहत निदान ; जियत जग में यश लीजै।
मीठे वचन सुनाय ; विनय सब ही की कीजै।।
कह गिरधर कविराय ; अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निशि दिन चारि ; राहत सब ही के दौलत।।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਜਗ	=	जग	ਪੈਸਾ	=	पैसा
ਦੁੱਖ	=	दु:ख	ਭਾਈ	=	भाई
ਸਾਈਂ	=	साईं	ਸੁਪਨਾ	=	सपना

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਗੰਢ	=	गाँठ	ਰਾਤ	=	निशि/निशा
ਯਾਰ	=	दोस्त	ਧੰਨ	=	दौलत
ਘਮੰਡ	=	अभिमान			

3. **शब्दार्थ :-**

बिगारे	=	बिगाड़ना
यहि	=	यही; ऐसा ही
हँसाय	=	हँसी मज़ाक
बेगरज़ी	=	नि:स्वार्थ; बिना मतलब की
चैन	=	शांति
ठाउँ	=	स्थान
राग-रंग	=	प्रेमादि करने का आनंद, ऐशो-आराम का आनंद
निदान	=	अंत में
मनहि	=	मन को
पाहुन	=	अतिथि ; मेहमान
भावे	=	अच्छा लगना
निशि	=	रात
टरत	=	दूर करना; टालना
ताको	=	उसका

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) बिना विचार के काम करने से क्या होता है ?

(ख) कवि के अनुसार प्राय: दोस्त कैसे होते हैं ?

(ग) चार दिन का मेहमान कौन है ?

(घ) प्राय: मनुष्य अभिमान क्यों करता है ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) दौलत पाकर मनुष्य को अभिमान क्यों नहीं करना चाहिए ?

(ख) बिना सोच-विचार के कोई काम करने से क्या दशा होती है ?

6. **उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरें :-**

(क) जब लगि पैसा गाँठ में; तब लगि ताको--------------।

(ख) पैसा रहा न पास-------------- मुख से नहिं बोले।

(ग) करत--------------प्रीति; यार बिरला कोई साई।

(घ) --------पाय न कीजिए; सपने में----------।

(ङ) --------वचन सुनाय;---------सब ही की कीजै।।

(बेगरज़ी; दौलत; यार; मीठे; अभिमान; विनय)

7. **इन लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करें :-**

बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ________ ____________________________

____

____

साईं सब संसार में मतलब का व्यवहार ________ ____________________________

____

चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात। ________ ____________________________

____

8. **निम्न पद्यांशों का भावार्थ स्पष्ट करें :-**

(क) खटकत है जिय मांहि; कियो जो बिना विचारे।

(ख) करत बेगरजी प्रीति; यार विरला कोई साईं।

(ग) चंचल जल दिन चारि को ठाउँ न रहत निदान।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति**- नीतिपरक कुंडलियों की रचना के कारण कवि गिरधर का हिंदी साहित्य में अपना स्थान है। उनके साहित्य का अध्ययन करें। नीतिपरक सूक्तिमय कुण्डलियों को स्मरण करें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति** - निम्नलिखित पर अपने विचार लिखिये :-

(i) योजनाबद्ध तरीके से काम करने के क्या लाभ होते हैं ?

(ii) मतलबी मित्र तथा सच्चे मित्र में क्या अंतर है ?

(iii) धन-दौलत को चंचल क्यों कहा जाता है ?

पाठ-17

मेरा दम घुटता है

(नेपथ्य-चारों ओर हरे-भरे पेड़। दूर-दूर तक कहीं बस्तियाँ या इंसान नहीं दिख रहे हैं। यहाँ हवा की घटक गैसों की सभा चल रही है। सभा में ऑक्सीजन है, नाइट्रोजन और हाइड्रोजन हैं, कार्बन-डाई-ऑक्साइड व ओज़ोन भी है। यह कोई फलों का बगीचा है। शहर से दूर)

नाइट्रोजन : हमारी इस महीने की बैठक में आप सभी का स्वागत है। इस बार हमारे कुछ सदस्य दुबले और कमज़ोर दिख रहे हैं। ऐसे में सभा की अध्यक्षता के लिए मैं ऑक्सीजन को आमंत्रित करती हूँ। यह बताने की मुझे ज़रूरत नहीं है कि यह पृथ्वी पर जीवन का मूल आधार है।

(तालियों की आवाज़.....)

ऑक्सीजन : (हाँफते हुए) इस सम्मान के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। लेकिन मेरी झूठी तारीफ तो मत करो। कहने को तो मैं जीवनदायी हूँ। लेकिन आज मेरे जीवन को ही खतरा लग रहा है।

हाइड्रोजन : नहीं, ऑक्सीजन नहीं। ऐसा मत कहो। आपके बग़ैर मेरी तो हालत ही खराब हो जायेगी। आज हमारे और आपके साथ रहने से ही तो पृथ्वी पर पानी उपलब्ध है। दुनिया में आधे से अधिक भाग में पानी है। आपके बग़ैर पानी नहीं बन सकता। पानी नहीं तो जीवन कैसे संभव होगा?

ऑक्सीजन : धत् पगली। अरी हाइड्रो, मैं तो वायु में अपने अस्तित्व की बात कर रही थी। उस पर इन दिनों इतने काले-पीले दैत्यों ने हमला कर रखा है कि ...

नाइट्रोजन : अरे क्या बताऊँ? अपनी सभा के लिए कोई भी सुरक्षित जगह नहीं मिल रही थी। जहाँ जाती, वहीं वो काली-पीली ज़हरीली गैसें हमला कर देती थीं। लगने लगा है कि कहीं हमारा बहुमत ही ख़त्म न हो जाये। ये बाहरी गैसें इतनी तेज़ी से बढ़ रही हैं कि .. उन्होंने तो हमारी सेहत ही बिगाड़ डाली है।

हाइड्रोजन : देखो ना, हमारी ऑक्सीजन दीदी, दिनों-दिन सूखती जा रही है।

ऑक्सीजन : अरे, मैं तो बताना ही भूल गई। अभी बैठक में आते-आते भी मैं बाल-बाल बची। वो पास का कस्बा है न, उसके ऊपर से निकल रही थी कि कई काले-कलूटे राक्षस मेरी ओर आ लपके। कोई स्कूटर, बस से निकल रहा था, कोई ट्रैक्टर से ....उनसे जैसे-तैसे बची। तो मिल गई खूब ऊँची-सी चिमनी। किसी कारखाने की थी। उसके धुएँ में तो ऐसी तीखी गंध थी, कि बस.... उफ। दम ही घुट गया। बड़ी मुश्किल से जान बचा पाई।

नाइट्रोजन : मैं ही जानती हूँ कि इस बार सभा की जगह तलाशने में मुझे कितना सिर मारना पड़ा। कहीं ऐसी जगह नहीं दिख रही थी, जहाँ हमारा शुद्ध साम्राज्य हो। जिधर देखो उधर धुआँ बदबू, घुटन।

ऑक्सीजन : नाइट्रो, वो पिछली सभा की जगह का क्या हुआ? वह तो बड़ी अच्छी थी। कोई गाँव था न.....

नाइट्रोजन: क्या बताऊँ दीदी, उस गाँव में सड़क बन रही है। ढेर सारा तारकोल गरम कर रहे थे, खूब काला धुआँ था और तो और वहाँ खाना बनाने के लिए न जाने कैसी लकड़ी जला रहे हैं। चारों ओर धुएँ के कारण अंधेरा हो जाता है। वहाँ की तो रंगत ही बदल गई है। वहाँ हमारा कैसे गुज़ारा हो पाता?

हाइड्रोजन : अरी बहन! वह सिगरेट-बीड़ियों का धुआँ। हाय-हाय हमारा तो नुकसान करता ही है धरती पर रहने वाले लोगों को भी बीमार कर रहा है। पर आदमी है कि खुद का नुकसान खुद कर रहा है। मनुष्य को दमा, साँस से संबंधित रोग, फेफड़ों के रोग, त्वचा संबंधी बीमारियाँ सभी तो इसी वायु प्रदूषण से ही हो रही हैं.... वो क्या कहते है कि अपने ही पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारना... (आगे की आवाज़ हँसी में दब जाती है)

नेपथ्य ध्वनि : (और तभी वहाँ आ जाती है मिस कार्बन-डाइ-ऑक्साइड। मोटी काली, हड़बड़ी में भागती हुई।)

ऑक्सीजन : अरे कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, लगता है कि दौड़ती हुई आ रही हो, फिर भी देर कर दी, घड़ी देखो, पूरा आधा घंटा लेट हो। और-और, ये क्या रूप बना रखा है?

नाइट्रोजन : अध्यक्ष महोदय, इनकी दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ रही देह को नहीं देख रही हैं। इसको काला बनाने के स्टॉल गली-गली में लग गए हैं। तभी तो देखो, माशाअल्लाह क्या स्वास्थ्य बना है। अब ऐसे में कितना भी दौड़े लेट तो आना ही था। बेचारी कारखाने और गाड़ियों के धुएँ के कारण इसका रंग-रूप ही बदल रहा है....हाय....

(फिर ठहाकों की आवाज़)

कार्बन-डाइ-ऑक्साइड : (रुआँसी आवाज़ में) उड़ा लो। उड़ा लो मज़ाक। वायुमंडल में मेरी भागीदारी आधा प्रतिशत से भी कम थी और ये मानव जाति है कि मेरा मोटापा बढ़ाने पर तुली है। मेरे साथ-साथ मेरी बहन कार्बन-मोनो-ऑक्साइड की मात्रा अधिक बढ़ रही है। मुझसे ज्यादा तो वह मानव जाति को नुकसान कर रही है। और तुम तो अपने हो, तुम क्यों मुझे खलनायिका बना रहे हो। मैं तो पेड़-पौधों का जीवन हूँ।

ओज़ोन : (बिल्कुल बारीक धीमी आवाज़) और मुझ ओज़ोन के बारे में कभी सोचा? मेरी तो इतनी कम मात्रा थी कि लोग मुझे जानते तक नहीं थे। लेकिन ये धरती वाले मेरे विनाश पर तुले हैं। वे नहीं जान रहे कि मेरे विनाश के साथ ही धरती भी नहीं बचेगी।

नाइट्रोजन : अरी, इतनी सी तो तू है, तू क्या कर लेगी। मानव मुझे छेड़ने में संकोच नहीं कर रहा है जबकि वायुमंडल में मेरी भागीदारी तीन-चौथाई से अधिक है। तुम तो इत्ती-सी हो, चींटी के बराबर।

ओज़ोन : हाँ। हाँ। तुम लोग तो हर छोटे को कमज़ोर समझते हो। लेकिन मैं बता दूँ यदि मैं खत्म हो गई तो....तो.... धरती तो क्या तुम सब भी नहीं बचोगी।

हाइड्रोजन : माना कि तुम ऑक्सीजन दीदी की सबसे छोटी बेटी हो, लेकिन इसका क्या मतलब कुछ भी बोलती रहोगी, अब चुप हो जाओ वरना....।

ओज़ोन : वरना क्या? मुझसे लड़ोगे? विश्वास नहीं हो तो कभी सूरज से पूछ लेना। सूरज के प्रकाश में खतरनाक अल्ट्रा वायलेट किरणों से लड़ने की क्षमता सबसे अधिक मुझमें ही है वरना ये किरणें धरती के लोगों को कई बीमारियों का शिकार बना देंगी।

ऑक्सीजन : हाँ, ओज़ोन सही कह रही है। धरती से 10 से 50 किलोमीटर ऊँचाई पर वायुमंडल में ओज़ोन की पतली परत है। इन दिनों मानव जाति रेफ्रिजरेटरों और एयर कंडीशनरों का अंधाधुंध प्रयोग कर रही है। इसमें प्रशीतक के रूप में काम आने वाली एक रासायनिक गैस के कारण ओज़ोन की सुरक्षा परत टूटती-फूटती जा रही है।

हाइड्रोजन : अभी मेरी सहेली का एक पत्र स्वीडन से आया है?

ऑक्सीजन : क्या लिखा है बहन चिट्ठी में?

हाइड्रोजन : वह तो बड़ी दुखी है। उनके यहाँ पानी बरसने पर तेज़ाब बरस रहा है। उनके इलाके की हवा तो शुद्ध है लेकिन इंग्लैंड के कारखानों ने खूब ऊँची-ऊँची चिमनियाँ लगा ली हैं। जिससे निकला हुआ धुआँ तैरता हुआ स्वीडन पहुँच जाता है। कारखानों के धुएँ में नाइट्रोजन ऑक्साइड और सल्फर-डाइ-ऑक्साइड होती है जो पानी के साथ मिलकर अम्ल बन जाती है।

नाइट्रोजन : ऐसी बारिश तो हमारे यहाँ भी होने की संभावना है न?

कार्बन-डाइ-ऑक्साइड : अरे कहाँ देश-विदेश की बात कर रहे हो? मुझ पर विचार करो वरना मेरी मात्रा सीमा पार कर जायेगी। इसी कारण तो धरती का तापमान भी बढ़ रहा है।

ऑक्सीजन : बहन कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, तुम्हारा मोटापा घटाने और मेरी सेहत सुधारने का केवल एक ही उपाय है कि लोग अधिक पेड़ लगाएं।

नाइट्रोजन : हाँ। बिल्कुल सही बात कही बहन, पेड़ कार्बन-डाइ-ऑक्साइड की बढ़ती मात्रा को प्रकाश संश्लेषण वाली भोजन बनाने की क्रिया से सोख लेते हैं और ऑक्सीजन मुक्त करते हैं। इसलिए..। (सूत्रधार: तभी एक किसान बगीचे के पेड़ों पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करने लगता है। दवा छिड़कने के पंप की आवाज़। कुछ चिड़ियों के उड़ने की ध्वनि।)

ऑक्सीजन : अरे, अरे भागो-भागो (घबराई हुई आवाज़) लगता है कि आदमी पेड़ों पर दवाई छिड़क रहा है। हाय! हाय! मेरा तो दम घुट रहा है।

हाइड्रोजन : दवाई के रसायन भी हमारे वायुमंडल में घुलते आ रहे हैं। भागो भागो। पता नहीं, हमारे वायुमंडल की अगली बैठक के लिए कहीं शुद्ध स्थान मिलेगा भी कि नहीं..... भागो.......(भगदड़, दवा, पंप, हाँफने, चीखने की आवाज़ें)

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਆਕਸੀਜਨ	=	ऑक्सीजन	ਕਾਰਬਨ-ਡਾਈ-ਆਕਸਾਈਡ	=	कार्बन-डाइ-ऑक्साइड
ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ	=	नाइट्रोजन	ਰੇਫ਼ਰੀਜਰੇਟਰ	=	रेफ्रिजरेटर
ਹਾਈਡ੍ਰੋਜਨ	=	हाइड्रोजन	ਪੇੜ-ਪੌਧੇ	=	पेड़-पौधे
ਓਜ਼ੋਨ	=	ओज़ोन	ਵਾਯੂਮੰਡਲ	=	वायुमंडल

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਪਰਦੇ ਦੇ ਪਿੱਛੇ	=	नेपथ्य	ਰਾਜ	=	साम्राज्य
ਹੋਂਦ	=	अस्तित्व	ਲੁੱਕ	=	तारकोल
ਰਾਖਸ਼	=	दैत्य	ਸਿਹਤ	=	स्वास्थ्य

3. शब्दार्थ

नेपथ्य	=	पर्दे के पीछे
घटक	=	तत्व
जीवनदायी	=	जीवन देने वाली
अस्तित्व	=	होंद, होने का भाव
दैत्य	=	राक्षस
माशाअल्लाह	=	जो अल्लाह चाहे
खलनायिका	=	नाटक या उपन्यास के मुख्य नायक का प्रतिद्वंद्वी जो लक्ष्य प्राप्ति में रुकावटें उपस्थित करती है।
क्षमता	=	सामर्थ्य

4. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) हवा की घटक गैसें कौन-कौन सी हैं ?

(ख) पृथ्वी पर जीवन का मूल आधार क्या है ?

(ग) पानी की घटक कौन-कौन सी गैसें हैं ?

(घ) इस एकांकी में काले-कलूटे राक्षस किसे कहा गया है ?

(ङ) वायु प्रदूषण से कौन-कौन से रोग हो रहे हैं ?

(च) कार्बन-डाइ-ऑक्साइड का रूप क्यों बदल रहा है ?

(छ) वह कौन-सी गैस है जो कार्बन-डाइ-ऑक्साइड से अधिक मानव जाति का नुकसान कर रही है ?

(ज) ओज़ोन की सुरक्षा परत किस गैस के कारण टूटती-फूटती जा रही है ?

(झ) धरती का तापमान किस गैस के कारण बढ़ रहा है ?

(ञ) कार्बन-डाइ-ऑक्साइड गैस ने अपनी सेहत सुधारने का क्या उपाय बताया ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) ऑक्सीजन गैस को जीवन का मूल आधार क्यों कहा जाता है ?

(ख) ज़हरीली गैसों के स्रोत कौन-कौन से हैं ?

(ग) वायुमंडल का तापमान बढ़ाने में ओज़ोन की क्या भूमिका है ?

(घ) अम्लीय वर्षा किस कारण होती है ?

(ङ) पेड़ किस प्रकार वायुमंडल को शुद्ध करते हैं ?

(च) लेखक ने इस बैठक के माध्यम से क्या संदेश दिया है ?

6. **इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करें :-**

नेपथ्य ______ ________________________________

घटक ______ ________________________________

जीवनदायी ______ ________________________________

अस्तित्व ______ ________________________________

क्षमता ______ ________________________________

7. **इन मुहावरों के अर्थ दिये गये हैं। अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-**

दिनों-दिन सूखना = कमज़ोर होते जाना (यहाँ वायुमंडल में आक्सीजन की मात्रा कम होना)

____

बाल-बाल बचना = कठिनता से बचाव होना = ____________________

जान बचाना = जीवित रखना = ____________________

सिर मारना = सोच-विचार करना = ____________________

अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना = अपनी ही गलती से अपनी हानि करना

= ____________________

8. (i) लिंग बदलें :-

सदस्य = ________

नायिका = ________

खलनायक = ________

(ii) इन गैसों के लिंग बतायें :-

ऑक्सीजन = ________

कार्बन-डाइ-ऑक्साइड = ________

हाइड्रोजन = ________

नाइट्रोजन = ________

ओज़ोन = ________

9. 'इत' और 'इक' शब्दांश लगाकर विशेषण बनायें :-

इंसान + इत = इंसानियत	रसायन + इक = रासायनिक
सुरक्षा + इत = ________	समाज + इक = ________
संबंध + इत = ________	भूगोल + इक = ________
आमंत्रण + इत = ________	परिवार + इक = ________

10. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

सूरज = ________, ________

हवा = ________, ________

किरण = ________, ________

रात = ________,________

पेड़ = ________,________

दिन = ________,________

11. विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

अंधेरा = ________

मुक्त = ________

बहुमत = ________

दुर्बल = ________

कमज़ोर = ________

12. इन शब्दों के भिन्न अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

मूल = मुख्य = इस सभा का मूल उद्देश्य क्या है ?

= जड़ = पेड़ की मूल पर ही उसका जीवन टिका है।

भाग = हिस्सा = ____

बँटवारा = ____

घड़ी = पानी का छोटा घड़ा = ____

समय बतलाने वाला छोटा यंत्र = ____

बैठक=बैठने का कमरा = ____

चौपाल, अधिवेशन (जैसे संसद की बैठक)________________________________

13. इन गैसों के चिह्न समझें :-

ऑक्सीजन O_2

नाइट्रोजन N_2

कार्बन-डाइ-ऑक्साइड CO_2

हाइड्रोजन H_2

कार्बन-मोनो-ऑक्साइड Co

ओज़ोन O_3

14. इस पाठ में आए 'र' वर्ण के प्रयोग वाले शब्द ढूँढकर लिखें :

र	:	________	__________
र्	:	________	__________
/	:	________	__________
^	:	________	__________

15. निम्नलिखित पंजाबी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करें :-

(क) ਇਹ ਧਰਤੀ ਤੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਮੂਲ ਅਧਾਰ ਹੈ।

(ख) ਉਸ ਪਿੰਡ ਵਿੱਚ ਸੜਕ ਬਣ ਰਹੀ ਹੈ।

(ग) ਅੱਗੇ ਦੀ ਅਵਾਜ ਹਾਸੇ ਵਿੱਚ ਦੱਬ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

(घ) ਅੱਜ ਮੇਰੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਖ਼ਤਰਾ ਲਗ ਰਿਹਾ ਹੈ।

(ङ) ਪਾਣੀ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਜੀਵਨ ਕਿਵੇਂ ਸੰਭਵ ਹੋਵੇਗਾ।

रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

मौखिक अभिव्यक्ति- (क) इस संवादात्मक पाठ का वातावरण दिवस आदि विशेष अवसर पर अभिनय करें।

(ख) 'पर्यावरण प्रदूषण' पर अपने विचार कक्षा में सुनायें।

(ग) अपने विज्ञान के अध्यापक से पूछो कि रात को पेड़ों के नीचे क्यों नहीं सोना चाहिए?

लिखित अभिव्यक्ति- (क) यह एकांकी आपके द्वारा पढ़े गये अन्य एकाँकियों से किस प्रकार भिन्न है? क्या आपको इसका शीर्षक 'मेरा दम घुटता है' पसंद आया? अपने विचार लिखें।

(ख) विज्ञान की प्रयोगशाला में पाठ में आई गैसों को तैयार करो और इनके गुण-अवगुण कापी में नोट करो।

(ग) 'पर्यावरण बचाओ' विषय पर नारे लिखें।

पाठ–18

अंतरिक्ष–परी : कल्पना चावला

प्रत्येक मनुष्य सपने देखता है। सपने ही किसी लक्ष्य की नींव होते हैं। किंतु यह भी सच है कि सपने केवल सोचने से ही सच नहीं हो जाते। उनको पूरा करने के लिए अनथक परिश्रम, दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास व एकाग्रता की अत्यन्त आवश्यकता होती है। अत: जो अपने सपनों को साकार करने के लिए जी–तोड़ मेहनत करता है, उसको सफलता निश्चित रूप से मिलती ही है। वह कितना सौभाग्यशाली होता है जो अपने सपनों को साकार होते देखता है।

बच्चो! ऐसे ही बचपन में उड़ते हुए विमानों को देखकर आसमान की सैर करने का सपना कल्पना चावला ने देखा और बड़े होने पर उस सपने को साकार कर दिखाया। कल्पना चावला का भी मानना था कि सपनों से सफलता की ओर जाने की राह मौजूद होती है। व्यक्ति में उसे खोजने की दृष्टि, उस पर चलने का साहस और उसका अनुसरण करने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए। कल्पना चावला का जन्म 1 जुलाई 1961 में हरियाणा राज्य के करनाल शहर में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। उसकी माँ का नाम श्रीमती संज्योति व पिता का नाम श्री बनारसी लाल चावला था। वह अपने परिवार में चार भाई बहनों में सबसे छोटी थी। सभी उसे घर में प्यार से मोंटू नाम से बुलाते थे। कल्पना की प्रारंभिक शिक्षा घर के नज़दीक स्थित टैगोर बाल निकेतन स्कूल में हुई। स्कूल में वह सभी अध्यापकों की चहेती थी। वह शुरू से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति की थी। आसमान में विमानों को उड़ते देखकर वह बरबस ही उनकी ओर आकर्षित हो जाती थी। वह सदा यही चाहती थी कि उसके सपनों को भी पंख लग जायें और एक दिन वह भी दूर गगन की सैर करे। उसे विमानों के प्रति इस कद्र लगाव था कि स्कूल की क्राफ्ट की कक्षा में भी वह विमान बनाया करती थी।

जब कल्पना आठवीं कक्षा में थी तो उसने इंजीनियर बनने की इच्छा अपने माता-पिता को ज़ाहिर की। उसके माता-पिता भी उसकी आकांक्षा व भावनाओं को बाखूबी समझते थे इसलिए उन्होंने उसके सपने को पूरा करने में उसकी भरपूर मदद की। सन् 1978 में कल्पना ने प्री-इंजीनियरिंग की परीक्षा पास कर ली। उसने अपनी लगन, निष्ठा व कड़ी मेहनत से पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज चंडीगढ़ से सन् 1982 में ऐरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। यह उसका पसंदीदा विषय था। वह कभी भी इस विषय में बोरयित महसूस नहीं करती थी। पढ़ाई के साथ-साथ वह कॉलेज के उत्सवों, सभाओं आदि में भी सक्रिय रूप से भाग लेती थी। स्नातक डिग्री पूरी होने के बाद वह आगे अमेरिका जाकर इंजीनियरिंग में ही स्नातकोत्तर की डिग्री लेना चाहती थी। कहा भी गया है ''जहाँ चाह वहाँ राह''। अत: कल्पना की प्रतिभा, निष्ठा, परिश्रम, जिज्ञासा तथा आत्मविश्वास को देखते हुए उसके परिवार ने उसे अमेरिका में पढ़ाई करने की स्वीकृति दे दी।

अमेरिका में रहकर पढ़ाई करने के लिए तो वह बेहद उत्सुक थी। अंतत: वह स्नातकोत्तर की डिग्री लेने के लिए अमेरिका पहुँच ही गयी। वहाँ उसे टैक्सॉस विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया। वहाँ उसकी भेंट एक अमेरिकी जिसका नाम जीन पियरे हैरिसन था, से हुई। धीरे-धीरे वह उसका सबसे अच्छा मित्र बन गया। इसी विश्वविद्यालय परिसर में एक फ्लाइंग क्लब भी था। हैरिसन 'फ्लाइंग क्लब' का छात्र था। कल्पना भी 'फ्लाइंग क्लब' में जाने लगी। अब मन ही मन उसे लगने लगा था कि हवाई जहाज़ उड़ाने का उसका सपना साकार हो जायेगा। सन 1983 में कल्पना और हैरिसन का विवाह हो गया। वह पढ़ाई भी साथ ही ज़ोरों से कर रही थी अत: सन् 1984 में टैक्सॉस विश्वविद्यालय से उसने ऐरोस्पेस इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। तदनन्तर सन् 1988 में उसने कोलोरेडो विश्वविद्यालय से ऐरोस्पेस इंजीनियरिंग में पीएच. डी. की डिग्री प्राप्त की। वह अपने प्रेरक व उत्साही पति के साथ उड़ान की बारीकियों को सीखती थी। कुछ ही समय के भीतर उसने जहाज़ उड़ाने का लाइसेंस भी ले लिया था। अब तो वह निरन्तर जहाज़ों की कलाबाज़ी का आनंद लेती व अपने मित्रों को भी हवाई सैर कराती। सन् 1993 में कल्पना ने अमेरिका में कैलीफोर्निया की एक कंपनी ओवरसेट मेथड्स इन्कॉर्पोरेशन में उपाध्यक्ष के पद पर भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों की रूपरेखा के लिए रिसर्च वैज्ञानिक का कार्य किया।

यह बात पूर्णत: सत्य है कि सच्ची लगन, जी-तोड़ मेहनत व सतत अभ्यास कभी निष्फल नहीं जाता। वह देर-सवेर ज़रूर फलीभूत होता है। एक दिन दिसम्बर 1994 में नासा (नेशनल एयरोनॉटिकल एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) के एक अधिकारी ने टेलीफ़ोन पर कल्पना को बताया कि उन्होंने उसे अंतरिक्ष यात्री के रूप में चुना है। उन्होंने उसे अंतरिक्ष यात्रियों के लिए आयोजित की जाने वाली कार्यशाला में भाग लेने का निमंत्रण भी दिया। यह सब सुनकर कल्पना की खुशी का ठिकाना न रहा। आज उसके कानों ने वह बात सुनी जिसका उसे वर्षों से इंतज़ार था। यह एक ऐसा अवसर था जिसके लिए दुनिया के बड़े-बड़े वैज्ञानिक तरसते हैं।

अंतरिक्ष यात्री के रूप में चुने जाने के बाद उसका आत्मविश्वास और भी बढ़ गया। वह जहाज़ों को उड़ाने में तो पहले ही कुशल थी किंतु अंतरिक्ष में उड़ने के अवसर को लेकर वह बहुत ही उत्साहित थी। 16 मार्च 1995 को कल्पना ने एक साल का प्रशिक्षण शुरू किया। प्रशिक्षण के बाद कल्पना की अंतरिक्ष यात्री के प्रतिनिधि के रूप में तकनीकी क्षेत्रों में नियुक्ति की गयी। यहाँ पर रोबोटिक उपकरणों का विकास और अंतरिक्ष यान को नियंत्रित करने वाले साफ्ट वेयर की शटल एवियोनिक्स प्रयोगशाला में परीक्षण करना इसके मुख्य काम थे।

अब कल्पना की ज़िंदगी में वह दिन भी आ गया जिसके वह सपने देखती थी। कल्पना ने अपने दल के साथ एस.टी.एस. (स्पेस ट्रांस्पोर्टेशन सिस्टम - अंतरिक्ष परिवहन प्रणाली) 87 अंतरिक्ष यान द्वारा 19 नवम्बर 1997 को भारतीय समयानुसार दोपहर 2.37 बजे अपनी पहली उड़ान भरी। यह मिशन अंतरिक्ष में 17 दिन 16 घंटे 32 मिनट रहा और फिर धरती पर लौट आया। इसमें अंतरिक्ष में भारहीनता से भौतिक क्रियाओं को प्रभावित करने वाले परीक्षणों पर ज़ोर दिया गया।

कल्पना की योग्यता, परिश्रम, अदम्य साहस को देखते हुए नासा ने एक बार फिर उसे अंतरिक्ष यात्रा के लिए चुना। कल्पना की दूसरी और अंतिम उड़ान 16 जनवरी 2003 को अंतरिक्ष यान 'कोलम्बिया' से शुरू हुई। कल्पना को संगीत से बेहद लगाव था। वह भरतनाट्यम भी जानती थी। अपनी इस अंतरिक्ष यात्रा पर वह अपने साथ हरीप्रसाद चौरसिया का बांसुरी वादन, रविशंकर के सितार, नुसरत फतह अली खाँ के सूफी कलाम आदि की एलबम सी.डी. ले गयी थी। इस मिशन में अंतरिक्ष में 80 परीक्षण एवं प्रयोग किये गये। 16 दिनों के अंतरिक्ष अभियान से लौट रहा यह अमेरिकी अंतरिक्ष यान 1 फरवरी 2003 को पृथ्वी से 63 किलोमीटर की ऊँचाई पर एक बड़े धमाके के साथ टूटकर बिखर गया। इस यान का मलबा अमेरिका के टेक्सॉस शहर में गिरा जहाँ कल्पना ने अपनी स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की थी। कल्पना समेत शेष अन्य छ: अंतरिक्ष यात्री अन्तरिक्ष में विलीन हो गये।

सारे विश्व के लिए यह एक दिल दहला देने वाली घटना थी। जहाँ सभी अंतरिक्ष यात्रियों के लौटने का इंतज़ार कर रहे थे वहीं एक दम से सभी दु:ख के सागर में डूब गये। अमेरिका के मानव अंतरिक्ष उड़ान के इतिहास में यह पहला अवसर था जब कोई अंतरिक्ष यान अपने मिशन को सफतापूर्वक सम्पन्न करने के बाद पृथ्वी पर लौटते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। कल्पना के परिवार के सदस्य उसके स्वागत के लिए तो पहले से ही अमेरिका पहुँच गये थे। वे उसकी वापसी की प्रतीक्षा में थे किंतु कमबख़्त वक़्त ने ऐसा होने न दिया। भारत की होनहार कल्पना सभी को उस दिन बिलखता छोड़कर कहीं कल्पनाओं में खो गयी किंतु आज भी वह सभी के दिलों पर राज करती है। युवाओं के लिए तो वह निस्संदेह प्रेरणा स्रोत रही है और रहेगी। पूरा विश्व उसे नमन करता है।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-

ਆਤਮਵਿਸ਼ਵਾਸ	=	आत्मविश्वास	ਵਿਦੇਸ਼	=	विदेश
ਸਫਲਤਾ	=	सफलता	ਅਮਰੀਕਾ	=	अमेरिका
ਸਕੂਲ	=	स्कूल	ਤਕਨੀਕੀ	=	तकनीकी
ਸ਼ੁਰੂ	=	शुरू	ਪ੍ਰਯੋਗਸ਼ਾਲਾ	=	प्रयोगशाला
ਵਿਸ਼ਾ	=	विषय	ਵਿਅਕਤੀ	=	व्यक्ति
ਮਿੱਤਰ	=	मित्र	ਅਧਿਕਾਰੀ	=	अधिकारी

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਜਮਾਤ	=	कक्षा	ਬਾਕੀ	=	शेष
ਵਿਆਹ	=	विवाह	ਉਡੀਕ	=	प्रतीक्षा
ਬੁਲਾਉਣਾ	=	निमंत्रण	ਸਿੱਖਲਾਈ	=	प्रशिक्षण
ਮੌਕਾ	=	अवसर	ਮਿਹਨਤ	=	परिश्रम

3. शब्दार्थ :-

स्नातक	=	विश्वविद्यालय की उपाधि
स्नातकोत्तर	=	स्नातक की डिग्री के ऊपर की उपाधि
प्रवृत्ति	=	मन का झुकाव
बरबस	=	ज़बरदस्ती
इंजीनियरिंग	=	इंजीनियर की पढ़ाई
अंतरिक्ष	=	आकाश
उपाध्यक्ष	=	संस्था, समिति में अध्यक्ष का सहायक
अदम्य	=	प्रबल, प्रचंड, जो दबाया न जा सके

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें:-

(क) सपने कैसे पूरे होते हैं ?

(ख) बचपन से ही कल्पना चावला का क्या सपना था ?

(ग) कल्पना चावला का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

(घ) कल्पना का विवाह कब और किससे हुआ ?

(ङ) कल्पना की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ पूरी हुई ?

5. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) कल्पना चावला का सपना कब और कैसे पूरा हुआ?

(ख) कल्पना की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा उसकी जीवन की अंतिम यात्रा बनी? स्पष्ट करें।

(ग) कल्पना चावला के जीवन से आप क्या प्रेरणा लेते हैं?

6. **निम्नलिखित साल कल्पना चावला के जीवन में क्यों महत्वपूर्ण थे?**

साल	महत्वपूर्ण क्यों?
1978	______________________________
1982	______________________________
1984	______________________________
1988	______________________________
1994	______________________________
1997	______________________________

7. **निम्नलिखित शब्दों के वाक्य इस तरह बनायें ताकि अर्थ स्पष्ट हो जायें :-**

शब्द	वाक्य
अनुसरण	______________________________
एकाग्रता	______________________________
आकर्षित	______________________________
आकांक्षा	______________________________
नियंत्रित	______________________________
नियुक्ति	______________________________
परीक्षण	______________________________
परिसर	______________________________

8. **इन मुहावरे/लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-**

जहाँ चाह वहाँ राह	_____	______________________________
दु:ख के सागर में डूब जाना	_____	______________________________
दिलों पर राज करना	_____	______________________________
खुशी का ठिकाना न रहना	_____	______________________________
दिल दहला देना	_____	______________________________

9. इन वाक्यों में क्रिया अकर्मक है अथवा सकर्मक :-

(क) स्कूल में वह सभी अध्यापकों की चहेती थी। ________

(ख) आसमान में विमानों को उड़ता देखकर वह उनकी ओर आकर्षित हो जाती थी। ________

(ग) वह स्नातकोत्तर की डिग्री लेने के लिए अमेरिका पहुँच गयी। ________

(घ) कल्पना ने 19 नवम्बर 1997 को अंतरिक्ष में अपनी पहली उड़ान भरी। ________

(ङ) प्रत्येक मनुष्य सपने देखता है। ________

(च) बड़े होने पर कल्पना ने अपने सपने को साकार कर दिखाया। ________

(छ) नासा ने उसे एक बार फिर अंतरिक्ष यात्रा के लिए चुना। ________

10. निम्नलिखित पंजाबी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करें :-

(क) ਇਹ ਉਸਦਾ ਮਨਪਸੰਦ ਵਿਸ਼ਾ ਸੀ।

(ख) ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਛੋਟੀ ਸੀ।

(ग) ਕਲਪਨਾ ਚਾਵਲਾ ਨੂੰ ਸੰਗੀਤ ਬੇਹਦ ਪਸੰਦ ਸੀ।

(घ) ਉਹ ਜਹਾਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਉਡਾਉਣ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਹੀ ਮਾਹਿਰ ਸੀ।

(ङ) ਅੱਜ ਵੀ ਉਹ ਸਾਰਿਆਂ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਤੇ ਰਾਜ ਕਰਦੀ ਹੈ।

11. रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** – 'जहाँ चाह वहाँ राह' विषय पर अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत करें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति**–

(i) आपका क्या सपना है ? लिखें

(ii) कल्पना चावला के बाद सुनीता विलियम्स ने भी अंतरिक्ष की यात्रा की है। उनके बारे में अध्यापक/अभिभावक से जानकारी लेकर पाँच वाक्य लिखें।

(iii) भारत में सबसे पहले कौन-सा वैज्ञानिक अंतरिक्ष पर गया ? पता करें और लिखें।

पाठ-19

होंगे कामयाब

होंगे कामयाब,
होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब, एक दिन
हो हो मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन ....

होगी शांति चारों ओर
होगी शांति चारों ओर
होगी शांति चारों ओर एक दिन ....
हो हो मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन

हम चलेंगे साथ-साथ
डाल हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन ......
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन

नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन
हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास,
पूरा है विश्वास,
नहीं डर किसी का आज के दिन

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਸ਼ਾਤੀ	=	शांति	ਵਿਸ਼ਵਾਸ	=	विश्वास
ਡਰ/ਭੈ	=	भय	ਅੱਜ	=	आज

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਸਫਲ	=	कामयाब	ਚੁਫੇਰੇ ਪਾਸੇ	=	चारों ओर
ਮਿਲ ਜੁਲ ਕੇ	=	साथ-साथ	ਸਹਿਯੋਗ ਕਰਦੇ ਹੋਏ	=	डाल हाथों में हाथ

3. **इन काव्य-पंक्तियों में खाली स्थानों में उपयुक्त शब्द भरें :-**

(क) हम होंगे कामयाब -------------- दिन
हो हो मन में है ----------------
पूरा है ------------------
-------------- कामयाब एक दिन

(ख) नहीं ------------------ किसी का आज
नहीं ------------------ किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन।

4. **कवि को तीन बातों का पूरा विश्वास है। कविता में से इन तीनों को चुन कर लिखें :-**

(क) किसी का डर नहीं होगा
(ख) ....
(ग) ....

5. **'होंगे कामयाब' कविता का भावार्थ लिखें।**

6. **नीचे लिखी पंक्तियों का सरलार्थ करें :-**

हम चलेंगे साथ-साथ
डाल हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

(क) **मौखिक अभिव्यक्ति** - कक्षा के विद्यार्थी छोटे-छोटे समूह में मिल कर इस कविता को गायें।

(ख) **लिखित अभिव्यक्ति**- जीवन में कामयाब होने के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है? चार-पाँच वाक्यों में लिखें।

पाठ-20

सरफ़रोशी की तमन्ना

पात्र परिचय

विद्यावती : भगत सिंह की माँ
अमरो : भगत सिंह की बहन
भगत : भगत सिंह
बटुक : बटुकेश्वर दत्त
आज़ाद : चंद्रशेखर आज़ाद
दुर्गा : भगवती चरण की पत्नी (स्वतंत्रता सेनानी)
बेबे : जेल में महिला कर्मचारी

दृश्य : एक
स्थान : लायलपुर (लाहौर)

विद्यावती : मेरे लाल को किसकी नज़र लग गई। तीन दिन हो गए स्कूल से नहीं लौटा!

अमरो : दिल छोटा न कर माँ.... वीरा जल्द आयेगा।

विद्यावती : तेरे मुँह में घी शक्कर..... पर जब से अंग्रेज़ों ने जलियाँवाले बाग़ में वहशियाना खेल खेला है, डर लगता है।

अमरो : सच माँ, अंग्रेज़ पागल हो गए हैं, पागल और पागल जानवर की उम्र अधिक नहीं होती।

विद्यावती : तभी तो डर लगता है, कहीं तेरे वीरे को कुछ ......

अमरो : शुभ-शुभ बोल माँ .... देखना, ईश्वर सब ठीक करेगा।
(दरवाज़े पर ठक-ठक की आवाज़ आती है, अमरो दरवाज़ा खोलती है)

अमरो : वीरे, ओ वीरे! कहाँ चला गया था?

भगत : (दौड़कर माँ से चिपकते हुए) अमृतसर...... (सिसकियाँ लेने लगता है)

विद्यावती : इतनी दूर ... अकेला! रब्ब का लाख-लाख शुक्र है।

भगत : माँ, मैं जलियाँवाले बाग़ की पावन धरती को प्रणाम करने गया था। जहाँ वहशी गोरों ने हज़ारों स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़ों को शहीद कर दिया। वहाँ की दीवारों, पेड़ों, कुँओं से शहीदों की कुर्बानी चीख-चीख कर कह रही है ...... ऐ फिरंगी! सामान बाँध ले। वरना, सम्भलने का मौका भी न मिलेगा। माँ? कुरुक्षेत्र की धरती पर दोनों ओर योद्धा थे पर गोरों ने तो निहत्थे भारतीयों पर गोलियाँ बरसायी हैं।

अमरो : वीरे, तू बड़ा हो गया है। आज तू तो बड़ी-बड़ी बातें करता है।

भगत : देख दीदी, देखो माँ, शहीदों के लहू से रंगी यह मिट्टी, इसकी सौगंध माँ, हम गोरों को यहाँ से भगाकर भारत माँ को आज़ाद करायेंगे।

विद्या : अहा! तेरे जैसे पुत्र को जन्म देकर मैं धन्य हुई। ईश्वर तेरी रक्षा करे।

भगत : माँ, चिंगारी भड़क उठी है। भैया सुखदेव के स्कूल में गोरा सिपाही सैल्यूट करने को बोला। सुखदेव ने उसकी बेंत पकड़ ली।

विद्या : नन्ही जान, और इतना साहस! धन्य! उसने देश का नाम उज्ज्वल कर दिया।

भगत : सच माँ सुखदेव बेंत खाता रहा, उफ तक न बोला। बेचारा गोरा खिसियानी बिल्ली-सा मुँह लेकर चला गया।

विद्या : सच, मेरे लाल तुम जैसे वीर सपूतों के जोश पर मैं वारी जाऊँ। अब माँ भारती अवश्य मुक्त होंगी। अब स्वराज्य का परचम लहरा कर ही रहेगा।

दृश्य : दो

स्थान : दिल्ली में क्रांतिकारियों का गुप्त स्थान (भगत सिंह का प्रवेश)

आज़ाद : आओ भगत, तुम्हारे आने से हम क्रांतिकारियों में नया जोश भर गया। बिस्मिल और असफ़ाक की शहीदी से मन विचलित हो रहा था।

भगत : काकोरी के जांबाज़ों की कुर्बानी व्यर्थ न जाएगी। गोरा नहीं जानता एक बिस्मिल नहीं हम सभी ने बचपन से बसंती रंग में अपने को रंग लिया है।

सुखदेव : बसंती के बवंडर ने अंग्रेज़ राज को उड़ा देना है।

आज़ाद : समय कम, काम अधिक है। आज से हमारे संघ का नाम हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक संघ होगा और योजनाओं को कार्य रूप देने की ज़िम्मेवारी भगत सिंह पर। कहो, क्या विचार है ?

सभी : इंकलाब ज़िंदाबाद।

भगत : अहो भाग्य! देखना, एक दिन हम दीवानों की टोली आज़ादी की दुल्हन को ब्याह लाएगी, हिंदुस्तान आज़ाद होगा।

सभी : भारत माता की जय ...... इंकलाब ज़िंदाबाद।

राजगुरु : सुना है साइमन भारत आ रहा है।

सुखदेव : (क्रोध से) जले पर नमक छिड़कने ...! क्या अभी तक अंग्रेज़ों के अत्याचार कम हैं ?

आज़ाद : धीरज रखो, साथियो! हम सब इसका विरोध करेंगे।
पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने नेतृत्व करना स्वीकार किया है। ध्यान रहे, अंग्रेज़ दल-बल के साथ हम पर वार करेगा। चलो, प्रदर्शन की तैयारी करें। इंकलाब ज़िंदाबाद, भारत माता की जय।

सभी : इंकलाब ज़िंदाबाद, भारत माता की जय।

(क्रान्तिकारियों के प्रदर्शन को अंग्रेज़ों ने कुचलने का प्रयास किया। लाला जी पर लाठियाँ बरसायीं जिससे उनकी मृत्यु हो गई। क्रांतिकारियों में शोक की लहर दौड़ गई)

दृश्य : तीन

स्थान : क्रांतिकारियों का दफ़्तर

राजगुरु : हमें पहले ही आशंका थी। अंग्रेज़ अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आयेंगे.... कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती।

भगत : मेरा जी चाहता है कि एक विस्फोट से अंग्रेज़ी हुकूमत के परखचे उड़ा दूँ। उनका माँस नोच-नोचकर चील कौव्वे खायें।

आज़ाद : धैर्य रखो भगत, समय आने पर विस्फोट भी होगा। पहले लाला जी के हत्यारे सांडर्स की ख़बर लेते हैं। जय गोपाल, तुम लाहौर में पुलिस-मुख्यालय पर गुपचुप निगरानी रखना। हमें इशारा करते रहना।

जय गोपाल : हाँ! यही ठीक रहेगा।

राजगुरु : सच कई दिन हो गए निशाना आजमाये। थोड़ा अभ्यास भी हो जाएगा।

भगत : हाँ-हाँ! मेरी उँगलियाँ भी पिस्तौल पर थिरकने को उमड़ रही हैं।

आज़ाद : चलो साथियो, माँ भगवती रक्षा करे।

(एक गुप्त स्थान पर लाहौर माल रोड पर सभी क्रांतिकारी इकट्ठे होते हैं। जय गोपाल के इशारे पर सांडर्स गोलियों से भूना जाता है। क्रांतिकारी भाग जाते हैं।)

X X X X

आज़ाद : भगत सिंह तुम विस्फोट की बात कर रहे थे।

भगत : हाँ भैया, अंग्रेज़ों के कान में सीसा भरा है, धमाके की ज़रूरत है।

दुर्गा : फिरंगियों को सबक सिखाने के लिए सभी देशवासी आतुर हैं। हमने लाला जी की मौत का बदला जिस तरह लिया है उससे अंग्रेज़ों की नींद हराम हो गई है।

आज़ाद : सड़क से अब विधान सभा की बारी है। भगत तुम और दत्त विधानसभा में बम लेकर जाओ। मैंने सारी व्यवस्था कर दी है।

राजगुरु : हैं ! विधानसभा में बम लेकर जायें। अंगेज़ बहुत शातिर है। साथी पकड़े जायेंगे।

आज़ाद : हमारा उद्देश्य किसी को मारना नहीं, केवल बहरी सरकार को अपना उद्देश्य बताना है।

बटुक : विस्फोट से अखबार चिल्लायेंगे, रेडियो चीखेंगे। आज़ादी की ज्वाला सारे देश में भड़क उठेगी।

भगत : भारत के शेर दहाड़ेंगे और अंग्रेज़ जान बचाकर भागेंगे।

सुखदेव : अहा! हम मस्तानों का टोला आज़ादी का डोला लायेंगे। आज़ादी का डोला!

दुर्गा : भगत विधान सभा में जाना मौत के मुँह में जाना है।

भगत : माँ हमने तो बचपन से बसंती चोले की पूजा की है आज वह दिन आया है। सूली के उस पार खड़ी माँ ने हमें बुलाया है।

दुर्गा : धन्य! भारत के वीरो, मैं अपने हाथों से तुम्हारा तिलक करूँगी। तुम्हें सजाऊँगी (माथा चूमती है और तिलक करती है। सभी प्रस्थान करते हैं)

इंकलाब ज़िंदाबाद! भारत माता की जय। साम्राज्यवाद का नाश हो। इन नारों के साथ विधान सभा दहल उठी। भगत सिंह, बटुकेश्वर पकड़े गए। अंग्रेज़ों ने अपना दमन चक्र तेज़ कर दिया। राजगुरु और सुखदेव के अतिरिक्त असंख्य युवक जेलों में बंद हो गए। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी की सज़ा सुनाई गई और बटुकेश्वर दत्त को काला पानी की सज़ा हो गई।

दृश्य : चार

स्थान : जेल का केंद्रीय कक्ष

सभी क्रांतिकारी : सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है....

जेलर : मौत का फरमान सुनकर भी गीत गाते हो।

भगत : मौत, किसकी मौत? भगवान शिव ने सृष्टि कल्याण के लिए विषपान कर लिया था। यह तो हमारे लिए प्याला है।

राजगुरु : हमारी शहीदी एक नक्षत्र की तरह होगी जो भारतवासियों को नई राह दिखायेगी।

जेलर : क्या तुम्हें ज़िंदगी अच्छी नहीं लगती?

भगत : ज़िंदगी, ज़िंदगी किसे अच्छी नहीं लगती! तुम क्या जानो? हम भारत माँ के भाल की बिंदी होकर शृंगार होंगे। बचपन की चिंगारी आज शोला बन गई है। शोला जिसमें अंग्रेज़ राज भस्म हो जाएगा। माँ भारती की बेड़ियाँ छितरा जायेंगी।

जेलर : अच्छा-अच्छा! तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा है?

भगत : मेरी माँ को तुमने नहीं मिलने दिया, हाँ इस बेबे के हाथ से बनी रोटियाँ खायेंगे हम।

जेलर : बेबे! बेबे तो माँ को कहते हैं। यह औरत तो कर्मचारी है।

भगत : कर्मचारी को हम अपनी माँ की तरह मानते हैं। हम इसी के हाथ की बनी रोटियाँ खायेंगे।

राजगुरु : और आज़ादी को ब्याहने जायेंगे।

सभी गाते हैं (मेरा रंग दे बसंती चोला... मेरा रंग दे बसंती चोला....)

भगत : सूली के उस पार खड़ी माँ हमें बुला रही है।

राजगुरु : देखो, देखो, माँ के मस्तक की आभा कैसी चमक रही है।

सुखदेव : चमकेगी क्यों नहीं? आज हम उसकी बरसों की मुराद पूरी करने जा रहे हैं। आज़ादी का डोला लाने जा रहे हैं।

सभी : माँ, हम आ रहे हैं.... हम आ रहे हैं... भारत माता की जय... भारत माता की जय.... इंकलाब ज़िंदाबाद...................इंकलाब ज़िंदाबाद।
(सभी फाँसी के फंदे को चूमते हैं। परदा गिरता है)

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें:-**

ਜਾਨਵਰ	=	जानवर	ਪਰਚਮ	=	परचम
ਭਾਰਤੀ	=	भारतीय	ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ	=	क्रांतिकारी
ਮਿੱਟੀ	=	मिट्टी	ਕੁਰਬਾਨੀ	=	कुर्बानी
ਕਰਮਚਾਰੀ	=	कर्मचारी	ਤਿਆਰੀ	=	तैयारी

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-**

ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼	=	फिरंगी	ਸਵੈਰਾਜ	=	स्वराज्य
ਬਿਨਾਂ ਹਿਥਆਰਾਂ ਤੋਂ	=	निहत्था	ਖੁਸ਼ ਕਿਸਮਤ	=	अहोभाग्य
ਲਾਠੀ	=	बेंत	ਅਗਵਾਈ	=	नेतृत्व
ਚੁੱਪ ਚਾਪ	=	गुपचुप	ਬੰਬ-ਧਮਾਕਾ	=	विस्फोट
ਲੌਅ	=	ज्वाला	ਚਮਕ	=	आभा

3. **शब्दार्थ :-**

परखचे	=	टुकड़े-टुकड़े, धज्जियाँ
स्वराज्य	=	अपना राज्य, स्वतंत्र राज्य
परचम	=	झंडा
वहशियाना	=	क्रूर और जंगलियों की तरह का
भाल	=	मस्तक
मुराद	=	इच्छा
सौगंध	=	कसम

बवंडर = तूफान

विस्फोट = धमाका

आतुर = व्याकुल

फरमान = आदेश

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) भगत सिंह स्कूल से कहाँ चले गये थे?

(ख) जलियाँवाले बाग़ की मिट्टी हाथ में लेकर उन्होंने क्या सौगंध खायी?

(ग) भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के प्रिय नारे कौन-कौन से थे?

(घ) इस प्रदर्शन में किस महान नेता की मृत्यु हो गई?

(ङ) विधान सभा में बम फेंकने की ज़िम्मेवारी किसे सौंपी गई?

5. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) इन क्रांतिकारियों ने साइमन कमीशन का विरोध किस प्रकार किया?

(ख) लाला जी की मृत्यु का बदला इन क्रांतिकारियों ने कैसे लिया?

(ग) विधान सभा में बम विस्फोट का क्या परिणाम निकला?

6. इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-

(क) 'ऐ फिरंगी, सामान बाँध ले, वरना सम्भलने का मौका भी न मिलेगा।'

(ख) 'हम दीवानों की टोली आज़ादी की दुल्हन को ब्याह लायेगी।'

(ग) 'हमने तो बचपन से ही बसंती चोले की पूजा की है।'

7. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

तमन्ना = ________, ________

योद्धा = ________, ________

आज़ादी = ________, ________

अंग्रेज़ = ________, ________

शहीदी = ________, ________

8. इन शब्दों के अंतर वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें :-

आज़ाद = चन्द्रशेखर आज़ाद (एक नाम) ने क्रांतिकारियों में जोश भर दिया।

आज़ाद = स्वतंत्र = भारत 15 अगस्त् 1947 को आज़ाद हुआ।

माँ = जन्म देने वाली = ________________________________

माँ = भारत माँ = ________________________________

बांध = बांधना, समेटना = ______________________________

बाँध = जलाशय का जल रोकने हेतु पत्थर आदि का बनाया गया टीला= ______________

बदला = बदलना = ______________________________

बदला = बदला लेना = ______________________________

सबक = पाठ = ______________________________

सबक = सबक सिखाना = ______________________________

9. इन मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग करें :-

कान में सीसा भरा होना ______ ______________________________

खिसियानी बिल्ली-सा मुँह लेकर जाना ______ ______________________________

जले पर नमक छिड़कना ______ ______________________________

नींद हराम होना ______ ______________________________

जान बचाकर भागना ______ ______________________________

मौत के मुँह में जाना ______ ______________________________

कुत्ते की दुम सीधी न होना ______ ______________________________

परखचे उड़ाना ______ ______________________________

10. नये शब्द बनायें :-

क्रांति + कारी	= **क्रांतिकारी**	मुख्य + आलय	= **मुख्यालय**
आंदोलन + कारी	= ______	पुस्तक + आलय	= ______
कार्य + कारी	= ______	मेघ + आलय	= ______
___ + ___	= ______	चिकित्सा + आलय	= ______

11. उपयुक्त विस्मयादि बोधक शब्द लिखें :-

(क) ______! विधानसभा में बम लेकर जायें ।

(ख) ______! हम मस्तानों का टोला आज़ादी का डोला लायेंगे।

(ग) ______! तुम्हें ज़िंदगी अच्छी नहीं लगती।

(घ) ______! यही ठीक रहेगा।

(ङ) ______! उसने देश का नाम उज्ज्वल कर दिया।

(च) ______! देखना, एक दिन हम दीवानों की टोली आज़ादी की दुल्हन को ब्याह लायेगी।

रचनात्मक अभिव्यक्ति :-

(क) मौखिक अभिव्यक्ति-

(i) देश प्रेम से संबंधित गीत कक्षा में सुनायें।

(ii) तुम अपने देश के विकास के लिए कौन-से कार्य करना चाहोगे?

(iii) भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तथा अन्य क्रांतिकारियों की जीवनियाँ पढ़ें और उनके गुणों की कक्षा में चर्चा करें।

(ख) लिखित अभिव्यक्ति-

(i) आपको अपना देश क्यों अच्छा लगता है? चार-पाँच वाक्यों में लिखें।

(ii) यदि आप उस समय पैदा हुए होते जब देश अंग्रेज़ों का गुलाम था तो आप अंग्रेज़ों को भगाने के लिए क्या करते?

प्रयोगात्मक व्याकरण

(1) विकारी शब्द

(i) **लड़का** पढ़ता है।
(ii) **लड़के** पढ़ते हैं।
(iii) **लड़की** पढ़ती है।
(iv) **लड़कियाँ** पढ़ती हैं।

'लड़का' एक संज्ञा शब्द है। संज्ञा से अभिप्राय किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम से है। यहाँ 'लड़का' शब्द से सम्पूर्ण 'लड़का' जाति का ज्ञान हो रहा है। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'लड़का' शब्द दूसरे वाक्य में 'लड़के' तीसरे वाक्य में 'लड़की' तथा चौथे वाक्य में 'लड़कियाँ' रूप में परिवर्तित होकर आया है। इसी परिवर्तित रूप को शब्द का विकारी रूप कहते हैं। अतः संज्ञा शब्द विकारी होते हैं।

(i) **यह** मेरी पुस्तक है।
(ii) **इसकी** कीमत बीस रुपये है।
(iii) **इसे** मैं बहुत रूचि से पढ़ता हूँ।
(iv) **इसको** मैं संभाल कर रखूँगा।

'यह' एक सर्वनाम शब्द है। सर्वनाम उन शब्दों को कहते हैं जो संज्ञा की जगह प्रयुक्त होते हैं। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'यह' सर्वनाम दूसरे वाक्य में 'इसकी' तीसरे वाक्य में 'इसे'तथा चौथे वाक्य में 'इसको' रूप में परिवर्तित होकर आया है। अतः सर्वनाम शब्द भी विकारी होते हैं।

(i) **काला** घोड़ा चर रहा है।
(ii) **काले** घोड़े चर रहे हैं।
(iii) **काली** घोड़ी चर रही है।

'काला' एक विशेषण शब्द है। संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। 'काला' शब्द घोड़े की विशेषता बता रहा है। अतः 'काला' विशेषण है। उपर्युक्त पहले वाक्य में प्रयुक्त 'काला' शब्द दूसरे वाक्य में 'काले' तथा तीसरे वाक्य में 'काली' रूप में प्रयुक्त हुआ है। अतः विशेषण शब्द भी विकारी होते हैं।

(i) बालक **भागता है।**
(ii) बालक **भागते हैं।**
(iii) बालिका **भागती है।**
(iv) बालिकाएँ **भागती हैं।**

'भागना' एक क्रिया है। क्रिया से अभिप्राय किसी कार्य के करने या होने से है। उपर्युक्त 'भागना' क्रिया के रूपों में भी परिवर्तन होता है। जैसे–'भागता है', 'भागते हैं', 'भागती हैं'। अतः क्रिया भी विकारी है।

अतः स्पष्ट है कि जिन शब्दों के रूप में विकार (परिवर्तन) होता है, वे विकारी शब्द

कहलाते हैं। विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं :-

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) विशेषण (4) क्रिया

(2) अविकारी शब्द

(i) चार्वी **और** मेधावी पढ़ रही हैं।

(ii) वह **ज़ोर** से हँसा।

(iii) बालक **धीरे-धीरे** चलता है।

(iv) बच्चो ! **अब** पढ़ोगे **या** खेलोगे ?

(v) रजनी बुद्धिमान है **परंतु** ईमानदार नहीं।

(vi) **वाह** ! कितना सुंदर बगीचा है।

उपर्युक्त वाक्यों में **और, ज़ोर, धीरे-धीरे, अब, या, परंतु, वाह** ऐसे शब्द हैं कि वाक्य चाहे कैसा भी हो, ये शब्द ज्यों के त्यों ही रहते हैं। इनमें परिवर्तन न होने के कारण इन्हें अविकारी शब्द कहा जाता है।

अविकारी शब्द भी चार प्रकार के हैं :

(1) क्रिया विशेषण (2) समुच्चयबोधक (3) संबंधबोधक (4) विस्मयादिबोधक

(1) विकारी शब्द

संज्ञा

(i) **कपिल मुनि मुक्तसर** आश्रम में रहते थे।

(ii) क्या तुम्हारे पास कोई **मकान** है ?

(iii) उनको **राहुल** पर **गुस्सा** आया।

(iv) राहुल ने **मेहनत** करने की ठान ली।

उपर्युक्त वाक्यों में '**कपिल मुनि**', '**राहुल**', व्यक्तियों के नाम हैं। '**मुक्तसर** स्थान का नाम है। '**मकान**' वस्तु का नाम है। '**गुस्सा**' भाव विशेष का तथा '**मेहनत**' गुण विशेष का नाम है। अतएव **कपिल मुनि**, **राहुल**, **मुक्तसर**, **मकान**, **गुस्सा** तथा **मेहनत** किसी न किसी के नाम को प्रकट कर रहे हैं। ऐसे पद, जो किसी के नाम का बोध कराएँ, संज्ञा कहलाते हैं।

अतएव, किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(क) (1) **लाल बहादुर शास्त्री भारत** के दूसरे प्रधानमंत्री थे।

(2) उनका जन्म **बनारस** में हुआ।

(3) वे मेला देखने **गंगा** पार गये।

ऊपर लिखे पहले वाक्य में '**लाल बहादुर शास्त्री**' किसी विशेष व्यक्ति के नाम का बोध कराता है। '**भारत**' शब्द से देश विशेष का ज्ञान होता है। दूसरे वाक्य में '**बनारस**' कहने से एक विशेष स्थान

का ही विचार मन में आता है। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में **'गंगा'** शब्द से एक विशेष नदी अर्थात् गंगा नदी का बोध होता है।

अतः जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ख) (1) लाल बहादुर शास्त्री का जन्म साधारण **परिवार** में हुआ था।

(2) शास्त्री जी की **पुत्री** बीमार थी।

(3) उनका **स्कूल** गंगा पार था।

(4) शास्त्री जी अनेक बार **जेल** गये।

ऊपर के प्रथम वाक्य में **'परिवार'**, दूसरे में **'पुत्री'** और तीसरे में **'स्कूल'** और चौथे में **'जेल'** ऐसे शब्द हैं जो किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान को सूचित नहीं करते।

— **'परिवार'** किसी भी परिवार के लिए कहा जा सकता है।

— हरेक **'पुत्री'** के लिए **'पुत्री'** शब्द का प्रयोग किया जाता है।

— प्रत्येक **'स्कूल'** को **'स्कूल'** ही कहा जाता है।

— हरेक **'जेल'** के लिए **'जेल'** शब्द का ही प्रयोग होता है।

अर्थात् 'परिवार' कहने से सभी परिवारों, 'पुत्री' कहने से सभी पुत्रियों, 'स्कूल' कहने से सभी स्कूलों तथा जेल कहने से सभी जेलों का बोध होता है, किसी एक का नहीं।

अतः ये शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध नहीं कराते अपितु ये शब्द पूरी जाति (वर्ग) का ज्ञान कराते हैं। इसीलिए ये शब्द जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

अतः जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की सम्पूर्ण जाति या वर्ग का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(ग) (1) शंकर सदा **सच** बोलता था।

(2) वह **बचपन** से **मेहनत** करता था।

(3) **ईमानदारी सुख** की खान है।

(4) शंकर **आनंद** से रहने लगा।

ऊपर के वाक्यों में **'सच', 'मेहनत', 'ईमानदारी',** गुण के नाम हैं। **'बचपन'**, एक अवस्था का नाम है। **'सुख'** एक दशा का नाम है तथा **'आनंद'** एक भाव का नाम है। यहाँ 'सच', 'मेहनत', 'ईमानदारी', 'बचपन', 'सुख' तथा 'आनन्द' ये किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम नहीं हैं अपितु उनके गुण, अवस्था, दशा तथा भाव को प्रकट कर रहे हैं। यहाँ ये भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

अतः जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, अवस्था, दशा, भाव आदि के नाम को प्रकट करे, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

विशेष :- भाववाचक संज्ञा की सबसे बड़ी पहचान यह है कि उसका चित्र नहीं बन सकता। जैसे

बच्चे (जातिवाचक संज्ञा) का चित्र बन सकता है, बचपन (भाववाचक संज्ञा) का नहीं। इसी प्रकार शंकर (व्यक्तिवाचक संज्ञा) का चित्र बन सकता है उसकी ईमानदारी (भाववाचक संज्ञा) का नहीं।

संज्ञा के विकारी तत्त्व

संज्ञा एक विकारी शब्द है। जैसे– लड़का से लड़की, लड़के, लड़कों, लड़कियाँ आदि अनेक रूप बनते हैं। संज्ञा में विकार लिंग, वचन व कारक के कारण होता है। अत: इन्हें संज्ञा के विकारी तत्त्व कहा जाता है। इनका क्रमश: विवेचन इस प्रकार है–

लिंग

(क)	(ख)
(i) बालक फुटबॉल खेलता है।	(i) बालिका फुटबॉल खेलती है।
(ii) लेखक कहानी लिखता है।	(ii) लेखिका कहानी लिखती है।
(iii) लड़का पुस्तक पढ़ रहा है।	(iii) लड़की पुस्तक पढ़ रही है।
(iv) माली पौधों को पानी देता है।	(iv) मालिन पौधों को पानी देती है।

उपर्युक्त **'क' वर्ग** के वाक्यों में **'बालक'**,**'लेखक'**,**'लड़का'** तथा **'माली'** शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं तथा **'ख' वर्ग** के वाक्यों में **'बालिका'**, **'लेखिका'**, **'लड़की'** तथा **'मालिन'** शब्द स्त्रीलिंग जाति का बोध कराते हैं अत: 'क' वर्ग के शब्द पुल्लिग तथा 'ख' वर्ग के शब्द स्त्राीलिंग हैं। अत: शब्द के जिस रूप द्वारा यह जाना जाए कि जिसके विषय में बात की जा रही है, वह पुरुष जाति का है या स्त्राी जाति का, उसे लिंग कहा जाता है। हिन्दी में दो लिंग हैं–

(1) पुल्लिग (2) स्त्राीलिंग

(1) **पुल्लिग–पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द 'पुल्लिंग' कहलाते हैं। जैसे–**

(i) धोबी कपड़े धेता है।
(ii) कुत्ता भौंक रहा है।
(iii) कवि कविता सुनाता है।
(iv) घोड़ा घास खा रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में **'धोबी'**,**'कुत्ता'**, **'कवि'** तथा **'घोड़ा'** शब्द पुल्लिग हैं क्योंकि ये सभी शब्द पुरुष जाति का बोध करा रहे हैं।

(2) **स्त्राीलिंग–स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द 'स्त्राीलिंग' कहलाते हैं।** जैसे–

(i) चिड़िया चहचहाती है।
(ii) नानी कहानी सुनाती है।
(iii) लड़की नाच रही है।
(iv) गाय घास खा रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'चिड़िया', **'नानी', 'लड़की'** तथा 'गाय' शब्द स्त्रीलिंग शब्द हैं क्योंकि ये सभी शब्द **स्त्री** जाति का बोध करा रहे हैं।

वचन

	(क)		(ख)
(i)	लड़का खेलता है।	(i)	लड़के खेलते हैं।
(ii)	लड़की खेलती है।	(ii)	लड़कियाँ खेलती हैं।
(iii)	बच्चा सो रहा है।	(iii)	बच्चे सो रहे हैं।
(iv)	कुत्ता भौंक रहा है।	(iv)	कुत्ते भौंक रहे हैं।
(v)	चिड़िया उड़ रही है।	(v)	चिड़ियाँ उड़ रही हैं।

उपर्युक्त 'क' वर्ग के वाक्यों में 'लड़का', 'लड़की', 'बच्चा', 'कुत्ता' तथा 'चिड़िया' शब्दों से एक की संख्या का बोध होता है तथा 'ख' वर्ग के वाक्यों में 'लड़के' 'लड़कियाँ', 'बच्चे', कुत्ते' तथा 'चिड़ियाँ' शब्दों से एक से अधिक संख्या का बोध होता है। अत: ऐसे शब्द जिन से संज्ञाओं की संख्या का पता चलता है, वे 'वचन' कहलाते हैं।

वचन के भेद

वचन के दो भेद हैं ; (1) एकवचन (2) बहुवचन

(1) एकवचन-शब्द के जिस रूप से एक का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे-

(i) गाय चर रही है।
(ii) कबूतर उड़ रहा है।
(iii) गाड़ी चल रही है।
(iv) लड़की पढ़ रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में **'गाय', 'कबूतर','गाड़ी'** तथा **'लड़की'** शब्द एकवचन हैं क्योंकि इनसे एक ही 'गाय', 'कबूतर','गाड़ी' और 'लड़की' का बोध हो रहा है।

(2) बहुवचन-शब्द के जिस रूप से अधिक का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे-

(i) स्त्रियाँ पानी भर रही हैं।
(ii) पुस्तकें अलमारी में पड़ी हैं।
(iii) लड़के नाच रहे हैं।
(iv) घोड़े दौड़ रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'स्त्रियाँ','पुस्तकें', 'लड़के', तथा 'घोड़े' शब्द बहुवचन हैं ; क्योंकि इनसे एक से अधिक स्त्रियों , पुस्तकों, लड़कों तथा घोड़ों का बोध हो रहा है।

कारक

(क) सिपाही ने दरबार में चाबुक से किसान को मारा।

इस वाक्य में '**मारा**' क्रिया है।

किसने मारा ?	सिपाही ने
कहाँ मारा ?	दरबार में
किससे मारा ?	चाबुक से
किसको मारा ?	किसान को

अत: स्पष्ट है कि वाक्य में '**सिपाही ने**', '**दरबार में**', **चाबुक से** तथा '**किसान को**' शब्द-रूपों का संबंध '**मारा**' क्रिया से सूचित हो रहा है।

(ख) (i) यह लेखक का नौकर है।

(ii) यह मेरा नौकर है।

यहाँ पहले वाक्य में '**लेखक**' **(संज्ञा) का संबंध नौकर (संज्ञा) से है** तथा दूसरे वाक्य में '**मेरा (सर्वनाम) का संबंध नौकर (संज्ञा) से है।**

अत: संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के जिस रूप से उनका संबंध क्रिया तथा दूसरे शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

कारकीय संबंध को प्रकट करने वाले चिह्नों (ने, में, से, को, का आदि) को **कारक चिह्न** कहा जाता है।

1. (i) **ठग ने** झगड़ा किया। (ii) **राजा** सुन रहा था।

पहले वाक्य में झगड़ने की क्रिया करने वाला ठग है, अत: ठग **कर्त्ता** है।

दूसरे वाक्य में सुनने की क्रिया राजा द्वारा हो रही है, अत: राजा **कर्त्ता** है।

यहाँ पहले वाक्य में '**ठग ने**' और दूसरे वाक्य में '**राजा**' **कर्त्ता कारक** हैं।

विशेष :- दूसरे वाक्य में कर्ता (राजा) कारक चिह्न रहित है।

अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का पता चलता है,उसे कर्ता कारक कहते हैं।

2. लोगों ने **घोड़े को** रोक लिया।

इस वाक्य में क्रिया 'रोकना' तथा कर्ता 'लोग' हैं। **क्रिया का फल घोड़े पर** पड़ रहा है। अत: **घोड़े को** में कर्म कारक है

अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

3. राजा ने **कलम से** लिखा।

यहाँ कर्त्ता ने (राजा) लिखने की क्रिया 'कलम से' की है, अत: '**कलम से**' में **करण कारक** है।

अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं।

4. (i) उसने **राजा को** दवात दी।

(ii) नौकर **राजा के लिए** दवात लाया।

इन वाक्यों में **'राजा को'** तथा **'राजा के लिए'** सम्प्रदान कारक हैं क्योंकि 'देने' और 'लाने' क्रियाओं का कार्य इनके लिए हुआ है।

अत: जिसे कुछ दिया जाये या जिसके लिए कुछ किया जाये, ऐसा बोध कराने वाले संज्ञा या सर्वनाम के रूपों को सम्प्रदान कारक कहते हैं।

5. **झरनों से** पानी गिर रहा था।

इस वाक्य में **'झरनों से'** पानी के अलग होने का बोध हो रहा है इसलिए यहाँ अपादान कारक है। **अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होना पाया जाये, वह अपादान कारक कहलाता है।**

6. (i) **रेणुका** का मेला रेणुका **झील के किनारे** आयोजित होता है।

(ii) रेणुका **परशुराम की** माता का नाम है।

यहाँ पहले वाक्य में **'रेणुका का'** मेले से , **'झील का'** किनारे से तथा दूसरे वाक्य में **'परशुराम का'** माता से संबंध प्रकट हो रहा है। अत: यहाँ सम्बन्ध कारक है।

अत: संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकट हो, उसे संबंध कारक कहते हैं।

विशेष :- क्रिया के साथ संबंध न कराने के कारण कुछ विद्वान संबंध कारक को कारक नहीं मानते हैं।

7. (i) हमने **कमरों में** सामान रख दिया।

(ii) बन्दर **वृक्षों पर** कूदते नज़र आ रहे थे।

इन वाक्यों में **'कमरों में'**, **'वृक्षों पर'** पद उन स्थानों को सूचित कर रहे हैं, जहाँ क्रिया के आधार का बोध होता है। अत: यहाँ अधिकरण कारक है।

अतएव संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

8. **हे ईश्वर!** मेरी रक्षा करो।

अरे बच्चो! तुम क्या कर रहे हो?

यहाँ **'हे ईश्वर'** में ईश्वर को पुकारा जा रहा है तथा **'अरे बच्चो'** में बच्चों को सम्बोधित किया जा रहा है, अत: यहाँ सम्बोधन कारक है।

अत: शब्द के जिस रूप से किसी को पुकारने अथवा सम्बोधन करने का ज्ञान हो, वहाँ सम्बोधन कारक होता है।

सम्बोधन कारक का प्रयोग कारक चिह्न के बिना भी होता है। जैसे-भाई ! ज़रा इधर आओ।

विशेष :- सम्बोधन कारक का संबंध वाक्य में क्रिया अथवा किसी दूसरे शब्द से नहीं होता, अतएव कुछ विद्वान इसे कारक नहीं मानते।

सर्वनाम

गोपू एक ग्वाला था। **उसकी** कुटिया के पिछवाड़े गोबर के उपले पड़े हुए थे। **उसने** बड़ी मेहनत से **उन्हें** बनाया था। एक दिन **वह** घर पर नहीं था। **उसके** उपले गाँव के शरारती बच्चों ने उठा लिये।

ऊपर के गद्यांश में 'गोपू' एक व्यक्ति तथा 'उपले' एक वस्तु के नाम हैं। अत: 'गोपू' और उपले संज्ञा शब्द हैं। उपरोक्त पंक्तियों में रेखांकित किए गए शब्द **'उसकी'**, **'उसने'**, **'वह'** तथा **'उसके'** गोपू के लिए तथा **'उन्हें'** उपलों के लिए प्रयोग में आये हैं।

अत: ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में आते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

(1) (i) गोपू मुखिया से बोला, "**मैं** शहर गया हुआ था। **मेरे** उपले किसी ने चुरा लिये।

यहाँ बोलने वाले (गोपू) ने अपने लिए 'मैं' और 'मेरे' सर्वनामों का प्रयोग किया है।

(ii) मुखिया गोपू से बोला, "**तुम** चिंता न करो– **तुम्हें** न्याय मिलेगा।"

यहाँ सुनने वाले (गोपू) के लिए **'तुम'** और **'तुम्हें'** सर्वनामों का प्रयोग हुआ है।

(iii) मुखिया मन ही मन बोला, "गाँव के बच्चे शरारती हैं। यह शरारत **उनकी** ही है।

यहाँ बोलने वाले (मुखिया) ने अन्य (अनुपस्थित) व्यक्तियों (बच्चों) के लिए **'उनकी'** सर्वनाम का प्रयोग किया है।

अतएव बोलने वाला अपने लिए, सुनने वाले तथा अन्य (अनुपस्थित) व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। यह सर्वनाम का पहला भेद है।

(2) (i) देखो, बच्चे खड़े हैं, **इन्होंने** प्रायश्चित कर लिया है

(ii) **वह** मेरी कुटिया है।

ऊपर पहले वाक्य में **'इन्होंने'** सर्वनाम का प्रयोग पास खड़े बच्चों के लिए तथा दूसरे वाक्य में **'वह'** सर्वनाम का प्रयोग दूर स्थित 'कुटिया' के लिए किया गया है। अर्थात् **'इन्होंने'** तथा **'वह'** से निश्चयपूर्वक बोध हो रहा है **अत: जिन सर्वनामों से निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का दूसरा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **यह, ये, वे, इसको आदि।**

(3) (i) **किसी** ने मेरे उपले उठा लिये।

(ii) **कुछ** न **कुछ** तो करना ही पड़ेगा।

उपरोक्त वाक्यों में **'किसी'** तथा **'कुछ'** किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं कराते अत: अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं। **अत: जिन सर्वनामों से निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का तीसरा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **कोई, किस, किन्हीं आदि**

(4) **जो** भी उपले तैयार किए बिना होली खेलता नज़र आएगा, **उसके** अभिभावक को प्रति बच्चे पर सौ–सौ रुपये जुर्माना देना पड़ेगा।

उपरोक्त वाक्य में **'जो'** तथा **'उसके'** रेखांकित शब्द दो वाक्यों का परस्पर **संबंध** जोड़ते हैं, अत: ये **संबंध** वाचक सर्वनाम हैं। **अतएव जिन सर्वनामों से एक बात का दूसरी बात से संबंध प्रकट हो उसे संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का चौथा भेद है।**

अन्य उदाहरण : **जो–सो, जिसने–उसने, जिसकी–उसकी आदि।**

(5) (i) वह **अपने** पाले में वापिस आ गया।

(ii) वे **स्वयं** खिलाड़ियों को रणनीति समझाने लगे।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अपने' तथा 'स्वयं' शब्द क्रमश: कर्ता (कार्य करने वाला) **'वह'** और 'वे' के साथ निजत्व (अपनेपन) का बोध करा रहे हैं, अत: 'निजवाचक' सर्वनाम हैं।

अतएव जो सर्वनाम वाक्य में कर्त्ता के साथ निजत्व (अपनेपन) का बोध करायें उन्हें 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं। यह सर्वनाम का पाँचवाँ भेद है।

अन्य उदाहरण : **स्वयं, खुद, अपने आप, आप**

(6) इस मैच में **कौन**–सी टीम जीतेगी?

उपर्युक्त वाक्य में **'कौन'** शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए हुआ है, अत: ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

अतएव जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग में आते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। यह सर्वनाम का छठा भेद है।

अन्य उदाहरण : **क्या, किसने, किसे।**

विशेषण

(i) राजस्थान में **एक** ज़िला है डूंगरपुर।

(ii) कालीबाई अगर **साधारण** ज़िंदगी जीतीं तो उनका नाम शायद कोई नहीं जानता।

(iii) यह **प्रेरक** कहानी है।

(iv) वह **निडर** थी।

उपर्युक्त वाक्यों में **'एक'** शब्द ज़िले (संज्ञा) की, **'साधारण'** शब्द ज़िंदगी (संज्ञा) की, **'प्रेरक'** शब्द कहानी (संज्ञा) की तथा **'निडर'** शब्द वह (सर्वनाम) की विशेषता बता रहे हैं इसलिए ये विशेषण शब्द हैं।

अत: जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

(1) (i) कालीबाई **बहादुर** बालिका थी।

(ii) **कच्ची** उम्र की लड़की ने अपना बलिदान दे दिया।

(iii) राजस्थान में रास्तापाल **छोटा** गाँव है।

उपर्युक्त वाक्यों में '**बहादुर**' '**कच्ची**' तथा '**छोटा**' शब्द क्रमश: बालिका, उम्र तथा गाँव संज्ञा शब्दों की गुण संबंधी विशेषता का बोध करा रहे हैं। अत: ये गुणवाचक विशेषण हैं।

अत: जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की गुण संबंधी विशेषता का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(2) (i) स्कूल के **दो** अध्यापक क्राँतिकारी गतिविधियाँ चलाते थे।

(ii) **तेरह** साल की लड़की आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ी।

(iii) **कुछ** लोग तथा **कुछ** सिपाही वहाँ पहुँचे।

उपर्युक्त वाक्यों में '**दो**' शब्द से अध्यापक की तथा '**तेरह**' शब्द से 'साल' की निश्चित संख्या का बोध हो रहा है अत: **निश्चित संख्यावाचक विशेषण** हैं और '**कुछ**' शब्द से लोग तथा सिपाही की अनिश्चित संख्या का बोध हो रहा है अत: '**कुछ**' शब्द **अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण** हैं।

अत: जिन शब्दों से संज्ञा/सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध हो वे निश्चित संख्यावाचक तथा जिनसे निश्चित संख्या का बोध न हो, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते है।

(3) (i) एक श्रद्धालु ने गुप्त रूप से **सौ किलो** दूध व **पचास किलो** चीनी लंगर हेतु भिजवायी।

(ii) हमने मिलकर **बहुत सारी सूजी**, चाय पत्ती और **ढेर सारे घी** का प्रबंध कर रखा था।

उपर्युक्त पहले वाक्य में '**सौ किलो**' से दूध (संज्ञा) के तथा '**पचास किलो**' से चीनी (संज्ञा) के निश्चित नाप-तोल का पता चल रहा है। अत: ये निश्चित परिमाण (नाप-तोल) वाचक विशेषण हैं। दूसरे वाक्य में '**बहुत सारी**' से तथा '**ढेर सारे**' से निश्चित परिमाण का बोध नहीं हो रहा अत: ये अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

अतएव जिस विशेषण से निश्चित परिमाण का बोध हो उसे निश्चित परिमाण वाचक तथा जिससे निश्चित परिमाण का बोध न हो, उसे अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं।

(4) (i) **हमारा** शहर रोशनी से जगमगा रहा था।

(ii) **ऐसा** नज़ारा देखकर मैं भाव विभोर हो उठा।

उपर्युक्त वाक्य में '**हमारा**' तथा '**ऐसा**' सर्वनाम क्रमश: शहर तथा नज़ारा संज्ञा शब्दों से पूर्व आकर इनकी विशेषता बता रहे हैं। अत: हमारा तथा ऐसा शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं।

अतएव जब सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों से पहले लगकर विशेषण का काम करते हैं तो उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

क्रिया

(i) राजा घोड़े पर बैठकर उसी शहर को **चला**।

(ii) राजा ने नौकर अपने पास **रख लिया**।

(iii) दोनों को राज दरबार में **ले जाया गया।**

(iv) राजा **सुन रहा था**।

उपरोक्त वाक्यों में **'चला'**, **'रख लिया'**, **'ले जाया गया'** तथा **'सुन रहा था'** से किसी काम का करना या होना प्रकट होता है। ये शब्द **क्रिया हैं**।

अतः जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

अन्य उदाहरण :- पढ़ना, खेलना, सोना, हँसना, लिखना, दौड़ना, पीना, सीना, उठना, बैठना, करना, पकड़ना, छोड़ना, तोड़ना, नाचना, मारना आदि।

क्रिया में परिवर्तन

संज्ञा शब्दों की तरह क्रिया शब्द भी विकारी है। क्रिया शब्दों में परिवर्तन लिंग, वचन, पुरुष, काल और वाच्य के कारण होता है।

लिंग

मोहन गा रहा था (पुल्लिंग)

राधा खेल रही थी। (स्त्रीलिंग)

यहाँ 'रहा था' क्रिया **पुल्लिंग** है और 'रही थी' क्रिया **स्त्रीलिंग** है।

इस प्रकार संज्ञा शब्दों की भाँति क्रिया शब्दों के दो लिंग होते हैं :-

(1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग

वचन

लड़का हँसता है।

लड़के पढ़ते हैं।

यहाँ 'हँसता है' **एकवचन** है और 'पढ़ते हैं' **बहुवचन** हैं।

इस प्रकार क्रिया शब्दों के दो वचन होते हैं :- (1) एक वचन (2) बहुवचन

पुरुष

मैं पढ़ता हूँ।

हम लिखते हैं।

यहाँ **'मैं'** और **'हम'** कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अतः **उत्तम पुरुष** हैं।

तू जाता है।

तुम खाते हो।

यहाँ **'तू'** और **'तुम'** कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अत: **मध्यम पुरुष** हैं।

वह देखता है।

कोई जा रहा है।

यहाँ **'वह'** और **'कोई'** कर्त्ता के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अत: **अन्य पुरुष** हैं।

इस प्रकार कर्ता के अनुसार क्रिया के तीन पुरुष हैं :

(1) उत्तम पुरुष (मैं, हम)

(2) मध्यम पुरुष (तू, तुम)

(3) अन्य पुरुष (वह, वे, संज्ञा शब्द)

काल

(i) घोड़ा हिनहिनाया।

(ii) घोड़ा हिनहिना रहा है।

(iii) घोड़ा हिनहिनायेगा।

उपर्युक्त वाक्यों में ध्यान से क्रिया को पहचानिये। ध्यान दीजिये कि पहले वाक्य में क्रिया हो गयी है (हिनहिनाया) दूसरे वाक्य में क्रिया हो रही है– (हिनहिना रहा है) तथा तीसरे वाक्य में क्रिया आने वाले समय में अभी होगी (हिनहिनायेगा)। दरअसल क्रिया से यह भी पता चलता है कि काम कब हुआ अर्थात् क्रिया होने का समय। इसे ही क्रिया का काल कहते हैं।

अतएव क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का ज्ञान हो उसे 'काल' कहते हैं।

(1) (i) बाबा ने घोड़े को रोका।

(ii) खड्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था।

(iii) बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे।

इन वाक्यों में 'रोका', 'था' तथा 'जा रहे थे' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया का करना या होना बीते हुए समय में हुआ है। **अत: बीते समय को भूतकाल कहते हैं।**

(2) (i) अपाहिज घोड़े को दौड़ाए जा रहा है।

(ii) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता है।

(iii) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता होगा।

इन वाक्यों में 'दौड़ाए जा रहा है', 'दौड़ाता है', तथा 'दौड़ाता होगा' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया चल रहे समय अर्थात् वर्तमान काल में हो रही है **अतः चल रहे समय को वर्तमान काल कहते हैं।**

(3) (i) बाबा जी, यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

(ii) उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'रहने दूँगा' तथा 'मोह लेगी' क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं से भविष्य में कार्य के होने का पता चलता है अर्थात् अभी कार्य हुआ नहीं है **अतः जब क्रिया का करना या होना आने वाले समय में पाया जाता है, उसे भविष्यत काल कहते हैं।**

याद रखें :-

काम का करना या होना- यह बतलाये क्रिया हमें

भूत, वर्तमान है भविष्य-यह बतलाये काल हमें

वाच्य

1. धीरा जूते पॉलिश करता था।

2. धीरा द्वारा जूते पॉलिश किये जाते थे।

3. धीरा से रहा नहीं गया।

उपर्युक्त पहले वाक्य में क्रिया कर्त्ता (धीरा) के अनुसार है, दूसरे वाक्य में क्रिया कर्म (जूते) के अनुसार है तथा तीसरे वाक्य में कर्म नहीं है अर्थात यहाँ भावों (रहा नहीं गया) की ही प्रधानता है।

अतएव क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाये कि क्रिया कर्त्ता के अनुसार है या कर्म के अनुसार है या भाव के अनुसार है, उस रूप को वाच्य कहते हैं।

इस तरह वाच्य तीन प्रकार के होते हैं :-

1. कर्तृवाच्य **2. कर्म वाच्य** **3. भाव वाच्य**

(i) धीरा धुन गुनगुना रहा था।

(ii) धीरा द्वारा धुन गुनगुनायी जा रही थी।

पहले वाक्य में कर्त्ता (धीरा) प्रधान है और क्रिया का लिंग, (गुनगुना रहा था) एवं वचन उसी कर्त्ता के अनुसार है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में कर्ता प्रधान हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

दूसरे वाक्य में क्रिया (गुनगुनायी जा रही थी) का लिंग एवं वचन कर्त्ता (धीरा) के अनुसार न होकर कर्म (धुन) के अनुसार है, यहाँ क्रिया कर्म वाच्य है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, उसे कर्म वाच्य कहते हैं।

(iii) धीरा से रहा नहीं गया।

तीसरे वाक्य में 'रहा नहीं गया' क्रिया का भाव ही मुख्य है। क्रिया अकर्मक है जो अन्य पुरुष, पुल्लिग, एकवचन में है।

अतएव क्रिया के जिस रूप में क्रिया के भाव की प्रधानता के कारण अकर्मक क्रिया का प्रयोग हो, और जो सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिग तथा एक वचन में हो, उसे भाव वाच्य कहते हैं।

(2) अविकारी शब्द

क्रिया विशेषण

(i) कलिंग के फाटक आज बंद हैं।

(ii) महाराज! आप यहाँ बैठिए।

(iii) सैनिक ने अपनी तलवार झटपट संभाल ली।

(iv) अधिक मत बोलो।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'आज' शब्द क्रिया के काल, दूसरे वाक्य में 'यहाँ' शब्द क्रिया के स्थान, तीसरे वाक्य में 'झटपट' शब्द क्रिया की रीति तथा चौथे वाक्य में 'अधिक' शब्द क्रिया की मात्रा संबंधी विशेषता बता रहे हैं अत: ये क्रिया विशेषण हैं।

अतएव क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।

(1) –मैं युद्ध **कल** करूँगा।

इस वाक्य में 'कल' शब्द से क्रिया के काल (समय) का पता लग रहा है। अत: यह कालवाचक क्रियाविशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया के काल (समय) की विशेषता बताये उसे कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

अन्य कालवाचक शब्द :- रोज़, प्रात:, परसों, अभी, सुबह, शाम, रात, कभी, अब, तब, आजकल आदि।

(2) सब आश्चर्य से **उधर** देखने लगते हैं।

इस वाक्य में 'उधर' शब्द से क्रिया के स्थान का पता चल रहा है। अत: यह स्थानवाचक क्रियाविशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता बताये उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य स्थानवाचक क्रियाविशेषण: यहाँ, वहाँ, इधर, ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर, दूर, आगे, पीछे , चारों तरफ आदि।

(3) वह **बहुत** बोलता है।

इस वाक्य में 'बहुत' शब्द से क्रिया की मात्रा या परिमाण का पता चल रहा है। अत: यह परिमाणवाचक क्रिया विशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की परिमाण संबंधी विशेषता बताये, उसे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य परिमाणवाचक शब्द: थोड़ा, ज्यादा, कम, पर्याप्त, तनिक, इतना, उतना, न्यून, लगभग, काफी आदि।

(4) संवाददाता महाराज से **धीरे-से** बोला।

इस वाक्य में 'धीरे-से' शब्द से क्रिया की रीति (ढंग) का पता चल रहा है अत: यह रीतिवाचक क्रिया विशेषण है।

अतएव जो शब्द क्रिया की रीति संबंधी विशेषता बताये, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।

अन्य रीतिवाचक क्रियाविशेषण: ऐसे, कैसे, जैसे, तैसे, वैसे, जल्दी-जल्दी, अकस्मात, अचानक, सहसा, सामान्यत:, साधारणत: आदि।

समुच्चयबोधक (योजक)

(i) गिल्लू परदे पर चढ़ा **और** नीचे उतर गया।

(ii) गिल्लू अन्य खाने की चीज़ें लेना बंद कर देता था **या** झूले से नीचे फेंक देता था।

(iiii) उनका मुझसे लगाव कम नहीं है **परंतु** उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत नहीं हुई।

(iv) भूख लगने पर गिल्लू का चिकचिक करना ऐसा लगा **मानो** मुझे अपने भूखे होने की सूचना देता हो।

(v) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी **क्योंकि** उसे वह लता सबसे प्रिय थी।

(vi) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती **अत:** गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आ ही गया।

(vii) गिल्लू को कौवे की चोंच से घाव हो गया था। **इसलिए** वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका पड़ा था।

उपर्युक्त वाक्यों में 'और', 'या', 'परंतु', 'मानो', 'क्योंकि', 'अत:', तथा 'इसलिए' शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ रहे हैं। इन शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं।

अतएव दो शब्दों, वाक्य के अंशों और वाक्यों को जोड़ने वाले शब्दों को योजक या समुच्चयबोधक कहते हैं।

अन्य योजक शब्द :- एवं, तथा, किंतु, चाहे, पर, इस कारण, यानि, कि यद्यपि----तथापि, चाहे----फिर भी आदि।

संबंधबोधक

(i) सामिषा अपने माता-पिता **के साथ** धर्मशाली गयी।

(ii) डल झील के **चारों ओर** देखो देवदार के पेड़ हैं।

(iii) घरों **के सामने** बाँस के अनगिनत वृक्ष हैं।

(iv) हम बाग़ानों, मकानों और बंगलों **के बीच** से गुजरती सड़क से न्यूगल कैफेटेरिया पहुँचे।

(v) कैफेटेरिया **के पीछे** न्यूगल खड्ड है।

(vi) हम खराब सड़क **के कारण** ट्रैकिंग स्थल त्रिपुंड नहीं जा सके।

(vii) मेरे **सामने** प्रकृति के अद्‌भुत दृश्य थे।

उपर्युक्त वाक्यों में के साथ, के चारों ओर, के सामने, के बीच, के पीछे, के कारण तथा सामने शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बता रहे हैं। अत: ये संबंध बोधक हैं।

अतएव जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें संबंध बोधक कहते हैं।

यदि इन संबंध बोधक अविकारी शब्दों को वाक्य में से निकाल दिया जाये तो वाक्य का अर्थ ही नहीं रहता।

अन्य संबंध बोधक शब्द :- पहले, बाद, आगे, पीछे, बाहर, भीतर, ऊपर, नीचे, पास, अनुसार, तरह, समान, बिना, कारण, तक, भर, संग, साथ, के मारे, बगैर, रहित, सिवाय आदि।

संबंध बोधक का प्रयोग दो प्रकार से होता है :-

1. **विभक्तियों के साथ**
2. **विभक्तियों के बिना**

(1) विभक्तियों के साथ संबंध बोधक शब्द प्रमुख रूप से निम्नलिखित तरह से प्रयुक्त होते हैं:-

(i) हमने चिन्मय तपोवन **की ओर** प्रस्थान किया।

(ii) वीर सैनिकों ने देश की रक्षा **के लिए** प्राण न्योछावर कर दिये।

(iii) पालम की घाटी सुंदरी **की तरह** प्रतीत होती है।

(2) विभक्तियों के बिना संबंध बोधक शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं:-

(i) मैं जीवन **भर** इस यात्रा को याद रखूँगी

(ii) ज्ञान **बिना** जीवन बेकार है।

(iii) मुझे कई दिनों **तक** घर की याद नहीं आयी।

(iv) सड़क **पर** काली सफेद लकीर लगायी गयी है।

विस्मयादिबोधक

(i) **अरे!** मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ?

(ii) **शाबाश!** मुझे आपसे यही आशा थी।

(iii) **ना-ना!** मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा।

(iv) **आह!** मेरी प्रजा पर अत्याचार हो रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अरे', 'शाबाश', 'ना-ना' तथा 'आह' शब्द क्रमशः विस्मय, हर्ष, घृणा तथा शोक मनोभावों को व्यक्त कर रहे हैं। ये विस्मयादिबोधक शब्द हैं। इनका प्रयोग प्रायः वाक्य के शुरू में होता है तथा इन शब्दों के बाद जो चिह्न (!) लगता है, उसे विस्मयादि बोधक चिह्न कहते हैं।

अतएव जिन शब्दों से विस्मय, हर्ष, घृणा तथा शोक आदि मन के भाव प्रकट हों वे शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

कुछ मुख्य विस्मयादिबोधक शब्द इस प्रकार हैं:-

1. **हर्ष बोधक** = अहा! वाह-वाह! धन्य आदि।
2. **घृणा बोधक** = धिक्! धत्! थू-थू ! आदि।
3. **शोकबोधक** = उफ! बाप रे! राम-राम! सी! त्राहि-त्राहि आदि।
4. **विस्मयादिबोधक** = क्या! ओहो! हैं! अरे!
5. **स्वीकारबोधक** = हाँ-हाँ! अच्छा ! ठीक! जी हाँ!
6. **चेतावनी बोधक** = सावधान! होशियार! खबरदार !
7. **भयबोधक** = हाय ! हाय राम ! उइ माँ! बाप रे!
8. **आशीर्वादबोधक** = दीर्घायु हो! जीते रहो ! खुश रहो!